04 - गुजरात नगर निकाय और पंचायत में कमल के मायने

05 - शब्दहीन भावों से विश्व को जोड़ने वाली शक्ति है नृत्य

A Daily News Magazine
भोपाल
बुधवार, 29 अप्रैल, 2026

06 - गर्मी बढ़ने से बिजली की खपत बढ़ी, पंखे-कूलर की बिक्री में भी...

07 - भविष्य के दृष्टिगत रीवा एयरपोर्ट का करें उन्नयनः उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 236, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

अमल खलील की पत्रकारिता से हम क्या सीखें?

अरुण कुमार त्रिपाठी

अरबी अखबार अल-अखबार की पत्रकार अमल खलील की पत्रकारिता की चर्चा दुनिया भर में क्यों है? आज के दौर में मीडिया के लिए उनके काम से क्या सीख मिलती है। हिंदी पत्रकारिता जब अपने उद्भव के दो सौ वर्ष पूरा करके विकास की ऐसी अवस्था में पहुंच गई है जब उसके चीखने और उछलने वाले एंकर, संवाददाता और संपादक अपनी कामयाबी इस बात में मानते हैं कि वे समाज में नफरती कहानियां और बहसें चलाते हुए सत्ता के कितने क़रीब पहुंच जाएं और कितनी जल्दी सूचना आयुक्त या राज्यसभा के सदस्य बन जाएं। वे सत्ताधीशों के साथ कितनी विदेश यात्राएँ करें या कितने धार्मिक आयोजनों में मंच पर रहें, या फिर वे अपने निरंतर बढ़ते हुए लाखों के पैकेज का अनंत काल तक आनंद लेते रहें और बार-बार परदे पर किसी विपक्षी नेता को डांटते हुए अपना ग्लैमर बिखेरते रहें। ऐसे समय में कोई पत्रकार हाल में शहीद हुई लेबनान की पत्रकार अमल खलील पर क्यों कुछ लिखना और उनसे कुछ सीखना चाहेगा। लेकिन इस स्तंभकार को लगता है कि अमल खलील की पत्रकारिता और उनके छोटे से जीवन से सीखने और उससे पश्चिम एशिया और उसकी जोखिम भरी पत्रकारिता को समझने में बहुत मदद मिल सकती है। उनका जीवन हमारी दो सौ वर्षीय हिंदी पत्रकारिता को आइना दिखाने का साहस भी रखती है।

बयालीस वर्षीय अमल खलील(1984-2026) बेरूत के अरबी अखबार अल-अखबार की पत्रकार थीं। जिन्हें पिछले हफ्ते दक्षिणी लेबनान में इसराइली सेना ने निशाना लगाकर मार डाला। इस पत्रकार का सैलेरी पैकेज भी बहुत मामूली था। उन्हें पहले से ही धमकियां दी गई थीं कि संभल जाएं नहीं तो मार दी जाएंगी। लेकिन पत्रकारिता उनका जुनून था। वे जिस मलबे में दबी हुई थीं वहां से उन्हें निकाले जाते समय भी उस पर इसराइली सेना मिसाइलें बरसा रही थी ताकि उन्हें किसी भी कीमत पर बचाया न जा सके। इस बात को रेडक्रॉस के कर्मचारियों ने कहा है, जिसका इसराइली सेना ने खंडन किया है।

यहां सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या अमल खलील युद्ध संवाददाता थीं। खलील का कहना है कि उनके पास युद्ध संवाददाता जैसा कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं था। वो खुद को फील्ड करेसपांडेंट (क्षेत्र संवाददाता) बताती हैं। इसराइली हमले और लेबनानी प्रतिरोध के बीच उन्होंने जिस तरह की खबरें कीं वे अपने में एक मिसाल हैं। टीवी पत्रकारिता और युद्ध पर रंग बिरंगे पन्ने सजाने वाले अखबारों को सिखाने के लिए अमल खलील के पास बहुत कुछ है। खलील ने कहा था कि ज्यादातर पत्रकार आग लगाऊ रिपोर्टिंग करते हैं। वे लोग भी जो इसराइली हमले की ओर से कर रहे हैं और वे भी जो लेबनान और फिलस्तीनी जनता की ओर से उनके हमले से होने वाले विनाश को दर्शाते हैं। ऐसे पत्रकार जो लेबनान की ओर से रिपोर्टिंग करते हैं वे एक जवाबी प्रोपेगैंडा चलाते हैं। उसके विपरीत अमल खलील ने वस्तुगत रिपोर्ट दिखाने की कोशिश की ताकि पाठक या दर्शक इसराइली हमले के प्रति सावधान रहें। उनकी रिपोर्टिंग के दो पक्ष थे। एक लेबनानी और फिलस्तीनी प्रतिरोध की खबर देना और दूसरा सामान्य नागरिकों के जीवन की सच्चाई बताना।

अमल का कहना था कि वे इसराइली हमलों और उसके बाद की स्थितियों का दस्तावेजीकरण करती थीं। इसमें उनके दो उद्देश्य थे। एक तो साम्यवादी विचार और दूसरा प्रतिरोध। उन्होंने 2006 और 2023 के हमलों को भी विस्तार से कवर किया था। उन्हें अपना गांव छोड़कर भागना भी पड़ा था। फिर भी वे दक्षिणी लेबनान में कवरेज के लिए जाया करती थीं। अखबार में खबरें लिखने के कारण उन्हें कम लोग ही जानते थे। लेकिन उनकी रिपोर्ट को लोग पढ़ते थे। बल्कि उनके संपादक का कहना था कि उन्हें बहुत कुछ सिखाने और बताने की जरूरत नहीं है क्योंकि उनमें एक स्वाभाविक किस्म का पत्रकार है। अमल ने 2020 से अपना वीडियो बनाना शुरू किया लेकिन उन्होंने अपने वीडियो में खुद को कभी नहीं प्रस्तुत किया। वे कहती भी थीं कि मैं कहानी कहने के लिए हूं न कि खुद कहानी बनने के लिए। उनकी यह बात आज के हिंदी पत्रकारों के एकदम विपरीत है जो बिना कुछ किए धरे हमेशा कहानी बनने को लालायित रहते हैं। लेकिन आखिर में अमल खलील खुद कहानी बन गईं क्योंकि अपनी उत्पीड़ित जनता की कहानी कहने के लिए उन्होंने अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया। अमल खलील के जीवन और उनकी पत्रकारिता के बहाने यह सवाल लाजिमी है कि वे युद्ध संवाददाता थीं या शांति संवाददाता। यहां हम नार्वे के मशहूर समाजशास्त्री और शांति अध्येता जोहान गाल्तुंग के हवाले से कह सकते हैं कि अमल ने शांति की पत्रकारिता की। वैसे जैसे भारत में तमाम पत्रकार नफ़रत के खिलाफ़ अपनी जान जोखिम में डालकर दंगों में कूदते रहे हैं। जिनमें सबसे बड़ा नाम है गणेश शंकर विद्यार्थी का। उन्हीं की परंपरा के कई पत्रकार रहे हैं जिन्होंने अयोध्या में छह दिसंबर 1992 को अपनी जान जोखिम में डालकर भीड़ के उन्माद और उसे भड़काने वालों की सच्चाई दर्शाने की कोशिश की थी।

युद्ध की पत्रकारिता और शांति की पत्रकारिता का अंतर साफ़ करते हुए गाल्तुंग कहते हैं कि आमतौर पर पारंपरिक पत्रकारिता युद्ध की पत्रकारिता है। वह एक तरफ़ के विनाशकारी हथियारों के जखीरों और सैन्य शक्ति का गौरवगान करती है और विनाश का प्रचार करती है। उसके वर्णनों में आमजन के दुखों और तकलीफों के लिए बहुत कम जगह होती है और न ही उनके शांति प्रयासों को स्थान दिया जाता है।

जबकि शांति की पत्रकारिता में आमजन के दुखों और तकलीफों को जगह दी जाती है। उनके शांति प्रयासों को रिपोर्ट किया जाता है और विवाद के वास्तविक इतिहास को पेश करते हुए उसे हल करने के उपाय चर्चा में लाए जाते हैं। शांति की पत्रकारिता सच का अन्वेषण करती है और हिंसा संरचनागत और सांस्कृतिक कारणों को उजागर करती है। जहां युद्ध की पत्रकारिता हिंसा और उसके माध्यम से मिलने वाली हार जीत के प्रति झुकाव और पूर्वग्रह प्रदर्शित करती है वहीं शांति की पत्रकारिता एक तरफ विवाद के प्रति अपनी संवेदनशीलता। युद्ध की पत्रकारिता दोनों पक्षों के बीच मौजूद युद्ध की पत्रकारिता मानती है कि हिंसा की वजह हिंसा ही है जबकि शांति की पत्रकारिता हिंसा के पीछे के ठोस कारणों को ढूंढती है। युद्ध की पत्रकारिता एक पक्ष को विजय दिलाने और दूसरे पक्ष को पराजित करने के अभियान में लगी रहती है और मानती है कि बिना हार जीत के शांति और समाधान संभव नहीं होता। जबकि शांति की पत्रकारिता बीच का रास्ता निकालने में लगी रहती है।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

कैबिनेट में 21 प्रस्तावों पर सहमति

पीडब्ल्यूडी की 26,311 करोड़ की परियोजनाएं जारी रहेंगी

विकास योजनाओं के लिये 26 हजार 800 करोड़ रूपये की स्वीकृति

भोपाल (नप्र)। मोहन कैबिनेट की बैठक में मंगलवार को मध्य प्रदेश आतंकवादी एवं उच्छेदक गतिविधियां और संगठित अपराध नियंत्रण विधेयक, 2010 को वापस लेने का अनुमोदन किया गया। इसके साथ ही बैठक में खरीफ 2020 में खरीदी गई धान की मिलिंग से शेष बची 7.73 लाख मीट्रिक टन धान के ई-ऑक्शन के निराकरण पर चर्चा कर स्वीकृति दी गई।

साथ ही भारतीय वन सेवा के अंतर्गत प्रधान मुख्य वन संरक्षक स्तर के एक पद के सृजन को मंजूरी मिली है। कैबिनेट ने कुल 53 हजार करोड़ रुपए की योजनाओं को 2031 तक जारी रखने को मंजूरी दी है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक मंगलवार को मंत्रालय में सम्पन्न हुई। मंत्रि-परिषद द्वारा प्रदेश के सर्वांगीण विकास और जन-कल्याण के लिए 26 हजार 800 करोड़ रुपये से अधिक की महत्वपूर्ण विकास योजनाओं को स्वीकृति प्रदान की गई।

लखुंदर उच्च दाबयुक्त सूक्ष्म सिंचाई परियोजना के लिए 155 करोड़ 82 लाख रूपये की स्वीकृति

मंत्रि-परिषद द्वारा शाजापुर जिले की लखुंदर उच्च दाबयुक्त सूक्ष्म सिंचाई परियोजना लागत राशि 155 करोड़ 82 लाख रूपये की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई। लखुंदर उच्च दाबयुक्त सूक्ष्म सिंचाई परियोजना से शाजापुर जिले की शाजापुर तहसील के 17 एवं उज्जैन जिले की तराना तहसील के 7 ग्राम इस तरह कुल 24 ग्रामों के लिए 9 हजार 200 हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध होगी। परियोजना अंतर्गत लखुंदर नदी पर शाजापुर जिले में मक्सी के समीप पूर्व से ही निर्मित जलाशय से 24.37 मीट्रिक घन. मीटर जल का उद्वहन कर सिंचाई सुविधा उपलब्ध करायी जाऐगी।

कैबिनेट में इन प्रस्तावों को मिली मंजूरी

- लखुंदर उच्च दाब सूक्ष्म सिंचाई परियोजना को प्रशासकीय स्वीकृति।
- लोक स्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा विभाग के अंतर्गत गांधी चिकित्सा महाविद्यालय, भोपाल में 134 पीजी सीट वृद्धि योजना के अंतर्गत 80 करोड़ रुपए के निर्माण कार्यों की कार्योत्तर स्वीकृति।
- श्यामशाह चिकित्सा महाविद्यालय, रीवा के अंतर्गत सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल के विस्तार की 174 करोड़ रुपए पुनरीक्षित प्रशासकीय स्वीकृति।
- लोक निर्माण विभाग की इन योजनाओं को जारी रखने की स्वीकृति
- लोक निर्माण विभाग के अंतर्गत मरम्मत और सुधार कार्य समेत अन्य योजनाओं के लिए 16वें वित्त आयोग की अवधि तक काम जारी रखने का प्रस्ताव।
- केंद्रीय सड़क अधोसंरचना निधि की योजनाओं को 16वें वित्त आयोग में जारी रखने का प्रस्ताव।
- पीडब्ल्यूडी के एफ टाइप से उच्च श्रेणी के शासकीय आवास और गैर आवासीय भवनों की मरम्मत का काम 16वें वित्त आयोग से जारी रखने का प्रस्ताव।

अंतिम चरण में पहुंचा बंगाल का 'वोट युद्ध'

- दूसरे चरण की कुल 142 सीटों पर वोटिंग आज
- बीजेपी- टीएमसी की प्रतिष्ठा दांव पर

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में कल 29 अप्रैल को 142 सीटों पर वोटिंग होनी है। चुनाव आयोग ने पुलिस को आपत्तिजनक सोशल मीडिया पोस्ट पर सख्त कार्रवाई करने का निर्देश दिया। यह पोस्ट कथित तौर पर पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी को निशाना बनाकर की गई थी। आपत्तिजनक पोस्ट का एक स्क्रीनशॉट शेयर करते हुए, टीएमसी ने दावा किया था कि यूपी के बीजेपी समर्थक ने सोशल मीडिया पर ममता बनर्जी का एक अपमानजनक, अश्लील और अत्यधिक आपत्तिजनक कैरिकेचर बनाया था। पार्टी ने कहा कि औपचारिक शिकायत के बाद इस पोस्ट को हटा दिया गया था। दूसरे चरण की वोटिंग के लिए प्रचार सोमवार शाम को खत्म हो गया। बुधवार को होने वाला मतदान चुनाव की दिशा और सत्ता का रास्ता तय करेगा। ममता बनर्जी ने प्रचार के आखिरी घंटों में दक्षिण कोलकाता में रोड शो किया।

500 करोड़ रुपए से ज्यादा की जब्ती

बंगाल में 510 करोड़ रु. से अधिक की अवैध सामग्री जब्त हो चुकी है। 2021 के चुनाव में 339 करोड़ की जब्ती हुई थी। इस बार 30 करोड़ रु. नकद, 126.85 करोड़ की 48,000 लीटर शराब, 110.12 करोड़ के ड्रग्स और 58.28 करोड़ का सोना-चांदी शामिल है। भाजपा की सबसे बड़ी उम्मीद उत्तर 24 परगना है, जहां मतुआ और शरणार्थी वोट निर्णायक हैं। सीएए का मुद्दा यहां लोगों के अस्तित्व का सवाल और भाजपा का ट्रम्प कार्ड है। इसे और पुख्ता करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी मतुआ के गढ़ ठाकुरबाड़ी पहुंचे और एसआईआर से डरे लोगों को नागरिकता का भरोसा दिया। वहीं, तृणमूल इसी 'डर' को भुनाकर मतुआ व अल्पसंख्यक वोट बैंक को एकजुट करने में जुटी है।

बैंक कर्मचारियों ने कहा-बैंक में जिसका खाता उसे लेकर आओ

ओडिशा में बहन का कंकाल लेकर बैंक पहुंच गया शख्स

कंधे पर लेकर 3 किलोमीटर पैदल चला, बैंक कर्मी डरे

क्योंझर (एजेंसी)। ओडिशा के क्योंझर में सोमवार को हैरान करने वाला मामला सामने आया। आदिवासी जीतू मुंडा अपनी मरी हुई बहन का कंकाल लेकर बैंक पहुंच गया। कंकाल देख बैंक में अफरा-तफरी मच गई। दरअसल, जीतू अपनी बहन कलारा मुंडा के खाते से 20 हजार रुपए निकालना चाहता था, इसके लिए वह कई बार बैंक भी गया। लेकिन कर्मचारियों ने खाता धारक को लाने को कहा। जीतू बैंक में पहले ही कलारा की मौत की जानकारी दे चुका था। फिर भी उसे कोई मदद नहीं मिली, इससे परेशान होकर उसने कब्र से कंकाल निकालकर बैंक में पेश किया। बहन का कंकाल कंधे पर लेकर जीतू करीब 3 किमी पैदल चला। फिर मल्लिपसी में बने ओडिशा ग्रामीण बैंक ब्रांच के बरामदे में कंकाल को रख दिया। इसे देख वहां मौजूद लोग हैरान रह गए। पुलिस के अनुसार, जीतू अनपढ़ है और कानूनी प्रक्रिया से अनजान था।

शरद की सुबह

सच और ईमान लिखती हूं
मैं दिल की जबान लिखती हूं

देखने में हूं उम्र दराज मगर
हसरतें जवान लिखती हूं

समझ ले अनपढ़ भी जिसे
मैं इतना आसान लिखती हूं

छुपा कर गम अपनी आँखों में
मैं सिर्फ मुस्कान लिखती हूं

कुछ लिखती हूं तुम्हारे दिल की
कुछ अपने अरमान लिखती हूं

परे धर्म और मजहब से
मैं सबको समान लिखती हूं।

- सन्जू श्रृंगी

शौर्य दिवस पर सीएम मोहन यादव ने की घोषणा

राजा हिरदेशाह की कहानी सिलेबस में पढ़ेंगे छात्र, बनेगा उनके नाम से तीर्थ स्थान

भोपाल (नप्र)। राजा हिरदेशाह लोधी की याद में भोपाल में शौर्य दिवस का आयोजन किया गया था। इसमें लोधी समाज के नेताओं के साथ-साथ सीएम मोहन यादव भी शामिल हुए। इस मौके पर सीएम मोहन यादव ने बड़ी घोषणा की है। उन्होंने कहा है कि राजा हिरदेशाह लोधी के बारे में एमपी के छात्रों को अब पढ़ाया जाएगा। साथ ही उनकी जीवन यात्रा के बारे में भी लोग देखेंगी।

तीर्थ स्थल का कराएंगे निर्माण- सीएम मोहन यादव ने कहा कि राजा हिरदेशाह लोधी को पाठ्यक्रम में शामिल कराएंगे और उनके नाम से तीर्थ स्थल का भी निर्माण कराएंगे। उन्होंने कहा कि नर्मदा टाइगर के नाम से पहचान

रखने वाले राजा हिरदेशाह ने अंग्रेज शासन के खिलाफ 1842 में संघर्ष का संकल्प लिया। वे अपने भाइयों के साथ 1858 तक संघर्ष करते रहे।

अमूल्य है राजा हिरदेशाह का योगदान : मंत्री पटेल

मंत्री प्रह्लाद सिंह पटेल ने कहा कि राजा हिरदेशाह ने वर्ष 1842 से वर्ष 1858 तक लगातार ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ संघर्ष जारी रखा। लोधी समाज सामर्थ्यवान है। इस समाज के सदस्यों ने देश की रक्षा के लिए दुश्मनों से लोहा लिया। समाज के युवाओं को साहसी, शक्तिमान, शिक्षित और संस्कारवान बनने की आवश्यकता है। हमारा संकल्प समाज के साथ है। संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी ने कहा कि राजा हिरदेशाह लोधी ने 1857 की क्रांति से पहले आजादी के लिए 1842 में क्रांति का बिगुल फूंका था।

उमा भारती बोलीं-आरक्षण कोई माई का लाल नहीं छीन सकता

भोपाल के जम्बूरी मैदान में पूर्व सीएम उमा भारती ने आरक्षण को लेकर बड़ा बयान दिया। उन्होंने मंगलवार को राजा हिरदेशाह लोधी की शौर्य यात्रा में कहा- देश में सामाजिक बराबरी के लिए आरक्षण जरूरी है। उमा भारती ने कहा- जब तक राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और चीफ जस्टिस के परिवार के लोग एक साथ सरकारी स्कूलों में नहीं पढ़ेंगे, तब तक आरक्षण कोई माई का लाल नहीं छीन सकता। उन्होंने कहा कि भारतीय समाज लंबे समय तक जातिगत आधार पर बंटा रहा और आर्थिक असमानताएं गहरी रहीं। ऐसे में आरक्षण उस विषमता को कम करने का एक बड़ा प्रयास है। बराबरी सिर्फ कानून से नहीं, बल्कि व्यवहार में बदलाव से आएगी।

सिंगाजी परियोजना में बड़ा हादसा

कन्वेयर बेल्ट से टकराकर कर्मचारी की मौत

36 घंटे से लगातार कर रहा था ड्यूटी

खंडवा (नप्र)। जिले की संत सिंगाजी ताप विद्युत परियोजना में सोमवार देर रात एक दर्दनाक औद्योगिक हादसे में 21 वर्षीय कर्मचारी की मौत हो गई। हादसा इतना भयावह था कि घटनास्थल पर मौजूद कर्मचारियों की रूह कांप उठी। मृतक कर्मचारी कन्वेयर बेल्ट की चपेट में आ गया, जिससे उसके सिर पर गंभीर चोट लगी और मौके पर ही उसकी मौत हो गई। सूचना मिलते ही पुलिस और परियोजना प्रशासन मौके पर पहुंचा। मंगलवार को शव का पोस्टमार्टम कराया जाएगा।

विनायक इलेक्ट्रिकल कंपनी के माध्यम से करता था काम- मूंदी पुलिस के अनुसार, आंवलिया ग्राम निवासी रविंद्र चौहान (21) विनायक इलेक्ट्रिकल कंपनी के माध्यम से संत सिंगाजी ताप विद्युत परियोजना में कार्यरत था। सोमवार देर रात वह प्लांट परिसर में कन्वेयर बेल्ट के पास काम कर रहा था। इसी दौरान अचानक वह बेल्ट की चपेट में आ गया। टक्कर इतनी जोरदार थी कि उसके सिर में गंभीर चोट आई और उसने मौके पर ही दम तोड़ दिया।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ बुधवार, 29 अप्रैल 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

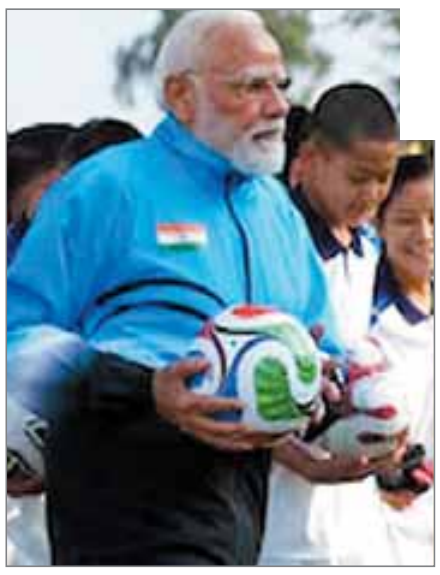

मोदी ने सिक्किम में बच्चों के साथ खेली फुटबॉल

● सोशल मीडिया पर पीएम ने कहा-एनर्जी से भर गया ● राज्य के 50वें स्थापना दिवस कार्यक्रम में हुए शामिल

गंगटोक (एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी 2 दिन के सिक्किम दौरे पर हैं। उन्होंने मंगलवार सुबह गंगटोक में बच्चों के साथ फुटबॉल खेली। पीएम ने सोशल मीडिया पर फुटबॉल खेलते हुए तस्वीरें शेयर की। पीएम ने एक्स पर लिखा, 'इन बच्चों के साथ फुटबॉल खेलकर ऊर्जा से भर गया।' आज मोदी राज्य के 50वें स्थापना दिवस समारोह के समापन कार्यक्रम में शामिल हुए। इसके अलावा उन्होंने 4000 करोड़ से ज्यादा की परियोजनाओं का शिलान्यास भी किया।

पीएम मोदी ने कहा कि जब देश में राजनीतिक स्वार्थ के चलते भाषावाद, प्रांतवाद, ऊंच-नीच और भेदभाव की लगातार कोशिश हो रही है। तब आज सिक्किम ने 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का दर्शन करा दिए। पीएम ने कहा-सिक्किम और नार्थ ईस्ट हमारे लिए सिर्फ देश का एक अहम हिस्सा ही नहीं है, बल्कि भारत की अष्टलक्ष्मी है। इसलिए हम एक्ट ईस्ट की पॉलिसी पर तो काम कर रहे हैं, साथ ही हमने नार्थ ईस्ट के लिए एक्ट फास्ट का संकल्प भी लिया है।

कांग्रेस की सरकारों ने सिक्किम के विकास को पीछे धकेला

कांग्रेस की सरकारों ने हमेशा सिक्किम के विकास को पीछे धकेला। केंद्र में भाजपा सरकार आने के बाद विकास को फिर से गति मिली है। पहली बार सिक्किम तक रेल पहुंचने जा रही है। यहां आते ही एक नई अनुभूति होती है, माहौल मन को खुशियों से भर गया। पूरब का स्वर्ग सिक्किम, ऑर्किड्स का गार्डन सिक्किम। सिक्किम के लोगों से मिलना मुझे हमेशा एक अलग सुकून देता है। मोदी सोमवार शाम को सिक्किम पहुंचे थे। इसके बाद उन्होंने लिबिंग हेलिपैड से गवर्नर हाउस (लोक भवन) तक उन्होंने रोड शो किया।

संक्षिप्त समाचार

जितने ज्यादा जुल्म करेंगे आपका उतना बुरा हश्र होगा

● राघव चड्ढा मामले पर पूर्व सीएम आतिशी ने बीजेपी को घेरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। राघव चड्ढा समेत सात राज्यसभा सांसदों के आम आदमी पार्टी छोड़कर बीजेपी में शामिल होने पर सियासी घमासान बढ़ता जा रहा है। दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री और एएपी नेता आतिशी ने पूरे मामले पर करारा पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि कल राज्यसभा सेक्रेटेरिएट का मर्जर का नोटिफिकेशन गैर-कानूनी और असंवैधानिक है। आतिशी ने कहा कि बीजेपी किसी भी तरह इस देश के संविधान और लोकतंत्र को खत्म करना चाहती है।

मैं भारतीय जनता पार्टी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से कहना चाहूंगी कि इतिहास कहता है कि आप जितने ज्यादा जुल्म करेंगे, आपका उतना ही बुरा हश्र होगा। आम आदमी पार्टी के सात राज्यसभा सांसदों के बीजेपी में शामिल होने पर आतिशी ने सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ ने

साफ ऑर्डर दिए हैं और यह संविधान में साफ लिखा है। एएपी सांसद संजय सिंह ने भी राज्यसभा सेक्रेटेरिएट को इस बारे में बताया था कि संविधान के मुताबिक, जब असल राजनीतिक दल मर्ज होती है, तो उस मर्जर के लिए 2/3 लेजिस्लेटिव पार्टी की भी जरूरत होती है। लेकिन दलबदल विरोधी कानून के तहत, इस देश में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है कि 2/3 सांसद या विधायक किसी दूसरी पार्टी में मर्ज कर सकें। लेकिन भाजपा को इससे क्या फर्क पड़ता है। दिल्ली की पूर्व सीएम आतिशी ने आगे कहा कि यह साफ है कि भारतीय जनता पार्टी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की राजनीति के खत्म होने का समय करीब है। इसलिए, उनके जुल्म बढ़ गए हैं।

तुर्की से भारत लाया गया दाऊद का करीबी डोला

● एनसीबी ने फरार ड्रग माफिया पर कस दिया शिकंजा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भगोड़े डॉन दाऊद इब्राहिम का करीबी सहयोगी और मादक पदार्थों का बड़ा सरगना माने जाने वाले सलीम डोला को तुर्की से भारत डिपोर्ट कर दिया गया है। मंगलवार सुबह उसे दिल्ली लाया गया, जहां एयरपोर्ट पर नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो ने उसे हिरासत में ले लिया। एनसीबी के एक अधिकारी के मुताबिक, 59 वर्षीय सलीम से पहले पूछताछ की जाएगी और उसके बाद उसे महाराष्ट्र और गुजरात जैसे राज्यों को सौंपा जाएगा, जहां उसके खिलाफ कई मामले दर्ज हैं। सलीम को रविवार को इस्तांबुल में तुर्की की नेशनल इंटेलिजेंस एजेंसी और स्थानीय पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में पकड़ा गया था। सलीम डोला की

गिरफ्तारी पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, नार्को सिंडिकेट के खिलाफ जीरो टॉलरेंस। एनसीबी ने आज तुर्की से कुख्यात ड्रग तस्कर मोहम्मद सलीम डोला की भारत वापसी सुनिश्चित कर एक बड़ी सफलता हासिल की है। मोदी सरकार के ड्रग माफियाओं को बेदर्दी से खत्म करने के मिशन के तहत, हमारी एंटी-नारकोटिक्स एजेंसियों ने वैश्विक एजेंसियों के मजबूत नेटवर्क के जरिए अपनी पहुंच सीमाओं के पार तक बढ़ा दी है। अब ड्रग माफिया चाहे कहीं भी छिपे हों, उनके लिए कोई भी जगह सुरक्षित नहीं है। गौरतलब है कि मुंबई के डोंगरी इलाके का रहने वाला सलीम भारत से फरार हो गया था।

एक घंटे तक जलते रहे डंपर में फंसे ड्राइवर-क्लीनर

निवाड़ी में खड़े ट्रॉले से टकराने के बाद लगी थी आग

केबिन काटकर निकाले गए शव

निवाड़ी। निवाड़ी में सड़क किनारे खड़े एक ट्रॉले में पीछे से तेज रफ्तार डंपर घुस गया। टक्कर के बाद डंपर में आग लगने से ड्राइवर और क्लीनर जिंदा जल गए। हादसा बड़े तालाब के पास सोमवार रात करीब 12:30 बजे हुआ। लपटें दूर से ही दिखाई दे रही थीं।

मृतकों की पहचान राजा अहिरवार (32) और गोपाल अहिरवार के रूप में हुई है। दोनों चैनपुरा बटियागढ़ नरसिंहगढ़ के रहने वाले थे। परिजन के आने के बाद निवाड़ी जिला अस्पताल में शवों का पोस्टमॉर्टम किया जाएगा। राजा की तीन बेटियां और एक बेटा है। वहीं, गोपाल के दो बेटियां हैं। पुलिस ने बताया कि टक्कर इतनी भीषण थी कि दोनों वाहन में आग लग गई। सूचना पर फायर ब्रिगेड को सूचना दी गई। चार दमकल की मदद से आग पर काबू पाया गया। क्रेन की मदद से डंपर के केबिन को हटाकर देखा तो दो शव जले मिले। दोनों मृतक डंपर से दमोह नरसिंहपुर से पारीक्षा झांसी की तरफ जा रहे थे। प्रथम दृष्टया ट्रॉला चालक की लापरवाही सामने आई है। उसने लाइट चालू नहीं कर रखी थी, इस वजह से पता नहीं चल पाया कि ट्रॉला सड़क किनारे खड़ा है।

श्री प्रजापति विन्ध्य विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष नामांकित

भोपाल (नप्र)। राज्य शासन ने विन्ध्य क्षेत्र के समग्र एवं संतुलित विकास को गति देने की दिशा में विन्ध्य विकास प्राधिकरण में महत्वपूर्ण नियुक्तियां की हैं। जारी आदेश के अनुसार श्री पंचूलाल प्रजापति को विन्ध्य विकास प्राधिकरण का अध्यक्ष नामांकित किया गया है। साथ ही, डॉ. अजय सिंह तथा श्री संजय तीर्थानी को उपाध्यक्ष पद की जिम्मेदारी सौंपी गई है। योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग द्वारा जारी आदेश के माध्यम से प्राधिकरण के पुनर्गठन की प्रक्रिया को प्रभावी रूप दिया गया है।

हरियाणा का युवक अमेरिका में फूडस्टोर में जिंदा जला

करनाल (एजेंसी)। हरियाणा के युवक की अमेरिका के टेक्सास शहर में फूड स्टोर में लगी आग में जिंदा जलकर मौत हो गई। इस घटना में पंजाब के मोहाली रहने वाले स्टोर मालिक विक्रांत की भी मौत हो गई। जिस वक्त आग लगी, उस समय युवक और मालिक स्टोर के अंदर ही सो रहे थे। टेक्सास पुलिस के मुताबिक, आग इतनी तेजी से

लगी कि दोनों को स्टोर से बाहर निकलने का मौका ही नहीं मिला। जब तक आग बुझाई जाती, दोनों की मौत हो चुकी थी और पूरा स्टोर भी जल गया था। हालांकि, आग कैसे लगी, इसका अभी तक खुलासा नहीं हो पाया है। करनाल के गांव गंगाटेहड़ी का सुखविंदर सिंह (22) पुत्र शीशपाल के रूप में हुई। वह परिवार को इकलौता बेटा था। परिवार ने 50 लाख रुपए खर्च कर उसे डंकी रूट से अमेरिका भेजा था।

रेलवे ट्रैक पर मालगाड़ी गुजरते वक्त हो गया ब्लास्ट

● आईएसआई पर शक, विस्फोटक लगाने वाले के चिथड़े उड़े, वह सांसद अमृतपाल का करीबी

पटियाला (एजेंसी)। पंजाब में पटियाला के राजपुरा में अंबाला-अमृतसर रेल फ्रंट कॉरिडोर में ब्लास्ट के पीछे टेरर एंगल सामने आ रहा है। रेलवे की स्पेशल डीआईजी शशि प्रभा द्विवेदी ने मंगलवार सुबह घटनास्थल पर पहुंचकर कहा कि इसके पीछे पाकिस्तान का हाथ हो सकता है। उन्होंने ये भी खुलासा किया कि जिस वक्त धमाका हुआ, पटरी के ऊपर से मालगाड़ी गुजर रही थी। इससे मालगाड़ी को नुकसान नहीं हुआ लेकिन ड्राइवर को झटका लगा।

इसके बाद ड्राइवर ने अफसरों को सूचना दी कि वहां कुछ गड़बड़ है। इसके बाद जांच टीमें वहां पहुंचीं। उन्होंने कहा कि ये भी संभव है कि जिस वक्त ब्लास्ट हुआ, बम फिट करने वाला भी किनारे खड़ा था और धमाके की चपेट में आ गया। जिससे उसके शरीर के भी चीथड़े उड़ गए। वहीं पटियाला के एसपी वरुण शर्मा ने कन्फर्म किया कि धमाके में जिसकी मौत हुई, वही बम फिट करने आया था। उसका नाम जगरूप सिंह है और वह तरनतारन के पंजवड़ गांव का रहने वाला है। उसकी बाइक अमृतसर से बरामद हो चुकी है। उसकी जेब से सरहिंद से राजपुरा की टिकट भी मिली है। उससे मोबाइल बरामद हुआ है, जिसकी कॉल डिटेल्स खंगाली जा रही है।

भदौरिया को गोविंदपुरा से अतिक्रमण हटाने का जिम्मा, 8 स्वास्थ्य अधिकारियों के जोन बदले

भोपाल में 15 को बदला; कांग्रेस ने उठाए सवाल

भोपाल। भोपाल नगर निगम कमिश्नर संस्कृति जैन ने 8 स्वास्थ्य अधिकारी और 7 अतिक्रमण अधिकारियों को इधर से उधर किया है। अतिक्रमण अधिकारी शैलेंद्र सिंह भदौरिया को नरेला से हटाकर गोविंदपुरा विधानसभा क्षेत्र सौंपा है। दक्षिण-पश्चिम विधानसभा भी भदौरिया के पास ही रहेगी। अतिक्रमण अधिकारी सृष्टि भदौरिया को मध्य विधानसभा से हटाकर हुजूर में भेजा गया है। जोन-8 के प्रभारी स्वास्थ्य अधिकारी रवींद्र यादव मध्य विस क्षेत्र देखेंगे। शुभम गौर को मध्य विधानसभा में सहायक अतिक्रमण अधिकारी बनाया गया है। महेश गौर से जोन-1 और 20 का चार्ज वापस लिया है। वे अब उत्तर विधानसभा क्षेत्र में ही अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई करेंगे। बलवीर मलिक को नरेला और नासिर खान को सांयकालीन अतिक्रमण निरोधक अमले का प्रभारी बनाया गया है। वे कोर्ट में चालानी कार्रवाई के लिए भी प्रभारी अधिकारी बनाए गए हैं।

स्वास्थ्य अधिकारियों को भी बदला- प्रितेश गर्ग को जोन-1, अरविंद चौधरी को जोन-8, जितेंद्र शर्मा को जोन-9, वासुदेव उदेनिया को जोन-10, अमन पाल को जोन-11, रमाकांत यादव को जोन-18, मधुसूदन तिवारी को जोन-19 और विशाल माहेश्वरी को जोन-21 में सहायक स्वास्थ्य अधिकारी का जिम्मा दिया गया है।

इस साल 92 हजार लोगों की जा सकती हैं नौकरियां

तकनीकी क्षेत्र में कड़ी प्रतिस्पर्धा भी बढ़ रही है

● माइक्रोसॉफ्ट, मेटा जैसी कंपनियों पर एआई में निवेश का दबाव

नई दिल्ली (एजेंसी)। एआई की होड़ ने बड़ी टेक्नोलॉजी कंपनियों पर भारी दबाव बढ़ा दिया है। एआई में वे दूसरों से पीछे न रह जाएं इसके लिए अरबों डॉलर झोंक रही हैं। इससे लागत बढ़ रही है, जिसे घटाने के लिए कंपनियां वर्करों की छंटनी कर रही हैं। माइक्रोसॉफ्ट और मेटा जैसी दिग्गज कंपनियों के साथ-साथ नई कंपनियां भी लागत घटाने में जुट गई हैं। ओपन एआई सहित कई नई कंपनियां कड़े फैसले लेने जा रही हैं। माइक्रोसॉफ्ट ने संकेत दिया है कि वह एआई की योजनाओं में पैसा लगाने के लिए लागत में कटौती जारी रखेगी। मेटा ने एआई को अपनी सबसे बड़ी प्राथमिकता बनाया है। इसके साथ अमेजन,गूगल, टेस्ला, स्पेसएक्स भी एआई पर नया

निवेश कर रही हैं। टेक्नोलॉजी इंडस्ट्री में कर्मचारियों की छंटनी पर नजर रखने वाली लेऑफ डॉट एफवाईआई के मुताबिक इस वर्ष 98 कंपनियों ने 92 हजार से अधिक कर्मचारी कम करने का इरादा जाहिर किया है।

दूसरी ओर कड़ी प्रतिस्पर्धा भी बढ़ रही है। दरअसल, एंथ्रोपिक जैसे प्रतिद्वंद्वियों ने तकनीकी क्षमता में बढ़ोतरी की है। उसने नए मॉडल क्लॉड मायथोस से तकनीकी दबाव बढ़ाया है। इसके जवाब में ओपन एआई ने नया मॉडल जीपीटी-5.5 पेश किया है। हालांकि विशेषज्ञों के अनुसार उसकी क्षमता अभी काफी कम है। चीनी एआई कंपनी डीपसीक ने नया ओपन-सोर्स मॉडल लाने की घोषणा की है। साफ, है एआई की यह दौड़ अब केवल तकनीक की नहीं, बल्कि पूंजी,प्रतिभा और टिकाऊ बिजनेस मॉडल की लड़ाई बन चुकी है।

सभी के सभी 15 नगर निगमों में प्रचंड जीत

● गुजरात में 'आत्मनिर्भर' बनीं बीजेपी, किनारे पर सिमटे कांग्रेस-आप

अहमदाबाद (एजेंसी)। पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों के बीच हुए गुजरात स्थानीय निकाय चुनावों में सत्तारूढ़ बीजेपी ने तगड़ा प्रदर्शन किया है। बीजेपी की गुजरात यूनिट ने सिर्फ इन चुनावों में 'आत्मनिर्भर' बनकर उभरी है बल्कि राज्य की राजनीति के लिए निर्णायक चार बड़े शहरों अहमदाबाद, सूरत, वडोदरा, राजकोट समेत नौ नए बने नगर निगमों समेत सभी 15 महापालिकाओं में पर कब्जा बरकार रखा है। पार्टी ने 2021 के चुनावों में आप के गुजरात में एंट्री के लिए हेलीपैड बने सूरत में भी तगड़ा

प्रदर्शन किया है। आप ने नेता प्रतिपक्ष का पद भी गंवा दिया है।

पटेल-संघवी ने संभाली थी कमान- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह की अनुपस्थिति में गुजरात में बीजेपी के प्रचार की कमान मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल और डिप्टी सीएम हर्ष संघवी ने सभाली थी। प्रदेश प्रमुख जगदीश विश्वकर्मा ने प्रदेश संगठन मंत्री रत्नाकर के साथ मिलकर इन चुनावों में कई बड़े प्रयोग किए। बीजेपी ने अपनी रणनीति से बाजी मार ली। वडोदरा में बीजेपी तगड़े विरोध के बाद भी 44 पार्षदों के टिकट काटकर 2021 जितनी सीटें जीतने में कामयाब रही।

शहरों से लेकर गांवों तक खिला कमल

बीजेपी ने राज्य के बड़े शहरों में जहां कांग्रेस और आप की दाल नहीं गलने दी तो वहीं दूसरी तरफ गांवों तक जीत हासिल की। कुल 15 महानगरपालिका पर बीजेपी को एकतरफा जीत मिली तो वहीं दूसरी ओर 84 नगर पालिका में 73 पर जीत हासिल की। 6 नगर पालिका कांग्रेस को मिलीं। इनमें डभोई नगर पालिका भी शामिल है। जो कांग्रेस ने बीजेपी से छीनी है। आप के खाते में कोई भी नगर पालिका नहीं आई है। पार्टी ने गरुड़ेश्वर, वालिया, चिकड़ा, लालपुर और बगसरा तालुका पंचायतों में बड़ी जीत हासिल की है, लेकिन पार्टी ने सूरत में अपने दिग्गज नेता मनोज सोरठिया को उतारकर उन्हें मेयर बनाने का दांव खेला था। जो पार्टी को भारी पड़ा। सोरठिया चुनाव हार गए।

रूस ने भेज दिया चौथा एस 400 एयर डिफेंस सिस्टम

● कर दिया रवाना, पांचवें की डिलीवरी पर भी दी जानकारी

मॉस्को (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर की पहली बरसी पर चौथा रूसी एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम भारत के लिए रवाना कर दिया गया है। ये एयर डिफेंस सिस्टम मई महीने के मध्य तक भारतीय बंदरगाह पर पहुंच जाएगा। इसके अलावा पांचवें एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम को भी इस साल नवंबर तक भारत भेज दिया जाएगा। एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम ने पिछले साल चार दिनों तक पाकिस्तान के खिलाफ चली संघर्ष के दौरान शानदार प्रदर्शन किया था और इसने 314 किलोमीटर दूर पाकिस्तानी अवाक्स एयरक्राफ्ट को मारकर वर्ल्ड रिकॉर्ड कायम किया था। भारत ने रूस के साथ पांच एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम के लिए 2018 में करार किया था जिनमें से तीन एस-400 पहले ही मिल चुके थे जबकि 2 एस-400 को सौंपने में काफी देरी हुई है। हालांकि मोदी सरकार ने पहले ही पांच और एस-400 सिस्टम खरीदने की हरी झंडी दे दी है। इन सिस्टम में पाक में सिंधु नदी के पूर्व में किसी भी हवाई लक्ष्य को नष्ट करने की क्षमता है।

दिन में खजुराहो, रात में सतना सबसे गर्म

पन्ना में ओले गिरे, जबलपुर में 59 किमी घंटे की रफ्तार से चली धूलभरी आंधी

भोपाल (नप्र)। एक तरफ जहां पूरा प्रदेश भीषण गर्मी की चपेट में है, वहीं दूसरी तरफ आंधी और बारिश का दौर भी जारी है। 24 घंटों में राज्य के कई हिस्सों में मौसम ने करवट ली, जिससे कहीं राहत मिली तो कहीं आंधी-तूफान ने तबाही मचाई।

मौसम विभाग के मुताबिक, 24 घंटों के दौरान शिवपुरी, टीकमगढ़, छतरपुर, दमोह, सागर, पन्ना, कटनी, जबलपुर, मंडला, बालाघाट, सिवनी और सतना में बारिश दर्ज की गई। पन्ना में तो ओले गिरने की खबर भी सामने आई है। जबलपुर में 59 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से धूलभरी आंधी चली।वहीं सागर-सतना में 43 किमी और चित्रकूट में 41 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलीं।

आंधी-बारिश के बावजूद गर्मी का असर कम नहीं हुआ है। सोमवार को खजुराहो सबसे गर्म रहा। यहां अधिकतम तापमान 46 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया।

रात में भी नहीं मिल रही राहतः सतना में सबसे गर्म रात- चिंता की बात यह है कि अब रात के तापमान में भी बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है। सतना में न्यूनतम तापमान 31.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो इस सीजन में रात का सबसे ज्यादा तापमान है। यह पहली बार है जब इस सीजन में रात का पारा 31 डिग्री के पार पहुंचा है। रायसेन, उमरिया, खजुराहो और सीधी में भी रात का तापमान 29 डिग्री या उससे अधिक दर्ज किया गया।

सीहोर में सड़क का डामर पिघला, लू से बचाव के लिए अलर्ट जारी

सीहोर जिले में अधिकतम तापमान 44.5 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। राजस्थान से आ रही गर्म हवाओं ने अप्रैल के सभी पुराने रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं, जिससे मंगलवार को सीहोर-श्यामपुर मार्ग पर डामर पिघलना शुरू हो गया। दो दिनों से पारा 44 डिग्री के पार बना हुआ है, जिसके चलते दोपहर में सड़कें सुनसान नजर आ रही हैं। स्वास्थ्य विभाग ने लू और हीट स्ट्रोक से बचाव के लिए अलर्ट जारी करते हुए सभी अस्पतालों में हीट स्ट्रोक मैनेजमेंट यूनिट और ओआरएस कॉर्नर स्थापित कर दिए हैं। सीएमएचओ डॉ. सुधीर कुमार डेहरिया ने सतत निगरानी और उपचार के निर्देश दिए हैं।

लाड़ली लक्ष्मी योजना में छात्राओं को मिलेंगे 25 हजार

- एमपी के कॉलेजों में 1 मई से एडमिशन; खाली सीटों के लिए मिलेगा सीएलसी का विशेष मौका

भोपाल (नप्र)। एमपी के सरकारी और निजी कॉलेजों में स्नातक (यूजी) और स्नातकोत्तर (पीजी) पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए उच्च शिक्षा विभाग ने काउंसलिंग का शेड्यूल जारी कर दिया है। यूजी के लिए 1 मई और पीजी के लिए 2 मई से ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन शुरू होगा। ये 30 जून तक चलेगा। रजिस्ट्रेशन के साथ दस्तावेज सत्यापन अनिवार्य रहेगा। इस बार विभाग ने दो मुख्य काउंसलिंग राउंड के साथ कॉलेज लेवल काउंसलिंग का एक अतिरिक्त राउंड भी जोड़ा है। कॉलेज में एडमिशन लेने वाली छात्राओं को लाड़ली लक्ष्मी योजना से 25000 रुपए की सहायता दी जाएगी।

ऑनलाइन प्रक्रिया से होगा एडमिशन- शेड्यूल के अनुसार, इस साल प्रवेश प्रक्रिया ऑनलाइन माध्यम से ही पूरी की जाएगी। छात्रों को तय तारीख के भीतर रजिस्ट्रेशन करना होगा और अपने दस्तावेजों का सत्यापन भी कराना होगा।बिना सत्यापन के छात्रों की काउंसलिंग प्रक्रिया अधूरी मानी जाएगी और वे सीट आवंटन से वंचित रह सकते हैं।

चॉइस फिलिंग से तय होगा कॉलेज- एडमिशन प्रक्रिया के दौरान छात्रों को अपनी पसंद के कॉलेज और कोर्स का चयन करना होगा। इसी चॉइस फिलिंग के आधार पर मेरिट सूची तैयार की जाएगी और सीटों का आवंटन किया जाएगा। सीट मिलने के बाद छात्रों को तय समय सीमा में फीस जमा करनी होगी अन्यथा उनकी सीट स्वतः निरस्त हो जाएगी और वह अगली सूची में अन्य छात्रों को आवंटित कर दी जाएगी।

दो मुख्य राउंड के साथ सीएलसी का नया मौका

इस बार प्रवेश प्रक्रिया में दो मुख्य काउंसलिंग राउंड के अलावा कॉलेज लेवल काउंसलिंग का एक अतिरिक्त राउंड भी रखा है।यह राउंड उन सीटों को भरने के लिए होगा, जो मुख्य काउंसलिंग के बाद खाली रह जाती हैं। इससे अधिक से अधिक छात्रों को प्रवेश का अवसर मिल सकेगा और कॉलेजों में सीटें खाली नहीं रहेंगी।

खरगोन में बाइक सवार को 200 मीटर घसीटा: शरीर के अवशेष सड़क पर बिखरे, फावड़े से समेटना पड़ा

खरगोन। खरगोन जिले में आगरा-मुंबई नेशनल हाईवे पर मंगलवार दोपहर खलघाट की ओर से आ रहे एक तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने बाइक सवार युवक को पीछे से टक्कर मारी। टक्कर इतनी भीषण थी कि वाहन युवक को करीब 200 मीटर तक घसीटता ले गया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। घटना नर्मदा संजय सेतु पुल पर हुई।

फावड़े से समेटने पड़े शरीर के अवशेष- हादसे के बाद युवक के शरीर के अवशेष सड़क पर बिखर गए, जिन्हें बाद में फावड़े की मदद से इकट्ठा करना पड़ा। घटना को अंजाम देने के बाद वाहन चालक मौके से फरार हो गया। मृतक की पहचान 35 वर्षीय मनीष पिता नानुराम राठौड़ निवासी सायता नावडाटोडी, थाना कसरावद के रूप में हुई है। उसकी बाइक का नंबर MPv07156 था। उसी से पहचान की गई। वह पूर्व एंबुलेंस कर्मचारी बताया जा रहा है।

सम्मान से मिलता है प्रोत्साहन : सारंग

नरेला में मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान; मंत्री सारंग ने बढ़ाया उत्साह

भोपाल (नप्र)। सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने कहा कि बच्चे ही देश का भविष्य हैं और उनका सम्मान करना हम सभी का दायित्व है। उत्कृष्ट विद्यार्थी के सम्मान से उन्हें प्रोत्साहन मिलता है। जिससे और बेहतर कार्य करते हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में देश और मध्यप्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर उन्नयन हो रहा है। मंत्री श्री सारंग नरेला विधानसभा अंतर्गत वार्ड क्रमांक 70 स्थित बिजली नगर कॉलोनी के शासकीय माध्यमिक शाला, बिजली नगर में मेधावी विद्यार्थी सम्मान एवं संवाद कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

शिक्षा के क्षेत्र में हो रहा लगातार विकास- मंत्री श्री सारंग ने कहा कि सरकार का लक्ष्य है कि स्कूल और कॉलेज में पढ़ने वाला हर विद्यार्थी एक अच्छा और सच्चा नागरिक बने। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश में स्कूली शिक्षा लगातार उन्नत हो रही है, जिसका परिणाम है कि बड़ी संख्या में विद्यार्थी उत्कृष्ट अंकों से उत्तीर्ण हो रहे हैं।

नरेला में शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक पहल- मंत्री श्री सारंग ने नरेला विधानसभा में किए गए शैक्षणिक विकास कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि नरेला विधानसभा में 2 संदीपनी विद्यालय निर्माणाधीन हैं, जो आधुनिक शिक्षा के नए केंद्र बनेंगे। क्षेत्र में विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए बाहर न जाना पड़े, इसके लिए नरेला में कॉलेज निर्माण कराया गया है। नरेला विधानसभा में स्कूलों का व्यापक उन्नयन किया गया है। स्मार्ट क्लास जैसी आधुनिक सुविधाएं सबसे पहले नरेला में प्रारंभ की गईं, जिससे डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा मिला।

शिक्षा में नवाचार - देश में पहली पहल- मंत्री श्री सारंग ने अपने चिकित्सा शिक्षा मंत्री कार्यकाल का उल्लेख करते हुए कहा कि हिंदी में मेडिकल की पढ़ाई शुरू कराने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया, जो देश में पहली बार हुआ। नॉलेज शेयरिंग मिशन की शुरुआत कर शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा दिया गया। उन्होंने कहा कि इन पहलों का उद्देश्य शिक्षा को सरल, सुलभ और प्रभावी बनाना है।

हजारों विद्यार्थियों का किया जा रहा सम्मान- मंत्री श्री सारंग ने बताया कि क्षेत्र में हजारों की संख्या में विद्यार्थियों को सम्मानित करने का अभियान शुरू किया गया है। इस कार्यक्रम के माध्यम से उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं का उत्साहवर्धन किया जा रहा है। यह आयोजन केवल सम्मान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य आने वाली पीढ़ी को भी प्रेरित करना है।

नई पीढ़ी को प्रेरित करने का प्रयास

मंत्री श्री सारंग ने कहा कि यह कार्यक्रम इसलिए आयोजित किया जा रहा है जिससे मेधावी विद्यार्थी प्रोत्साहित हों और उन्हें देखकर अन्य बच्चे भी आगे बढ़ने के लिए प्रेरित हों। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहें और देश एवं समाज के विकास में अपना योगदान दें।

समाज निर्माण में युवाओं की भूमिका- मंत्री श्री सारंग ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन यह सुनिश्चित करते हैं कि बच्चों का योगदान समाज निर्माण में हो और वे जिम्मेदार नागरिक बनें। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में विद्यार्थी, अभिभावक एवं शिक्षकगण उपस्थित रहे। सम्मानित विद्यार्थियों में उत्साह का माहौल देखने को मिला और सभी ने इस पहल की सराहना की।

ओरछा में होगी बीजेपी की प्रदेश कार्यसमिति की बैठक

बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष खंडेलवाल ने बैठक में किया एलान, सदस्यों की लिस्ट आज-कल में हो सकती है जारी

भोपाल (नप्र)। भोपाल स्थित भाजपा प्रदेश कार्यालय में पं. दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान-2026 के तहत जिला प्रशिक्षण वर्गों की कार्य योजना को लेकर बैठक आयोजित की गई। इसी दौरान प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने घोषणा की कि मई महीने में ओरछा में प्रदेश कार्यसमिति की बैठक आयोजित की जाएगी। यह बैठक खंडेलवाल के प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद पहली कार्यसमिति होगी, जिससे संगठनात्मक दृष्टि से इसे अहम माना जा रहा है। हालांकि, अभी तक प्रदेश कार्यसमिति के सदस्यों के नामों की घोषणा नहीं हुई है। बताया जा रहा है कि एक या दो दिन में ही इसकी सूची जारी की जा सकती है। मंच पर बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खण्डेलवाल, राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री शिवप्रकाश, राज्यसभा सांसद और प्रदेश महामंत्री सुमेर सिंह सोलंकी, प्रशिक्षण प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक विजय दुबे, प्रदेश मंत्री राजेंद्र सिंह मौजूद हैं।

इनके साथ ही बैठक में प्रदेश प्रशिक्षण टोली, प्रदेश पदाधिकारी, संभाग प्रभारी, जिला प्रभारी, जिला अध्यक्ष,संभागीय प्रशिक्षण टोली, सभी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष, जिला प्रशिक्षण वर्ग प्रभारी, प्रशिक्षण महाअभियान के जिला संयोजक उपस्थित हैं।

'बाघिन' के पंजे काटकर शिकारी फरार

सिवनी में करंट लगाकर मारा फिर कुएं में फेंका, प्रदेश में हर 5वें दिन एक टाइगर की मौत

भोपाल (नप्र)। टाइगर स्टेट एमपी के जंगलों में बाघ सुरक्षित नहीं है? बीते डेढ़ साल से टाइगर रिजर्व और बाहरी इलाकों में बाघों की मौतों का आंकड़ा एकदम से बढ़ गया है। हर चौथे-पांचवे दिन प्रदेश में बाघ की मौत हो रही है। ताजा मामला सिवनी जिले में बाघिन को करंट लगाकर शिकार कर लिया गया। तस्करों ने उसके पीछे के पैर के पंजे काट लिए और सबूत छिपाने के लिए उसे एक कुएं में फेंक दिया। जानकारी अनुसार प्रदेश के सिवनी जिले में सिवनी-छिंदवाड़ा राजमार्ग पर स्थित चरगांव में एक खेत में बने कुएं में बाघिन का शव मिला है। बाघिन की मौत करंट लगने से हुई है। खेत मालिक ने वन विभाग को सूचना दी थी, कि खेत के कुएं में एक बाघ गिर गया है। यह मामला सीधे तौर पर टाइगर के शिकार से जुड़ा है। कुएं के आसपास बिजली के वायरल के टुकड़े, जले हुए तार के हिस्से सहित तमाम सबूत मिले हैं।

- **कान्हा में भूख से 3 टाइगर शावक मरे-** वन विभाग के अधिकारियों से मिली जानकारी अनुसार सिवनी जिले में एक खेत के कुएं से बिजली के झटके से मरी एक बाघिन का शव निकाला गया। इसके बाद वन अधिकारियों ने सोमवार को खेत मालिक और एक अन्य व्यक्ति को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया। प्रारंभिक जांच में पता चला है कि, चरगांव खेत के पास लगाए गए एक अवैध बिजली के जाल के कारण बाघिन की मौत हुई। कुएं के पास से जले हुए तार और बिजली के खूंटे बरामद किए गए हैं।
- **वन अधिकारियों को गुमराह करने कुएं में शव फेंका-** मामले में वन विभाग सिवनी के अधिकारियों का स्पष्ट कहना है कि, बाघिन की मौत के असली कारण को छिपाने और जांच को गुमराह करने के लिए जानबूझकर बाघिन के शव को कुएं में डाला गया था। पीएम रिपोर्ट में भी बिजली के झटका से मौत होना बताया है।
- **पीछे के दोनों पंजे गायब थे-** मामले में चौंकाने वाली बात यह है कि, जब बाघिन को कुएं से निकाला गया तो पता चला कि उसके पीछे के पैरों के पंजे गायब हैं। आरोपियों ने करंट से बाघिन की मौत के बाद उसके पंजे काट लिए थे। मामले में खेत के मालिक ने ही वन विभाग को बाघ के कुएं में पड़े होने की सूचना दी थी। पुलिस को मौके व कुएं के आसपास से अहम सुराग और सबूत भी मिले हैं। खेत मालिक को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है।
- **छह दिन में प्रदेश में 5 बाघों की मौत-** मध्य प्रदेश के कान्हा टाइगर रिजर्व में बीते छह दिन में बाघिन टी-141 के तीन शावकों की मौत हो गई थी। बाघिन और चौथा शावक भी गंभीर हालत में रेस्क्यू किया गया है। सिवनी में बाघिन का शिकार चौथ मामला है। इसके पहले अप्रैल महीने में करीब 7 बाघों की मौत के मामले में रिकॉर्ड में दर्ज हैं। उधर बालाघाट के बैहार इलाके में एक बाघ का शव बरामद किया गया था। पन्ना में मुख्य मार्ग के पास बाघ का सड़ा गला शव मिला था।
- **साल 2026 में अब तक 27 बाघों की मौत-** एनटीसीए के आंकड़ों के मुताबिक मध्य प्रदेश में साल 2026 में 1 जनवरी से 27 अप्रैल तक 117 दिन में 27 बाघों की जान जा चुकी है। इसमें नर-मादा सहित बाघ शावक भी शामिल हैं। बाघ न जंगल में सुरक्षित हैं, न जंगल के बाहरी इलाके में सुरक्षित हैं। शिकार, कटीले तार, करंट वाले तार, तस्करी सहित अब तो भूख से बाघों के मरने के मामले सामने आने लगे हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बालाघाट में 100 दिवसीय टीबी (क्षय रोग) रोग मुक्त अभियान के जन जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाई।

'बाग प्रिंट' कला को पेरिस में मिलेगा वैश्विक मंच

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश में पारंपरिक हस्तशिल्प और स्थानीय कला को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के लिये निरंतर प्रभावी प्रयास किये जा रहे हैं। इसी क्रम में प्रदेश की विशिष्ट 'बाग प्रिंट' कला को फ्रांस की राजधानी पेरिस में आयोजित होने वाले प्रतिष्ठित मेले ''फ़ोयर डे पेरिस' में प्रदर्शित किया जायेगा। यह मेला 30 अप्रैल से 11 मई 2026 तक पेरिस के पोर्टे डे वर्साय प्रदर्शनी केंद्र में आयोजित किया जाएगा। केन्द्रीय वस्त्र मंत्रालय के विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) कार्यालय द्वारा देशभर से चयनित पांच श्रेष्ठ शिल्पकारों में प्रदेश के नेशनल अवार्डी शिल्पकार मोहम्मद बिलाल खत्री को शामिल किया गया है। वे इस मेले में प्रदेश की 'बाग प्रिंट' कला का प्रतिनिधित्व करते हुए मास्टर क्राफ्ट्समैन के रूप में शामिल होंगे। 'बाग प्रिंट' हस्तशिल्प भौगोलिक संकेत (GI) के अंतर्गत संरक्षित है।

लाइव डेमोंस्ट्रेशन से रूबरू होंगे दर्शक- इस अन्तर्राष्ट्रीय मेले में बिलाल खत्री 'बाग प्रिंट' कला का लाइव प्रदर्शन करेंगे। पारंपरिक प्राकृतिक रंगों, नक्काशीदार लकड़ी के ब्लॉक्स और हस्तनिर्मित तकनीकों के माध्यम से कपड़ों पर उभरती कलाकृतियों को अन्तर्राष्ट्रीय दर्शक प्रत्यक्ष देख सकेंगे। यह भारतीय हस्तशिल्प की गहराई और सौंदर्य को समझने का अनूठा अवसर प्रदान करेगा।

'बाग प्रिंट' की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

'बाग प्रिंट' मध्यप्रदेश के धार जिले के बाग क्षेत्र की पारंपरिक हैंड ब्लॉक प्रिंटिंग कला है। इस शिल्प में सूती और रेशमी कपड़ों को पारंपरिक प्राकृतिक प्रक्रियाओं से तैयार किया जाता है। 'बाग प्रिंट' में लाल और काले रंग के ज्यामितीय एवं पुष्पीय रूपांकन प्रमुख होते हैं।

संपादकीय

महिला आरक्षण : सियासी मेगा शो

मोदी सरकार द्वारा लोकसभा में 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2026' पारित न करा पाने के बाद इसके कांग्रेस और विपक्ष को कटघरे में खड़ा करने लिए सत्तारूढ़ भाजपा हर मुमकिन कोशिश कर रही है। विधानसभा के विशेष सत्र में सोमवार को 'नारी शक्ति वंदन' अधिनियम के क्रियान्वयन को लेकर लाया गया शासकीय संकल्प भारी हंगामे और लंबी बहस के बाद पारित हो गया। अध्यक्ष के निर्देश पर सदस्यों ने हाथ उठाकर अपना मत जाहिर किया। विपक्ष द्वारा मत विभाजन की मांग पर अध्यक्ष ने व्यवस्था दी कि चूंकि मूल प्रस्ताव सरकार का है। अलग वोटिंग की जरूरत नहीं। सदस्य लॉबी में रजिस्टर पर पक्ष दर्ज करा सकते हैं। सिर्फ कांग्रेस सदस्यों ने रजिस्टर पर हस्ताक्षर किए। यकीनन इस विशेष सत्र में कांग्रेस को कोसने और विपक्ष के खिलाफ नरेटिव गढ़ने का राजनीतिक उद्देश्य काफी हद तक पूरा हो गया, लेकिन इससे भाजपा को जमीनी स्तर कोई राजनीतिक फायदा हो रहा है अथवा होगा, इसको लेकर खुद भाजपा भी आश्वस्त नहीं है। इसीलिए भाजपा शासित सभी राज्यों में विस के एक दिनी विशेष सत्र बुलाकर अधिनियम के समर्थन में शासकीय संकल्प पारित किए जा रहे हैं। मजे की बात यह है कि भाजपा सरकारें नारी शक्ति अधिनियम को पारित न होने देने के लिए कांग्रेस को जिम्मेदार तो ठहरा रही हैं, लेकिन कांग्रेस के इस पलटवार का जवाब नहीं दे रही हैं कि सरकार इस महिला आरक्षण को आज से ही लागू करने में क्यों हिचक रही है। बहरहाल मप्र विधानसभा के इस एक दिनी विशेष सत्र में नौ घंटे चली चर्चा में भी आठ घंटे केवल महिला आरक्षण के तकनीकी और राजनीतिक पहलुओं पर बात हुई, जिसमें महिला विधायकों ने भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया। चर्चा के बाद उसे सदन ने ध्वनिमत से पारित कर दिया। आरंभ में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की ओर से पेश किए गए इस संकल्प ने सदन में सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच युद्ध छेड़ दिया। सीएम ने कहा कि कांग्रेस ने 55 साल पहले परिसीमन को 'सीज' कर दिया था, जिसके कारण देश की आधी आबादी आरक्षण से वंचित रही। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने संसद में संशोधन विधेयक का समर्थन न कर महिलाओं से विश्वासघात किया। मुख्यमंत्री ने अपने भाषण में राज्य सरकार द्वारा नौकरियों और अन्य क्षेत्रों में नारी सशक्तिकरण और ज्यादा भागीदारी के लिए उठाए गए कदमों की विस्तार से जानकारी दी। जबकि सदन में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार के नेतृत्व में कांग्रेस ने सरकार को घेरते हुए कई गंभीर सवाल उठाए। विपक्ष का मुख्य तर्क यह था कि जब कानून बन चुका है, तो इसे जनगणना और परिसीमन जैसी शर्तों में क्यों उलझाया जा रहा है? उन्होंने मांग की कि वर्तमान की 543 लोकसभा और 230 विधानसभा सीटों पर ही आज से ही 33% आरक्षण लागू किया जाए। कांग्रेस ने ओबीसी महिलाओं के लिए आरक्षण के भीतर कोटा निर्धारित करने की मांग की। यहां असल सवाल सरकार की नीयत और मंशा का है। देश में पांच राज्यों में विस चुनाव प्रक्रिया जारी रहते इस विधेयक को लाने का उद्देश्य क्या था? क्या इसे 4 मई के बाद भी नहीं लाया जा सकता था? हो सकता है कि सरकार को उम्मीद हो कि महिलाओं को राजनीतिक आरक्षण से देने से देश भी सत्तर करोड़ महिलाएं आंदोलित होंगी और भाजपा के पक्ष में माहौल बनेगा। राजनीतिक नरेटिव गढ़ने तक तो ठीक है, लेकिन सियासी आरक्षण का मुद्दा कितनी महिलाओं की जमीनी आकांक्षाओं को एड्रेस करता है और अगर समूचे देश में तीन हजार से अधिक महिलाएं चुनाव जीतकर विधान मंडलों में पहुंच भी जाएंगी तो इससे आम महिलाओं को क्या लाभ होगा? इसका जवाब किसी के पास नहीं है। लिहाजा लिहाजा महिला आरक्षण के नाम पर राजनीतिक मेगा शो चल रहा है।

नजरिया

संजय सक्सेना
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

गुजरात नगर निकाय और पंचायत में कमल के मायने

बहरहाल, इन चुनावों के नतीजों से साफ है कि जनता ने भाजपा को अपनाया और विपक्ष को ठुकरा दिया। भाजपा को कुल मिलाकर अस्सी प्रतिशत से ज्यादा सीटें मिलीं, जो उसके शासन पर भरोसे को दर्शाता है। बड़े शहरों में शहरी विकास और ग्रामीण इलाकों में बुनियादी सुविधाओं ने भाजपा को आगे रखा। कांग्रेस की हार उनकी आंतरिक कलह और कमजोर नेतृत्व का नतीजा है। आम आदमी पार्टी नया खिलाड़ी होने के बावजूद असफल रही। जनता ने स्थानीय मुद्दों को प्राथमिकता दी, जैसे स्वच्छता, पानी, बिजली और सड़कें। भाजपा ने इन पर बेहतर प्रदर्शन किया।

गुजरात की राजनीतिक जमीन पर एक बार फिर भाजपा ने अपनी मजबूत पकड़ दिखा दी है। अगले साल विधानसभा चुनावों से ठीक पहले हुए नगर निकाय और पंचायत चुनावों में भाजपा ने जबरदस्त प्रदर्शन किया, जिससे विपक्षी दलों के चेहरों पर हताशा छा गई। इस बार कुल पंद्रह नगर निगमों, चौंऔंनवे नगर पालिकाओं, चौंतीस जिला पंचायतों और ढाई सौ साठ तालुका पंचायतों में मतदान हुआ। नवसारी, गांधीधाम, मोरबी और वापी समेत नौ नए नगर निगमों में भी पहली बार वोट पड़े, और इन सबमें भाजपा ने कमाल कर दिखाया। मतदान में करीब अठारह लाख मतदाताओं ने हिस्सा लिया, जो कुल मतदाताओं का पचपन प्रतिशत से ज्यादा है। बड़े शहरों में भाजपा को खासा समर्थन मिला, जिसने पार्टी को मनोवैज्ञानिक बढ़त दे दी। यह जीत न केवल स्थानीय मुद्दों पर केंद्रित रही, बल्कि विकास, बुनियादी सुविधाओं और शासन की दक्षता पर जनता के भरोसे को भी उजागर करती है। विपक्षी दल, खासकर कांग्रेस, को इन चुनावों में करारी शिकस्त मिली, जो उनकी कमजोर संगठन क्षमता और जनाधार खोने का संकेत देती है।

इस जीत ने गुजरात की जनता के मनोबल को ऊंचा कर दिया है। भाजपा कार्यकर्ताओं में उत्साह की लहर दौड़ गई है, जबकि विपक्षी खेमे में सन्नाटा पसर गया। राज्य सरकार के विकास कार्यों, जैसे सड़कें, पानी की आपूर्ति, स्वच्छता अभियान और बिजली व्यवस्था पर जनता का विश्वास मजबूत हुआ है। बड़े शहरों में भाजपा ने न केवल सीटें हथियाईं, बल्कि पार्षदों की संख्या में भी भारी बढ़ोतरी की। छोटे नगरों और ग्रामीण इलाकों में भी यही कहानी दोहराई गई। यह चुनाव गुजरात मॉडल के पक्ष में एक बड़ा स्टांप लगाने जैसा साबित हुआ। जनता ने साफ संदेश दिया कि स्थानीय स्तर पर शासन की गुणवत्ता ही असली मुद्दा है। भाजपा ने जातिगत समीकरणों को तोड़ते हुए व्यापक समर्थन जुटाया, जो उसके संगठन की ताकत को दर्शाता है।

नगर निगम चुनावों में भाजपा ने अपनी ताकत का पूर्ण प्रदर्शन किया। पंद्रह नगर निगमों में से अधिकांश में भाजपा ने साफ बहुमत हासिल कर लिया। अहमदाबाद, सूरत, वडोदरा, राजकोट जैसे प्रमुख शहरों में भाजपा ने पार्षदों की भारी संख्या जीती। इन शहरों में विकास कार्यों का श्रेय लेकर भाजपा ने मतदाताओं का दिल जीत लिया। उदाहरण के लिए, अहमदाबाद नगर निगम में भाजपा ने कुल सीटों में से आधे से ज्यादा पर कब्जा जमाया। सूरत में भी यही हाल रहा, जहां व्यापारी वर्ग ने भाजपा को जमकर समर्थन दिया। नए नगर निगमों जैसे गांधीधाम और वापी में पहली बार चुनाव होने पर भाजपा ने सारी सीटें जीत लीं। यह नई जगहों पर भी पार्टी की पैठ बढ़ने का प्रमाण है।

कांग्रेस को इन चुनावों में बुरी तरह पछाड़ा गया। जहां भाजपा ने बड़े शहरों में मजबूत बढ़त बनाई, वहीं कांग्रेस को छोटे-मोटे लाभ ही मिले। सूरत और वडोदरा जैसे शहरों में कांग्रेस का खाता तक नहीं खुला। आम आदमी पार्टी ने भी कुछ जगहों पर कोशिश की, लेकिन नतीजे निराशाजनक रहे। जनता ने कांग्रेस को ठुकरा दिया क्योंकि पार्टी स्थानीय मुद्दों पर कमजोर रही। भाजपा ने स्वच्छता, सीवरेज व्यवस्था और सड़क निर्माण जैसे कार्यों पर जोर देकर मतदाताओं को आकर्षित किया। मतदान प्रतिशत पचपन से ऊपर रहने से साफ पता चलता है कि शहरी मतदाता सक्रिय थे और उन्होंने भाजपा के पक्ष में फैसला लिया। यह जीत भाजपा को अगले विधानसभा चुनावों में शहरी सीटों पर मजबूत स्थिति देगी। विपक्ष को अब आत्ममंथन करना होगा कि आखिर जनता ने उन्हें क्यों नकार दिया।

उधर, पंचायत चुनावों ने भाजपा की ग्रामीण पकड़ को और पुख्ता कर दिया। चौंतीस जिला पंचायतों और ढाई सौ साठ तालुका पंचायतों में भाजपा ने बहुमत हासिल किया। ग्रामीण इलाकों में पानी की व्यवस्था, बिजली पहुंच, स्कूलों का निर्माण और कृषि योजनाओं पर भाजपा के प्रयासों को जनता ने सराहा। जिला पंचायतों में भाजपा ने साठ प्रतिशत से ज्यादा सीटें जीतीं। तालुका स्तर पर भी यही ट्रेंड दिखा। छोटे गांवों से लेकर बड़े तहसील मुख्यालयों तक भाजपा का बोलबाला रहा। कांग्रेस को पंचायतों में भी करारी हार मिली। कई जगहों पर कांग्रेस उम्मीदवार जमानत जब्त कराने पर रह गए। आम आदमी पार्टी का प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों में न के बराबर रहा। जनता ने भाजपा को अपनाया क्योंकि पार्टी ने ग्रामीण विकास पर ठोस कदम उठाए। मनरेगा जैसी योजनाओं को बेहतर ढंग से लागू करने, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार और स्वास्थ्य केंद्रों की स्थापना ने ग्रामीण मतदाताओं का दिल जीता। विपक्ष को ठुकराने का कारण उनकी वादाखिलाफी और संगठन की कमजोरी रही। भाजपा ने ओबीसी, आदिवासी और पटेल समुदायों में अपनी पैठ मजबूत की। यह जीत ग्रामीण विधानसभा क्षेत्रों के लिए भाजपा को मजबूत आधार देगी।

बहरहाल, इन चुनावों के नतीजों से साफ है कि जनता ने भाजपा को अपनाया और विपक्ष को ठुकरा दिया। भाजपा को कुल मिलाकर अस्सी प्रतिशत से ज्यादा सीटें मिलीं, जो उसके शासन पर भरोसे को दर्शाता है। बड़े शहरों में शहरी विकास और ग्रामीण इलाकों में बुनियादी सुविधाओं ने भाजपा को आगे रखा। कांग्रेस की हार उनकी आंतरिक कलह और कमजोर नेतृत्व का नतीजा है। आम आदमी पार्टी नया खिलाड़ी होने के बावजूद असफल रही। जनता ने स्थानीय मुद्दों को प्राथमिकता दी, जैसे स्वच्छता, पानी, बिजली और सड़कें। भाजपा ने इन पर बेहतर प्रदर्शन किया। यह जीत अगले विधानसभा चुनावों के लिए भाजपा को मनोवैज्ञानिक बढ़त देगी। विपक्ष को अब मजबूत रणनीति बनानी होगी। गुजरात की जनता ने विकास मॉडल को चुना, जो भाजपा की लगातार जीत का राज है। कुल मिलाकर, यह चुनाव गुजरात की राजनीति में भाजपा के प्रभुत्व को स्थापित करते हैं।

राघव की बगावत से डगमगाया 'आप' का राज्यसभा किला

राजनीति

अजय कुमार
लेखक लखनऊ निवासी वरिष्ठ पत्रकार हैं।

भारतीय राजनीति के फलक पर 2 अप्रैल 2026 को जो चिंगारी सुलगनी शुरू हुई थी, उसने 22 दिनों के भीतर एक ऐसी सियासी आग का रूप ले लिया है जिसमें अरविंद केजरीवाल की 'आम आदमी पार्टी' का राज्यसभा वाला किला लगभग ढह चुका है। यह महज कुछ सांसदों का दल-बदल नहीं है, बल्कि उस भरोसे और विचारधारा की सामूहिक हत्या है, जिसके दम पर एक दशक पहले अन्ना आंदोलन की कोख से यह पार्टी जन्मी थी। राज्यसभा में पार्टी के डिप्टी लीडर रहे राघव चड्ढा की अगुवाई में सात सांसदों का एक साथ पाला बदलना दिल्ली से लेकर पंजाब तक की सियासत में वो भूकंप है, जिसकी रिक्टर स्केल पर तीव्रता आने वाले कई सालों तक महसूस की जाएगी। 'मैं घायल हूं, इसलिए घातक हूं' और 'मेरी खामोशी को मेरी हार मत समझना' जैसे फिल्मी लगने वाले राघव के संवादों ने शुक्रवार को तब हकीकत का जामा पहन लिया, जब उन्होंने संदीप पाठक और अशोक मित्तल के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस कर भाजपा का दामन थामने का एलान किया। यह भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में किसी भी क्षेत्रीय दल के लिए संभवतः सबसे बड़ा और संगठित विद्रोह है।

इस पूरे घटनाक्रम की पटकथा उस दिन लिख दी गई थी जब राघव चड्ढा को अचानक राज्यसभा में डिप्टी लीडर के पद से हाथ धोना पड़ा था। पार्टी ने अंदरूनी तौर पर उन पर निष्क्रियता और गतिविधियों से दूरी बनाने के आरोप मढ़े थे, लेकिन राघव के तेवर बता रहे थे कि वे किसी बड़े 'ऑपरेशन' की तैयारी में हैं। गौर करने वाली बात यह है कि इस बगावत में संदीप पाठक का नाम शामिल होना केजरीवाल के लिए सबसे बड़ा व्यक्तिगत झटका है। पाठक वही शख्स हैं जिन्हें 'आप' का चाणक्य कहा जाता था, जिन्होंने पंजाब की सत्ता की चाबी केजरीवाल के हाथ में सौंपी और पार्टी को राष्ट्रीय दल का दर्जा दिलाने के लिए पर्दे के पीछे से संगठन की मशीनरी तैयार की। जब संगठन का वास्तुकार ही इमारत ढहाने पर आमादा हो जाए, तो नेतृत्व की विफलता पर सवाल उठना लाजिमी है। इसके साथ ही स्वाति मालीवाल की भूमिका ने इस आग में घी का काम किया है। बिभव कुमार मामले के बाद जिस तरह स्वाति को अपनी ही पार्टी में अपमान और अलगाव का सामना करना पड़ा, उन्होंने उसे अपनी निजी अदावत बना लिया। आज जब वे राघव के साथ सुर में सुर मिला रही हैं, तो यह साफ है कि 'आप' के भीतर महिलाओं के सम्मान और आंतरिक लोकतंत्र को लेकर जो दावे किए जाते थे, उनकी कलई खुल चुकी है।

तकनीकी तौर पर देखें तो यह बगावत बहुत ही सधे हुए कानूनी दांव-पेच के साथ की गई है। राज्यसभा में 'आप' के कुल 10 सांसद थे, जिनमें से 7 का एक साथ अलग होना दल-बदल विरोधी कानून (एन्टी डिफेक्शन लॉ) के तहत अयोग्यता की तलवार को कुंद कर देता है। दो-तिहाई की यह संख्या राघव चड्ढा की उस रणनीतिक कुशलता को दर्शाती है, जिसका लोहा कभी खुद केजरीवाल मानते थे। राघव का यह कहना कि वे 'गलत पार्टी में सही व्यक्ति' थे, न केवल केजरीवाल के नेतृत्व पर सीधा प्रहार है, बल्कि उन लाखों कार्यकर्ताओं के जख्मों पर नमक छिड़कने जैसा है जो भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग का सपना लेकर इस पार्टी से जुड़े थे। जिस पार्टी ने 15 साल तक संघर्ष किया, उसका इस तरह ताश के पत्तों की तरह बिखरना यह बताता है कि सत्ता के गलियारों में पहुंचते ही 'आम' और 'खास' की लकीर धुंधली पड़ गई। भ्रष्टाचार के आरोपों में घिरे नेतृत्व और जेल से सरकार चलाने की जिद ने शायद उन नेताओं को भी सोचने पर मजबूर कर दिया जो अब तक वफादारी का दम भर रहे थे।

पंजाब की सियासत के लिहाज से यह घटनाक्रम किसी सुनामी से कम नहीं है। बागी होने वाले सात में से छह सांसद पंजाब का प्रतिनिधित्व करते हैं। मुख्यमंत्री भगवंत मान के लिए यह स्थिति बेहद असहज है, क्योंकि राघव चड्ढा को कभी पंजाब सरकार का 'रिमोट कंट्रोल' कहा जाता था। मान और चड्ढा के बीच का शीतयुद्ध जगजाहिर था, लेकिन अब यह आमने-सामने की जंग में बदल चुका है। भाजपा ने इन चेहरों को अपने पाले में कर न केवल राज्यसभा में अपनी ताकत 148 तक पहुंचा दी है, बल्कि 2027 के पंजाब विधानसभा चुनाव के लिए भी एक मजबूत बिसात बिछा दी है। भाजपा, जो पंजाब में लंबे समय से एक मजबूत 'सिख चेहरे' और संगठन की तलाश में थी, उसे अब हरभजन सिंह, अशोक मित्तल और विक्रमजीत सिंह साहनी जैसे रसूखदार लोगों का साथ मिल गया है। यह 'मिशन पंजाब' की वो शुरुआत है जिसने अरविंद केजरीवाल के राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं को फिलहाल दिल्ली और पंजाब की सीमाओं में ही कैद कर दिया है।

संजय सिंह और अन्य 'आप' नेता इसे 'ऑपरेशन लोटस' और केंद्रीय एजेंसियों का डर बताकर जनता की सहानुभूति बटोरने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या केवल डर के दम पर इतने बड़े स्तर पर बगावत संभव है? अन्ना हजारे की उस टिप्पणी को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता जिसमें उन्होंने कहा कि जब स्वार्थ समाज और देश से ऊपर हो जाता है, तो संगठन टूट जाते हैं। यह केजरीवाल की उस कार्यशैली का भी परिणाम है जिसमें उन्होंने धीरे-धीरे उन सभी पुराने चेहरों को किनारे कर दिया जिन्होंने उनके साथ धूल फांकी थी। योगेंद्र यादव, प्रशांत भूषण, कुमार विश्वास और अब राघव-संदीप की यह फेहरिस्त बताती है कि पार्टी में असहमति के लिए कोई जगह नहीं बची है। स्वाति मालीवाल का यह आरोप कि उन्हें मुख्यमंत्री के घर पर पीटा गया और फिर उन्हें ही बदनाम करने की कोशिश की गई, पार्टी की नैतिक साख पर वो धब्बा है जो शायद ही कभी धुल पाए।

राज्यसभा सचिवालय में अब कानूनी लड़ाई शुरू होगी, सदस्यता रद्द करने की याचिकाएं डाली जाएंगी और मामला कोर्ट तक जाएगा। लेकिन राजनीति में जो धारणा (परसेप्शन) एक बार बन जाती है, उसे बदलना मुश्किल होता है। जनता के बीच अब यह संदेश जा चुका है कि जो पार्टी दूसरों को ईमानदारी का सर्टिफिकेट बांटती थी, उसके अपने घर में ही भारी अविश्वास का माहौल है। गुजरात निकाय चुनाव से ठीक पहले पार्टी के सोशल मीडिया पेजों का सस्पेंड होना और सांसदों का सामूहिक पलायन, 'आप' के लिए किसी 'परफेक्ट स्टॉर्म' जैसा है। केजरीवाल जो खुद को नरेंद्र मोदी के विकल्प के तौर पर पेश कर रहे थे, आज अपने सबसे भरोसेमंद सिपहसालारों को ही भाजपा के पाले में जाते हुए देखने को मजबूर हैं। यह पतन की शुरुआत है या फिर कोई नया सबक, यह तो वक्त तय करेगा, लेकिन फिलहाल इतना तय है कि 'झाड़ू' की तीलियां बिखर चुकी हैं और उन्हें समेटना अब केजरीवाल के बस की बात नहीं लग रही। भारतीय राजनीति का यह शुक्रवार 'आम आदमी पार्टी' के इतिहास में हमेशा एक ऐसे मोड़ के रूप में याद किया जाएगा, जहां से वापसी का रास्ता बहुत धुंधला नजर आता है।

एक गंभीर भूल के गंभीर परिणाम

वक्रोक्ति

भूपेन्द्र भारतीय
लेखक व्यंग्यकार हैं।

लचकलाल से पिछले दिनों एक गंभीर भूल हो गई। यह भूल कोई छोटी मोटी नहीं थी। बड़ी गंभीर व गंभीर परिणाम वाली हुई। अक्सर युवा अवस्था में युवाओं से गंभीर भूल हो जाती है लेकिन उसे प्रौढ़ व वृद्ध लोग क्षमा कर देते हैं। लेकिन लचकलाल तो अपने कार्यालय में समझदार व्यक्ति माने जाते है। उन्हें उनके बाकी साथी चतुर व सूझबूझ वाला समझते हैं। उस दिन ना जाने क्यों लचकलाल से एक बड़ी ही गंभीर भूल हो गई। लचकलाल भी उस दिन के बाद से आजतक पश्चाताप की अग्नि में झुलस रहा है। उन्हें उनके ही कार्यालय के कर्मचारी संदेह की दृष्टि से देखते रहते हैं। उस दिन के बाद से कार्यालय के बाकी लोग लचकलाल से एक उचित दूरी बनाने लगे हैं। 'जैसे उससे कोई वायरस चिपक गया हो।' इस भूल के कारण कार्यालय के किसी भी महत्वपूर्ण कार्य की सामान्य बातचीत भी बाकी लोग अब लचकलाल के सामने नहीं करते हैं। लचकलाल उस गंभीर भूल का कैसे प्रायश्चित करें उस कुछ समझ नहीं आ रहा है। इधर उसके घर में भी उसने उस गंभीर भूल की चर्चा गलती से अपनी घरवाली से कर दी। उसके घर से दो सप्ताह से बर्तनों की आवाज मानक ध्वनि प्रदूषण से ज्यादा होने लगी है। 'लचकलाल की घरवाली बात बात में उसे सुनाने लग जाती है कि क्या जरुरत थी उस दिन तुम्हें अपनी रीढ़ की हड्डी के साथ कार्यालय जाने की ? तुम्हारी एक भूल ने हमारा कितना बड़ा नुकसान कर दिया। बड़े आये रीढ़ की हड्डी वाले। अब हमारी ऊपर की इनकम कैसे होगी। सारे मँहगे सामान कैसे आयेंगे। बबलू को आपने जो बड़े स्कूल में पढ़ाने भेजा है उसकी फीस के बारे में थोड़ा भी सोचा था ? और आप चल दिये रीढ़ की हड्डी वाले मार्ग पर। बड़ा बनने का शौक आपको ही लगा था। गली की महिलाओं को मैं क्या बताओ कि आप ईमानदार बनने चले थे और कार्यालय के बाकी लोगों की नजरों से उतर गए। बड़े ईमानदार बनने चले थे ! एक दिन की तुम्हारी होशियारी ने कर दिया ना सारा कबाड़ा। बड़े आये रीढ़ की हड्डी के साथ कार्यालय जाने वाले। सब हमें शिकायती कहेंगे। कितनी बार बोला है कि जब तक नौकरी में हो अपनी रीढ़ की हड्डी को अलमारी में ही रखी रहने दो। जब सेवानिवृत्त हो जाओ तो फिर लगा लेना उस हड्डी को। पहले भी आपको एक बार अंतरात्मा की आवाज के आने का रोग लगा था। आखिर तालाब में रहकर मगरमच्छों से बैर लेने का आपमें साहस कहाँ से आया। आप इन दिनों किसी गलत संगति में तो नहीं पड़ गए है ! '

लचकलाल इधर घर से बाहर पाँव रखे नहीं कि उसे घरवाली के भयंकर ताने घेरने शुरू कर देते हैं। इधर इन दिनों पड़ोसी अलग व्यंग्य भरी हँसी से लचकलाल का अभिवादन करने लगे हैं। उधर कार्यालय के साथी अलग आतंकी नजरों से लचकलाल को घूरते हैं। उसे इस गंभीर भूल की भारी कीमत चुकानी पड़ रही हैं। उसने एक दिन के लिए अपनी रीढ़ की हड्डी के साथ कार्यालय जाने की गंभीर भूल जानबूझकर नहीं की थी। वह तो बस उस दिन जल्दी जल्दी में अलमारी से अपनी युवावस्था के समय का कोर्ट निकाल रहा था तो उसके साथ गलती से ना जाने कब रीढ़ की हड्डी भी आ गई। उस दिन कार्यालय पहुंचता तब तक उसे कुछ समझ नहीं आया कि आज उसके साथ रीढ़ की हड्डी भी है। बाकी दिनों की तरह वह रीढ़विहीन नहीं है ! वह तो उस दिन जैसे ही कार्यालय में कुछ पुरानी फाईलों पर दृष्टि गई। लचकलाल के हाथ उन फाईलों का जरूरी कार्य कर आगे बढ़ाने लगा। शुरू में उसे भी कुछ समझ नहीं आया। कई दिनों से लंबित कार्य एक बार में ही हो गया। कार्यालय के बाकी साथी अपनी चिरपरिचित रीढ़विहीन मुद्रा में बैठे थे। उनका लचकलाल की ओर दोपहर तक ध्यान ही नहीं गया। जब लचकलाल उस दिन दिनभर तक कार्य करता रहा तो शाम को बाकी लोगों का ध्यान उसकी ओर गया कि इसे आज क्या हो गया है यह बाकी दिनों की तरह घर जाने की जल्दी क्यों नहीं कर रहा है? टेबल पर से उठ ही नहीं रहा है ! कार्यालय के बाकी साथी देखते हैं कि आज लचकलाल ने अपनी टेबल की अधिकांश फाईलों को आगे बढ़ा दिया है। उसके सामने कोई भी नागरिक गिड़गिड़ा नहीं रहा है। लचकलाल को चाय पिलाने के लिए बाहर नहीं ले जा रहे हैं। वह उस दिन गंभीर होकर कार्य कर रहा था। उस दिन बीच बीच में लचकलाल भी थोड़ा आश्चर्य में रहा। उसे शाम को घर जाने पर पता चला कि वह आज अपने पुराने कोर्ट के साथ अपनी 'रीढ़ की हड्डी' भी साथ पहनकर कार्यालय चला गया था। उस रात उसे निंद नहीं आई। घरवाली बार बार पूछ रही थी कि आज आपको क्या हो गया ? आज आपने ठीक से टिफिन में से भी कुछ नहीं खाया और शाम का भोजन भी कम ही किया। लचकलाल क्या बोलता। उसे पता थाघरवाली उसकी इस गंभीर भूल पर पूरा घर अपने माथे पर उठा लेगी। उस रात उसे बार बार यही विचार आ रहे थे कि कल कार्यालय में क्या होगा? बाकी साथियों को इस गंभीर भूल का कारण क्या बताऊंगा। घरवाली को आज नहीं तो कल बताना ही पड़ेगा। लचकलाल को अपनी एक गंभीर भूल के परिणाम साफ दिख रहे थे। उसे इस गंभीर भूल के बाद लगा जैसे वह एक गिरोह का सदस्य है जिसमें एक दिन भी यदि व्यक्ति अपनी रीढ़ की हड्डी के साथ सार्वजनिक जीवन में कार्य करने जाता है तो उसके गंभीर परिणाम होते हैं। वर्तमान व्यवस्था में ऐसी गंभीर भूल उस व्यक्ति के जीवन में गंभीर परिणाम ला सकते हैं !

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

जवाहर चौधरी
लेखक व्यंग्यकार हैं।

जागरूकता के जागीरदार

सरल आदमी का राजनीतिबाज बनाने के लिए उसमें नफ़रत के मल्टी विटामिन का इंजेक्शन लगा देना काफ़ी होता है। आज हर दूसरा आदमी राजनीति का एक्सपर्ट है। इस वक्त देश राजनीति के कीड़ों से बजबजा रहा है। कोई आदमी शेष नहीं बचा होगा। मार्गदर्शन की जिम्मेदारी में लगे लोग इस प्रक्रिया को जागरूकता कहते हैं। उनका मलाल यह की अभी लोगों में जैसी चाहिए वैसी जागरूकता नहीं आई है। शिकायत यह है कि देश जनसंख्या, महंगाई, बेकारी, बेरोजगारी से नहीं जागरूकता की कमी से त्रस्त है। मजबूरन उन्हें शिविर वगैरह लगाकर जागरूकता बढ़ाना पड़ती है। एक बार कोई ठीक है जागरूक हो जाए तो उसे अपने घर घर-परिवार, यहां तक कि जीवन की परवाह भी नहीं होनी चाहिए। ऐसे सिद्ध जनों को जल्द ही जातू बना लिया जाता है। मोटामोटी यूं समझिए कि जातूजन कौम के रक्षक होते हैं। रक्षक वही हो सकता है जो कौम को प्रेम करे न करे, लाठी से अवश्य प्रेम करे। सिनेमा देख देख कर युवा वह प्रेम करने लगे हैं जो अश्लील है। लाठी से प्रेम में यही सबसे बड़ी बाधा है। इसे समझ लेना चाहिए कि दूसरी कौम से नफरत करना अपनी कौम से प्रेम करने की पहली शर्त है। दुनिया की हर कौम, हर धर्म, परोक्ष रूप से यही सिखाता है। अपना धर्म अपने विचार अपने लोग और दूसरों से नफरत यानी जागरूकता है।

आजकल दैनिक जीवन में जागरूकता इतनी हावी है कि अक्सर बाप-बेटे पति- पत्नी के बीच भी 'कूटनीति युक्त' संबंध देखे जा सकते हैं। अगर आप व्यावहारिक जीवन में सक्रिय हैं तो आपको इतनी राजनीतिक समझ होना चाहिए कि दूसरों को मूर्ख बना सकें, झूठ बोल सकें और अपने हित को जनहित सिद्ध कर सकें। जैसे यह भाई साहब हैं, इनका नाम है मकरंद रोजधुले। पक्के जागरूक हैं और जातू भी। कहते हैं कि राजनीति में इनकी जड़ें इतनी गहरी हैं कि आदमी कम 'जड़' अधिक लगते हैं। रोजधुले साहब की फिलॉसफी है कि नफरत एक तरह का प्रकाश है जिसे फैलाया जाना चाहिए और प्रेम जो है अंधेरे में किया जाना चाहिए। अपने हिस्से का प्रकाश वे व्हाट्सएप के जरिए फैलाते रहते हैं। मैनेजमेंट गुरु कहते हैं कि काम कैसा भी हो अगर उसे बाँट दिया जाए तो अपेक्षित सफलता मिल जाती है। हफ्ते में दस बीस प्रकाश युक्त मैसेज वे भेज देते हैं, जिसका सार होता है कि जागो-जागो यानी तुम जागो।

आज उनका फोन आया, बोले - कैसा लगा?

'अभी देखा नहीं।' मैंने टालना चाहा।

'परसों भेजा था वह देखा ?'

'हां वह देख लिया था।'

'कैसा था ?'

'आंख फाड़ जागरूकता वाला था।'

'कितने लोगों को फॉरवर्ड किया ?'

'फारवर्ड तो नहीं किया।'

'नहीं किया !! लगता है आप जागरूकता के मामले में एनीमिक हो ! इससे शंका होती है कि आप अपनी कौम को प्रेम नहीं करते हैं। क्यों नहीं तुम्हें राजद्रोही समझा जाए !'

'ऐसी बात नहीं है, मैं करता हूं कौम को प्रेम।'

'बिना जागरूकता के कौम से प्रेम करना कैसे संभव है?' इस बार आपत्ति लेते हुए और कुछ डपटते हुए वे बोले तो मुझे भी कहना पड़ा - 'आपकी यह बात समझ में नहीं आई भाई साहब ! आप खुद जब दूसरी कौम वालों के सामने पड़ते हैं तो खुशी जाहिर करते हैं, हाथ मिलाते हैं, गले भी मिल लेते हैं ! इसका क्या मतलब है ?'

'इसका मतलब है मैं मनुष्य से प्रेम करता हूं, इंसान में मैं ईश्वर देखता हूं।'

'और जागरूकता ? कौम से प्रेम ?'

'ठेके से ... ठेका समझते हो ना ? काम दूसरों से करवाओ तो बड़े पैमाने पर हो जाता है और अपना ही कहलाता है। काम मजदूर करते हैं लेकिन भवन तो बनवाने वाले का होता है। ये इनर व्हील की जागरूकता है।'

'अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस' पर विशेष

श्वेता गोयल

लेखक शिक्षक हैं।

शब्दहीन भावों से विश्व को जोड़ने वाली शक्ति है नृत्य

अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस मनाने की शुरुआत एक गैर सरकारी संगठन 'अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच संस्थान' (आईटीआई) की 'अंतर्राष्ट्रीय नृत्य समिति' द्वारा 1982 में की गई थी, जो 'यूनेस्को' का हिस्सा है। यह दिवस नृत्य के जादूगर माने जाने वाले जीन जॉर्जेस नोवेरे को समर्पित है। 'फादर ऑफ बैले' के नाम से विख्यात जीन जॉर्जेस नोवेरे एक सुप्रसिद्ध बैले मास्टर थे, जिनका जन्म 29 अप्रैल 1727 को हुआ था। पहली बार 1982 में आईटीआई की नृत्य समिति ने उनके जन्मदिन 29 अप्रैल को अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस मनाकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की थी, जिसके बाद से यह दिवसहर साल 29 अप्रैल को मनाया जाने लगा।

मानव सभ्यता की सबसे पुरानी अभिव्यक्तियों में से एक है 'नृत्य'। जब शब्द अस्तित्व में नहीं थे, तब शरीर की गति ही संवाद का माध्यम थी। समय के साथ नृत्य ने भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में अनेक रूप धारण किए और आज यह विश्वभर में एक जीवित कला के रूप में स्थापित है। नृत्य अब वैश्विक संदर्भ में केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहा बल्कि मानसिक स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक कूटनीति का प्रभावी साधन बन चुका है। नवीनतम 'विश्व नृत्य रिपोर्ट' के अनुसार, वैश्विक स्तर पर नृत्य उद्योग का आकार 45 अरब डॉलर से अधिक पहुंच गया है। वर्चुअल नृत्य कार्यक्रमों में वर्ष 2020 के मुकाबले 2025 तक 60 प्रतिशत से अधिक वृद्धि हुई है। नृत्य चिकित्सा को अब मानसिक स्वास्थ्य उपचारों में सम्मिलित किया जा रहा है।

अनेक देशों में चिकित्सक अवसाद, चिंता और सामाजिक अलगाव जैसी समस्याओं के उपचार में नृत्य आधारित विधियों का उपयोग किया जा रहा है। विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं ने भी नृत्य को शिक्षा के एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में स्वीकार किया है, जिससे बच्चों में आत्मविश्वास, अनुशासन और सृजनात्मकता का विकास होता है। नृत्य की विविधता, उसकी समावेशिता और उसके सामाजिक महत्व का उत्सव मनाने के लिए प्रत्येक वर्ष 29 अप्रैल को 'अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस' मनाया जाता है। यह दिवस नृत्य को एक साझा मानव धरोहर के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें भौगोलिक सीमाओं, जाति, धर्म, भाषा या राजनीतिक विचारधाराओं की कोई बाधा नहीं होती। इस अवसर पर करीब 170 देशों में एक साथ नृत्य महोत्सवों, कार्यशालाओं और सार्वजनिक प्रस्तुतियों का आयोजन किया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस मनाने की शुरुआत एक गैर सरकारी संगठन 'अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच संस्थान' (आईटीआई) की 'अंतर्राष्ट्रीय नृत्य समिति' द्वारा 1982 में की गई थी, जो 'यूनेस्को' का हिस्सा है। यह दिवस नृत्य के जादूगर माने जाने वाले जीन जॉर्जेस नोवेरे को समर्पित है। 'फादर ऑफ बैले' के नाम से विख्यात जीन जॉर्जेस नोवेरे एक सुप्रसिद्ध बैले मास्टर थे, जिनका जन्म 29 अप्रैल 1727 को हुआ था। पहली बार 1982 में आईटीआई की नृत्य समिति ने उनके जन्मदिन 29 अप्रैल को अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस मनाकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की थी, जिसके बाद से यह दिवसहर साल 29 अप्रैल को मनाया जाने लगा। जॉर्जेस नोवेरे ने नृत्य पर 'लेटर्स ऑन द डांस' नामक एक पुस्तक भी लिखी थी, जिसमें नृत्य से जुड़ी एक-एक चीज मौजूद हैं। इस पुस्तक के बारे में कहा जाता है कि इसे पढ़कर कोई भी नृत्य करना सीख सकता है।

नृत्य परंपरा की दृष्टि से भारत विश्व के सबसे समृद्ध देशों में से एक है। भारतीय नृत्य हजारों वर्षों से चली आ रही एक जीवंत और विकसित परंपरा है, जिसकी जड़ें वेदों, पुराणों, महाकाव्यों और शास्त्रों में गहराई से समाहित हैं। भारतीय नृत्य की विशिष्टता उसकी आध्यात्मिक गहराई, दार्शनिकता और सामाजिक प्रतिबद्धता में निहित है। भारतीय नृत्य केवल सौंदर्य प्रदर्शन नहीं बल्कि आध्यात्मिक साधना का माध्यम है। नाट्यशास्त्र, जो लगभग दो हजार वर्ष पूर्व रचित एक विश्वप्रसिद्ध ग्रंथ है, भारतीय नृत्य की बुनियादी संरचना और सिद्धांतों का आधार है। इस ग्रंथ में नृत्य, नाट्य और संगीत के तत्वों का अत्यंत वैज्ञानिक और विशद विवरण दिया गया है।

भारत में नृत्य की विविधता उसकी सांस्कृतिक विविधता की तरह अद्भुत है। प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक राज्य, यहां तक कि कई गांवों की भी अपनी विशिष्ट नृत्य परंपराएं हैं। भारत के शास्त्रीय नृत्य रूप जैसे भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी, कुचिपुड़ी, मोहिनीअट्टम, कथकली, मणिपुरी और सत्रिया, न केवल देश में बल्कि विदेशों में भी अपनी विशिष्ट पहचान बना चुके हैं। इन सभी शास्त्रीय नृत्य शैलियों में अंग संचालन, हस्तमुद्राएं, नेत्र भाव, पद संचालन और ताल की अत्यंत जटिल विधियां हैं, जिन्हें साधना द्वारा वर्षों में सिद्ध किया जाता है। भारतीय शास्त्रीय नृत्य का एक प्रमुख उद्देश्य जीवन के रहस्यों को भावों के माध्यम से व्यक्त करना है। इनमें नौ रसों का विशेष महत्व है, श्रृंगार, वीर, करुण, हास्य, रौद्र, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शांत। एक सिद्ध नर्तक या नर्तकी अपने अभिनय द्वारा दर्शकों को इन रसों की अनुभूति कराता है और उन्हें एक आत्मिक यात्रा पर ले जाता है।

भारतीय लोक नृत्य भी उतने ही समृद्ध और विविधतापूर्ण हैं। भारत के हर क्षेत्र में अनेक लोक नृत्य प्रचलित हैं, जो कृषि, ऋतु परिवर्तन, धार्मिक अनुष्ठानों और सामाजिक समारोहों से जुड़े हैं। भांगड़ा और गिद्धा (पंजाब), गरबा और डांडिया (गुजरात), लावणी (महाराष्ट्र), बिहू (असम), छऊ (झारखंड, ओडिशा, बंगाल), कठपुतली नृत्य (राजस्थान) जैसे लोकनृत्य न केवल उत्सव का अंग हैं बल्कि स्थानीय जीवन, मान्यताओं और संघर्षों के प्रतिबिंब भी हैं। लोक नृत्य सरलता, ऊर्जा और सामूहिकता का प्रतीक है, जो जनमानस की भावना को व्यक्त करता है। भारत में नृत्य का संबंध केवल सांस्कृतिक मनोरंजन तक सीमित नहीं रहा बल्कि यह धार्मिक अनुष्ठानों, सामाजिक आंदोलनों और शिक्षा के क्षेत्र में भी गहराई से जुड़ा रहा है। नृत्य भारतीय धार्मिक चेतना का अभिन्न अंग रहा है; शिव का नटराज स्वरूप नृत्य को ब्रह्मांडीय रचना, संरक्षण और संहार का प्रतीक बताता है। मंदिरों में देवदासी प्रथा के अंतर्गत देवताओं की सेवा में नृत्य प्रस्तुत किया जाता था। कई शास्त्रीय नृत्य विधाओं का मूल मंदिरों में ही रहा है, जैसे कि भरतनाट्यम तमिलनाडु के मंदिरों की देवदासी परंपरा से विकसित हुआ। कथकली और मोहिनीअट्टम केरल के मंदिरों में धार्मिक कथाओं के मंचन से जुड़े रहे हैं। समकालीन भारत में नृत्य के स्वरूपों में भी अनेक परिवर्तन आए हैं। अब भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैलियों को पश्चिमी समकालीन नृत्य शैलियों जैसे बैले, जैज, हिप-हॉप आदि के साथ फ्यूजन करते हुए नए प्रयोग हो रहे हैं। ये प्रयोग भारतीय नृत्य को नए दर्शक वर्गों तक पहुंचाते हैं और उसे आधुनिक संदर्भों के अनुरूप बनाते हैं। 'डांस इंडिया डांस', 'इंडियाज बेस्ट डांसर' और 'नृत्य रत्नाकर' जैसे नृत्य रियलिटी शोज ने भी नृत्य को घर-घर तक पहुंचाया है और नई पीढ़ी में नृत्य के प्रति रुचि को बढ़ाया है। भारतीय नर्तक और नृत्य संस्थाएं अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भी भारत की सांस्कृतिक छवि को सशक्त कर रहे हैं। नृत्य को राष्ट्रीय पहचान के रूप में सशक्त बनाने के लिए भारत सरकार ने भी विभिन्न पहल की हैं। 'राष्ट्रीय नृत्य महोत्सव', 'डांस एक्सपो इंडिया' जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से देशभर के कलाकारों को मंच प्रदान किया गया है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत नृत्य और संगीत को स्कूली शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया गया है, जिससे बच्चों में सांस्कृतिक संवेदनशीलता का विकास सुनिश्चित किया जा सके। भारतीय नृत्य की गहराई, विविधता और जीवंतता उसे विश्व कला परिदृश्य में अद्वितीय स्थान प्रदान करती है। नृत्य के माध्यम से भारत ने न केवल अपनी सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखा है बल्कि विश्व समुदाय के साथ एक सजीव संवाद भी स्थापित किया है। भारतीय नृत्य परंपरा समय के साथ बदलती रही है, परन्तु उसकी आत्मा सदैव स्थिर रही है, वह आत्मा जो रचनात्मकता, आध्यात्मिकता और सामाजिक एकता की वाहक है। नृत्य के माध्यम से भारत ने दुनिया को यह सिखाया है कि जब शब्द कम पड़ जाते हैं, तब शरीर, भाव और गति के माध्यम से भी प्रेम, करुणा और मानवता के भावों को व्यक्त किया जा सकता है।

आज जब दुनिया विभाजन, संघर्ष और असहिष्णुता के संकट से गुजर रही है, तब नृत्य एक ऐसा माध्यम बन सकता है, जो दिलों को जोड़ने, घावों को भरने और मानवता को एक सूत्र में पिरोने की क्षमता रखता है। भारतीय नृत्य, जिसमें प्रकृति, भक्ति, प्रेम, वीरता और करुणा के विविध आयाम समाहित हैं, वैश्विक मंच पर इस उम्मीद का प्रतीक बनकर उभर रहा है कि कला के माध्यम से हम एक बेहतर, अधिक सहिष्णु और सुंदर विश्व का निर्माण कर सकते हैं। नृत्य आत्मा से आत्मा तक एक अनुभव है, एक संवाद है, एक यात्रा है। भारत की नृत्य परंपरा इस यात्रा की एक अनंत धारा है, जो सदियों से बह रही है और भविष्य में भी मानवता को दिशा देती रहेगी।

अमेरिका-ईरान जंग

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

लेखक स्तंभकार हैं।

ना निगलते ना उगलने के हालात

भारत के खिलाफ 23-24 अप्रैल की हालिया टिप्पणी और उससे पलटने से यह साफ हो गया है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप किसी सनक या आवेग में बिना सोचे समझे टिप्पणी या निर्णय करते हैं और फिर उससे पलटने में देरी भी नहीं करने वाले आधुनिक युग के सबसे सनकी नेता बन गए हैं। ट्रंप ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म ट्रूथ सोशल पर रेडियो होस्ट की टिप्पणी भारत और चीन को हेलहोल यानी की नरक का द्वार को रीपोस्ट करके विवादों में आ गए और भारत के कड़े विरोध और अमेरिका में ही पक्ष-प्रतिपक्ष की प्रतिक्रियाओं और नस्लीय टिप्पणी देखते हुए भारत को महान और दोस्त देश बताने में कोई देरी नहीं की। पर एक बात साफ हो चुकी है कि इतिहास में तुगलकी निर्णयों की चर्चा को कई बार अतिवादी मान भी लिया जाए पर ट्रंप ने यह सिद्ध कर दिया है कि इतिहास में ट्रंप जैसे सनकी और आवेश में निर्णय लेने और फिर उनके परिणामों से समूचे विश्व को संकट में ड़ालने वाला संभवतः दूसरा कोई उदाहरण नहीं मिलेगा। हिटलर या मुसोलिनी जैसे तानाशाहों के उदाहरण दिए जाते हैं पर ट्रंप इन सबसे अलग, दुनिया के देशों को ड़राने, धमकाने, दादागिरी, गुंडागिर्दी और अपने ही निर्णयों से पलटने वाला राष्ट्राध्यक्ष संभवतः ढूंढने से भी नहीं मिलेगा। एक बात ट्रंप को समझ लेनी चाहिए कि केवल अमेरिका फर्स्ट के नारे से अधिक दिनों तक नहीं चला जा सकता। यही कारण है कि आज दुनिया के करीब करीब सभी देश ट्रंप से गले तक भर आये हैं। अमेरिकी-ईरान युद्ध के चलते आज दुनिया के सामने संकट का जो दौर आया है उससे अमेरिका भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। एक तरफ ईंधन का संकट आ रहा है तो तनाव के चलते व्यापार प्रभावित हो रहा है, आने वाले समय में खाद्यानों सहित दवा व अन्य आवश्यक वस्तुओं की कमी से भी दुनिया के देशों को दो-चार होना पड़ जाएगा। एक बात और ट्रंप की रणनीति समझ से परे इस मायने में भी हो जाती है कि अमेरिकी राष्ट्रपति ने एक साथ अनके मोर्चे खोल लिए हैं और इजरायल की बात छोड़ भी दी जाएं तो दुनिया का कोई देश आज ट्रंप की नीतियों, टिप्पणियों और गीदड़ धमकियों का पक्षधर नहीं हो सकता। ट्रंप को लेकर आज सबसे अधिक टिप्पणियां कभी पेपर टाइगर तो कभी सनकी, पलटीमार, कभी नो किंग्स, कभी ट्रंप आलवेज किचन आउट, कभी गलियों के गुंडा-मवाली जैसे शब्दों से सुशोभित किया जाने लगा है।

दरअसल आज ट्रंप पेपर टाइगर की भूमिका में होते हुए समूचे दुनिया को तनाव के दौर में धकेल दिया है। मजे की बात यह है कि करीब सवा साल के दूसरे कार्यकाल में अमेरिका और दुनिया के देशों में अपनी स्वीकार्यता के सबसे नीचले पायदान पर पहुंच चुके हैं। ईरान से टकराव के बाद केवल एक माह में ही स्वीकार्यता में दस प्रतिशत की गिरावट स्वयं सोचने को मजबूर कर देना चाहिए। इसी माह अप्रेल की ताजा रिपोर्टस की बात की जाए तो न्यूयार्क टाइम्स के अनुसार 39 प्रतिशत, रॉयटर के अनुसार 36 प्रतिशत और एपी के अनुसार 33 प्रतिशत वैश्विक स्वीकार्यता रह गई है। यदि अमेरिका की ही बात करें तो आर्थिक नीतियों के चलते असन्तोष मुखर होता जा रहा है। अधिकांश अमेरिकी ईरान संघर्ष को लेकर भी ट्रंप की निर्णय से संतुष्ट नहीं है। दरअसल ट्रंप की नीतियां अमेरिका सहित दुनिया के देशों में अस्थिरता और तनाव पैदा करने वाली है।

ईरान को तबाह करने की घोषणा और ईरान के विद्युत और ऑयल संयत्रों को नष्ट करने की धमकी और उसके बाद हार्मुज जलडमरुमध्य को लेकर धमकी और फिर सीज फायर की बात करना और ईरान द्वारा समझौते की टेबल पर सकारात्मकता नहीं होने की स्थिति में अमेरिका की लगातार हेटी हो रही है। वैसे देखा जाए तो रुस यूक्रेन युद्ध को हवा देने और फिर जेलेंस्की को धमकाने व जेलेंस्की की अमेरिका में ही ठेगा दिखाना अमेरिका के लिए कम शर्मनाक हालात नहीं रहे हैं। नाटों से हटने की धमकी, वेनेजुएला पर आक्रमण और वहां के राष्ट्राध्यक्ष के साथ व्यवहार, चीन के साथ व्यापार युद्ध, भारत को बार बार टैरिफ गीदड़ भभकी, कनाड़ा का अमेरिका का राज्य घोषित करने, ग्रीनलैण्ड हथियाने का प्रयास, गाजा पट्टी, क्यूबा आदि से संबंधित सभी भभकियां भभकियां ही साबित हुई है और इससे कहीं ना कहीं अमेरिका और ट्रंप की विश्वसनीयता में कमी ही आई है।

अब तो सवाल यह उठने लगा है कि पलटू राम की गीदड़ भभकियों का कुछ असर भी रहेगा या नहीं। क्योंकि आज के जमाने में छोटे से छोटे देष को भी हल्के में नहीं लिया ज सकता है। यह भी सही है कि आज यदि जंग छेड़ते हैं तो दो चार दिन में फैसला हो जाएगा यह सोचना ही गलत होगा। इसका ताजातरीन उदाहरण रुस यूक्रेन तो है ही अब ताजा उदाहरण अमेरिका-इजरायल और ईरान संघर्ष को देखा जा सकता है। इसलिए पाकिस्तान पर ऑपरेशन सिन्दुर या सर्जीकल स्ट्राइक जैसी प्रतिक्रिया ही सबक सिखाने में सफल हो सकती है। लंबी जंग लड़ने की स्थिति में दुनिया का कोई देश नहीं है। आज अमेरिका ईरान संघर्ष में ईरान से अधिक हानि अमेरिका को ही उठानी पड़ रही है और ट्रंप ऐन केन प्रकारेण जंग को रुकवाने व सीज फायर के प्रयास कर रहे हैं। पर ट्रंप को यह सोच लेना चाहिए कि डर या धमकियां से नतीजा नहीं निकलने वाला है। दूसरा ट्रंप के ट्रेक रिकार्ड को देखते हुए उनकी कही बात पर लंबे समय तक विश्वास भी नहीं किया जा सकता। इसलिए ट्रंप को पहले विश्वसनीयता बनाने के ठोस प्रयास करने होंगे। दुनिया के देशों को विश्वास में लेना होगा। नहीं तो दुनिया के हालात दिन प्रतिदिन गंभीर चिंताजनक ही होने हैं और इसके लिए ट्रंप को इतिहास माफ करने वाला नहीं होगा।

दृष्टिकोण

डॉ. मनीष जैसल

लेखक फिल्म अध्येता हैं।

सिने-माँ की बदलती पटकथा

यश चोपड़ा की ही फिल्म 'त्रिशूल' में वहीदा रहमान की चुप्पी ही सबसे बड़ा संवाद बन जाती है। अपमान और उपेक्षा की आग उसके भीतर नहीं, उसके बेटे की महत्वाकांक्षा में जलती है। यहाँ माँ प्रतिशोध नहीं लेती, लेकिन उसकी पीड़ा अगली पीढ़ी की लड़ाई बन जाती है। हिंदी फिल्मों में माँ का मौन अक्सर सबसे ऊँची आवाज होता है। समय बदला तो माँ की छवि भी बदल गई। 1990 के दशक में सिनेमा ने 'हिप मॉम' को जन्म दिया। अब माँ सफेद साड़ी में रोती हुई स्त्री नहीं रही बल्कि वह आधुनिक, समझदार और बच्चों की दोस्त बन गई। रीमा लागू इस बदलाव की सबसे सुंदर पहचान थीं। 'मैंने प्यार किया' में उनकी माँ घर की गर्माहट जैसी लगती है। वह बच्चों को डाँटने से पहले उन्हें समझती है। वह रिश्तों को नियमों से नहीं, विश्वास से देखती है। पहली बार दर्शकों ने महसूस किया कि माँ केवल त्याग की प्रतिमा नहीं, एक सहज और मुस्कुराती हुई उपस्थिति भी हो सकती है।

हिंदी सिनेमा की दुनिया में यदि कोई पात्र सबसे अधिक स्थायी, भावनात्मक और सबसे अधिक विश्वसनीय रहा है, तो वह 'माँ' है। हीरो बदलते रहे, प्रेम कहानियाँ बदलती रहीं, खलनायक नए चेहरे लेकर आते रहे, लेकिन माँ हर दौर में दर्शकों के दिल के सबसे करीब बनी रही। भारतीय फिल्मों में माँ केवल एक किरदार नहीं, बल्कि त्याग, संघर्ष, मर्यादा, और कई बार विद्रोह का भी एक विचार है।

पश्चिमी सिनेमा में माँ अक्सर निजी संबंधों तक सीमित रहती है, लेकिन हिंदी फिल्मों में वह पूरे परिवार की आत्मा होती है। वह रसोई से लेकर रिश्तों तक, आँसू से लेकर निर्णय तक, हर जगह मौजूद रहती है। वह बेटे को दुलार भी देती है और ज़रूरत पड़ने पर उसी बेटे के विरुद्ध खड़ी भी हो जाती है। यही भारतीय सिनेमा की माँ को अद्वितीय बनाता है।

इस छवि की सबसे बड़ी और सबसे विराट अभिव्यक्ति महबूब खान की 'मदर इंडिया' में दिखाई देती है। नर्गिस का वह चेहरा आज भी भारतीय सिनेमा की स्मृति में अंकित है। वह माँ जो अपने बेटे से प्रेम करती है, लेकिन समाज की मर्यादा को उससे ऊपर रखती है। जब बेटा अपराध और अन्याय की राह पर चला जाता है, तो वही माँ उसे गोली मार देती है। यह दृश्य केवल फिल्म का क्लाइमेक्स नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति का गहरा रूपक है, माँ का प्रेम अंधा नहीं होता, वह न्याय के सामने भी झुकता है।

बाद में यश चोपड़ा की फिल्म 'दीवार' में निरूपा रॉय ने इसी माँ के किरदार को एक नए रूप में जीवित किया। एक बेटा ईमानदार पुलिस अधिकारी, दूसरा अपराध की दुनिया का राजा, और बीच में माँ। वह अपराधी बेटे से प्रेम करती है, पर उसके रास्ते को स्वीकार नहीं करती। 'मेरे पास माँ है' जैसा संवाद इसलिए अमर हुआ क्योंकि वह केवल सिनेमा नहीं, भारतीय समाज की सबसे बड़ी भावनात्मक सच्चाई था।

मुकुल आनंद की 'अग्निपथ' में भी माँ अदालत से बड़ी संस्था बनकर सामने आती है। रोहिणी हट्टंगड़ी का चरित्र बेटे को बार-बार याद दिलाता है कि शक्ति का अर्थ हिंसा नहीं, बल्कि सही रास्ते पर लौटना है। हिंदी फिल्मों में माँ कई बार न्यायपालिका से भी अधिक कठोर दिखाई देती है। लेकिन हर माँ 'मदर इंडिया' नहीं होती। कई बार वह अकेली होती है, समाज से हारी हुई होती है, फिर भी अपने बच्चे के लिए पूरी दुनिया से लड़ती है।

शक्ति सामंत की फिल्म 'आराधना' में शर्मिला टैगोर का चरित्र इसका सबसे संवेदनशील उदाहरण है। प्रेम, सामाजिक तिरस्कार, जेल और अकेले मातृत्व का लंबा संघर्ष, वह अपने बेटे को बड़ा करते-करते खुद एक इतिहास बन जाती है। उसकी जिंदगी अपने लिए नहीं, बेटे के भविष्य के लिए लिखी जाती है। यह केवल एक फिल्म नहीं, उस समाज की तस्वीर है जहाँ स्त्री को उसकी परिस्थितियों से अधिक उसके निर्णयों के लिए कठघरे में खड़ा किया जाता है।

यश चोपड़ा की ही फिल्म 'त्रिशूल' में वहीदा रहमान की चुप्पी ही सबसे बड़ा संवाद बन जाती है। अपमान और उपेक्षा की आग उसके भीतर नहीं, उसके बेटे की महत्वाकांक्षा में जलती है। यहाँ माँ प्रतिशोध नहीं लेती, लेकिन उसकी पीड़ा अगली पीढ़ी की लड़ाई बन जाती है। हिंदी फिल्मों में माँ का मौन अक्सर सबसे ऊँची आवाज होता है।

समय बदला तो माँ की छवि भी बदल गई। 1990 के दशक में सिनेमा ने 'हिप मॉम' को जन्म दिया। अब माँ सफेद साड़ी में रोती हुई स्त्री नहीं रही बल्कि वह आधुनिक, समझदार और बच्चों की दोस्त बन गई। रीमा लागू इस बदलाव की सबसे सुंदर पहचान थीं। 'मैंने प्यार किया' में उनकी माँ घर की गर्माहट जैसी लगती है। वह बच्चों को डाँटने से पहले उन्हें समझती है। वह रिश्तों को नियमों से नहीं, विश्वास से देखती है। पहली बार दर्शकों ने महसूस किया कि माँ केवल त्याग की प्रतिमा नहीं, एक सहज और मुस्कुराती हुई उपस्थिति भी हो सकती है।

'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' में सिमरन और छुटकी की माँ के रूप में फरीदा जलाल बेटी की चुप्पी पढ़ लेती है। वह प्रेम को समझती है, परंपरा को भी जानती है और दोनों के बीच पुल बन जाती है। वह विद्रोह नहीं करती, लेकिन उसका मौन समर्थन पूरी कहानी बदल देता है।

इसके साथ ही सिनेमा ने माँ के अंधेरे पक्ष को भी दिखाया। 'मॉन्स्टर-इन-लॉ' यानी खलनायिका सास का चरित्र लंबे समय तक बेहद लोकप्रिय रहा।

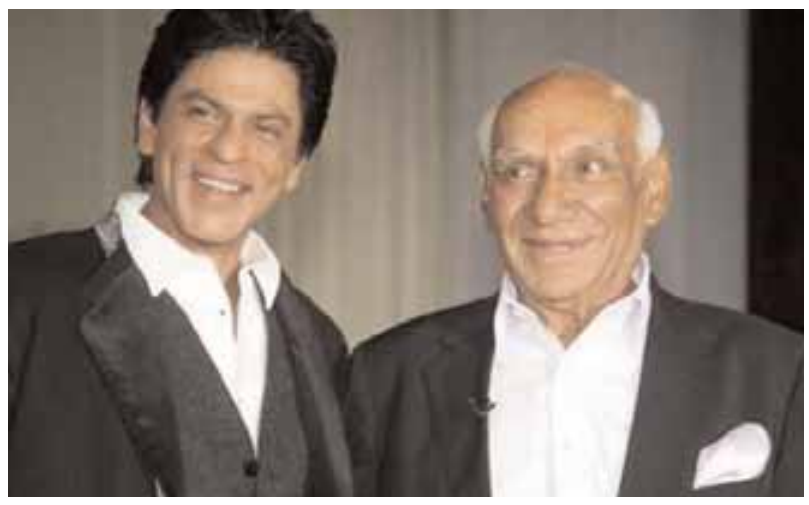

ललिता पवार और बिंदु ने इस छवि को अमर बना दिया। यह माँ प्यार से अधिक नियंत्रण चाहती है। उसकी राजनीति रसोई में चलती है, उसका युद्ध बहू के साथ होता है और उसकी जीत परिवार पर अधिकार में छिपी होती है।

'बीवी हो तो ऐसी' जैसी फिल्मों में यह चरित्र कभी डर पैदा करता है, कभी अनजाने में हास्य। लेकिन इसके भीतर भारतीय संयुक्त परिवार की वास्तविक जटिलता छिपी होती है। दिलचस्प बात यह है कि हिंदी सिनेमा ऐसी माँ को अंततः पूरी तरह खलनायिका नहीं रहने देता। उसे पश्चाताप करना ही पड़ता है, क्योंकि भारतीय समाज माँ को पूरी तरह नकारात्मक रूप में देख ही नहीं पाता।

एक और विचित्र परंपरा रही 'एजलेस मदर्स' की। कई अभिनेत्रियाँ अपने से कम उम्र के नायकों की माँ बनीं। शर्मिला टैगोर ने राजेश खन्ना की प्रेमिका भी निभाई और माँ भी। राखी ने अमिताभ बच्चन के साथ रोमांस भी किया और बाद में उनकी माँ भी बनीं। प्रीति जिंटा ने ऋतिक रोशन की प्रेमिका और फिर माँ दोनों की भूमिका निभाई। यह केवल कास्टिंग नहीं, बल्कि फिल्म उद्योग की लैंगिक राजनीति का दस्तावेज है। पुरुष नायक उम्र के साथ भी रोमांटिक बने रहते हैं, जबकि अभिनेत्री को जल्दी 'माँ' के किरदार के रूप में बना दिया जाता है। नायक की उम्र अनुभव कहलाती है, नायिका की उम्र सीमा।

2000 के बाद हिंदी सिनेमा की माँ ने एक और बड़ा बदलाव देखा। अब वह केवल त्याग और आँसू की प्रतिमा नहीं रही, बल्कि अपने निर्णय लेने वाली, अपनी असफलताओं से जूझने वाली और अपनी पहचान खोजने वाली स्त्री बन गई।

'कभी खुशी कभी ग़म' में जया बच्चन घर की आत्मा है, कम बोलती हैं, लेकिन उनका मौन पूरे परिवार का भावनात्मक तापमान तय करता है। 'कल हो ना हो' में वही माँ अकेलेपन और जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाती दिखाई देती है। 'बागबान' में हेमा मालिनी वृद्ध माँ की उस पीड़ा को सामने लाती हैं जहाँ संतानें माता-पिता को बोझ समझने लगती हैं।

'तारे ज़मीन पर' में टिस्का चोपड़ा आधुनिक शहरी माँ हैं, प्रेम है, लेकिन समझ अधूरी है। 'पा' में विद्या बालन अविवाहित माँ के रूप में समाज से अधिक अपने बच्चे के सम्मान के लिए लड़ती हैं। यहाँ मातृत्व सामाजिक परंपराओं से टकराता है। 'इंग्लिश विंग्लिश' में श्रीदेवी ने शायद हिंदी सिनेमा की सबसे मानवीय माँ को जन्म दिया। वह घर संभालती है, सबका ध्यान रखती है, लेकिन सम्मान से वंचित रहती है। अंग्रेज़ी सीखना उसके लिए भाषा नहीं, आत्मसम्मान की लड़ाई है। फिल्म 'बधाई हो' में नीना गुप्ता ने माँ की परिभाषा ही बदल दी। अधेड़ उम्र में गर्भवती होने वाली स्त्री सामाजिक शर्म, पारिवारिक असहजता और व्यक्तिगत गरिमा के बीच खड़ी है। यह चरित्र बताता है कि माँ होना उम्र का नहीं, अस्तित्व का प्रश्न है।

फिल्म 'मिसेज़ चटर्जी वर्सेज़ नॉर्वे' में रानी मुखर्जी की माँ व्यवस्था से लड़ती है। वह अपने बच्चों को वापस पाने के लिए पूरे तंत्र को चुनौती देती है। यहाँ माँ करुणा नहीं, प्रतिरोध की सबसे तीखी भाषा बन जाती है। आज की हिंदी फिल्मों में माँ अब केवल आँचल नहीं, व्यक्तित्व है। 'कपूर एंड संस' (2016) में रत्ना पाठक शाह की माँ आधुनिक शहरी परिवार की टूटन, तनाव और भावनात्मक दूरी के बीच खड़ी दिखाई देती है। वह परिवार को बचाना चाहती है, लेकिन स्वयं भी भीतर से टूटी हुई है।

'राज़ी' (2018) में सोनी राजदान का चरित्र कम संवादों में भी गहरी उपस्थिति दर्ज कराता है। वह अपनी बेटी को एक असाधारण और खतरनाक मिशन के लिए विदा करती है। यहाँ माँ सुरक्षा नहीं, साहस का प्रतीक बनती है। 'बधाई हो' (2018) में नीना गुप्ता ने मध्यमवर्गीय भारतीय माँ की छवि को बिल्कुल नए ढंग से प्रस्तुत किया। अधेड़ उम्र में गर्भवती होने वाली माँ सामाजिक शर्म, पारिवारिक असहजता और व्यक्तिगत गरिमा–तीनों से एक साथ जूझती है। यह चरित्र हिंदी सिनेमा में माँ की सबसे साहसी पुनर्परिभाषाओं में से एक है।

हाल के वर्षों में 'गंगूबाई काठियावाड़ी' (2022) जैसी फिल्मों ने मातृत्व को जैविक रिश्तों से आगे बढ़ाया। आलिया भट्ट का चरित्र वहाँ उन लड़कियों के लिए माँ जैसा बनता है, जिन्हें समाज ने त्याग दिया। वहीं 'जवान' (2023) में नयनतारा और दीपिका पादुकोण के माध्यम से माँ प्रतिशोध, न्याय और राजनीतिक चेतना का रूप लेती है।

दरअसल, भारतीय सिनेमा में माँ को इसलिए नहीं याद रखा जाता क्योंकि वह भावुक पात्र है, बल्कि इसलिए क्योंकि वह समाज की सामूहिक स्मृति है। उसके माध्यम से सिनेमा परिवार, नैतिकता, पीढ़ियों का संघर्ष और बदलते समय की कहानी कहता है।

2025 तक आते-आते हिंदी सिनेमा की माँ पूरी तरह बदल चुकी है। वह अब केवल 'माँ' नहीं, एक संपूर्ण मनुष्य है, जिसकी अपनी इच्छाएँ, असफलताएँ, महत्वाकांक्षाएँ और संघर्ष हैं। वह कभी जया बच्चन की चुप्पी है, कभी श्रीदेवी का आत्मसम्मान, कभी नीना गुप्ता का साहस और कभी रानी मुखर्जी का विद्रोह। भारतीय सिनेमा ने यह स्वीकार करना शुरू किया है कि माँ को महान बनाने के लिए उसे दुखी दिखाना जरूरी नहीं; उसे मनुष्य की तरह समझना अधिक आवश्यक है।

शायद इसलिए हिंदी सिनेमा में सबसे स्थायी चेहरा किसी सुपरस्टार का नहीं, माँ का है। हीरो आते-जाते रहते हैं, लेकिन माँ हर दौर में लौटती है कभी आँचल बनकर, कभी प्रतिरोध बनकर, कभी आधुनिकता बनकर और कभी मौन बनकर।

शहर का कलेक्टर ने किया सघन भ्रमण

● प्रमुख चौकों के सौंदर्यीकरण और चौड़ीकरण के प्रस्ताव तैयार करने के दिए निर्देश

बैतूल। कलेक्टर डॉ सौरभ संजय सोनवणे ने आज सुबह बैतूल नगर का सघन भ्रमण कर विभिन्न चौक-चौराहों एवं प्रगतिरत कार्यों का निरीक्षण करते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर डॉ सोनवणे ने कॉलेज चौक, शिवाजी चौक, लक्ष्मी चौक और न्यू बैतूल स्कूल चौक का जायजा लिया। उन्होंने कॉलेज चौक के चौड़ीकरण कार्य करने तथा यह सुनिश्चित करने को कहा कि स्कूल एवं कॉलेज के विद्यार्थियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए निर्माण कार्य के दौरान यातायात नियमों का कड़ाई से पालन हो, ताकि किसी भी प्रकार की दुर्घटना की संभावना न रहे। कलेक्टर डॉ सोनवणे ने शिवाजी चौक एवं लक्ष्मी चौक के सौंदर्यीकरण के लिए बड़े शहरों की तर्ज पर प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश नगरपालिका को दिए। साथ ही लक्ष्मी चौक स्थित रोटरी को व्यवस्थित करने के निर्देश भी दिए। इसके बाद उन्होंने न्यू बैतूल स्कूल के पास प्रस्तावित गीता भवन के लिए चिन्हित स्थल का भी अवलोकन किया और वहां पार्किंग की व्यवस्थित प्लानिंग के निर्देश दिए। स्वच्छता सर्वेक्षण की तैयारियों के अंतर्गत उन्होंने ट्रेंचिंग ग्राउंड का निरीक्षण कर इसकी शीघ्र शिफ्टिंग एवं एक्शन प्लान तैयार करने के निर्देश मुख्य नगरपालिका अधिकारी को दिए।

जामठी में फायर स्टेशन और आईएसबीटी की तैयारी, कलेक्टर ने किया स्थल निरीक्षण – कलेक्टर डॉ सोनवणे ने ग्राम जामठी में प्रस्तावित फायर स्टेशन एवं आईएसबीटी स्थल का भी निरीक्षण किया और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। साथ ही एचएमटी फैक्ट्री पहुंचकर आगामी कार्ययोजना के संबंध में उद्योग विभाग से विस्तृत जानकारी ली। निरीक्षण के दौरान एसडीएम डॉ अभिजीत सिंह, सीएमओ नगरपालिका बैतूल नवनीत पांडे एवं उद्योग विभाग के धीरज मंडलेकर सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

पेयजल समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित करें : कलेक्टर डॉ. सोनवणे

● पेयजल समस्या के निराकरण में लापरवाही पर कार्यवाही के निर्देश

बैतूल। कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में पेयजल संबंधी समस्याओं के निराकरण एवं जल निगम की स्वीकृत परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा बैठक ली। बैठक के दौरान बैतूल ब्लॉक के ग्रामों में पेयजल समस्या के निराकरण में लापरवाही सामने आने पर कलेक्टर ने बैतूल जनपद सीईओ और पीएचई एसडीओ को शोकाज नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर डॉ.सोनवणे ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि गर्मी के मौसम में पेयजल संकट को प्राथमिकता से लेते हुए हर शिकायत का त्वरित समाधान सुनिश्चित किया जाए। कलेक्टर ने सभी जनपद सीईओ से ग्रामीण क्षेत्रों में जल स्रोतों की स्थिति, खराब नलकूपों और नल-जल योजनाओं की जानकारी ली। कलेक्टर ने कहा कि किसी भी गांव या शहरी क्षेत्र में पानी की कमी की स्थिति बनने न पाए। जहां समस्या है, वहां तत्काल हैंडपंप सुधार और पाइपलाइन की मरम्मत कर लोगों को राहत दी जाए। उन्होंने निर्देशित किया कि पेयजल आपूर्ति में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। बैठक में जल निगम की गढ़ा, वर्धा, मेंढा और घोघरी परियोजनाओं की भी समीक्षा की गई। कलेक्टर ने ठेका कंपनियों को कार्य में तेजी लाने, अतिरिक्त टीमें लगाने और निर्धारित समय सीमा में प्रोजेक्ट पूर्ण करने के निर्देश दिए। साथ ही संबंधित अधिकारियों को प्रोजेक्ट मॉनिटरिंग ग्रुप बनाकर नियमित निरीक्षण सुनिश्चित करने को कहा।

कलेक्टर ने निर्देश दिए कि फील्ड स्तर के कर्मचारी नियमित मॉनिटरिंग करें और समस्याओं की जानकारी तुरंत वरिष्ठ अधिकारियों तक पहुंचाएं। उन्होंने यह भी कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष निगरानी रखी जाए और जहां आवश्यकता हो, वहां अतिरिक्त संसाधन उपलब्ध कराए जाएं, ताकि आम लोगों को किसी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े।

प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन योजना में पंजीयन करायें और प्रतिमाह 3000 रुपए की पेंशन का लाभ पाएं

बैतूल। भारत सरकार द्वारा संचालित प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन योजनांतर्गत 18 वर्ष से 40 वर्ष की आयु वर्ग के असंगठित क्षेत्र के श्रमिक जिनकी मासिक आय रू. 15000 से कम है, वे इस योजना में पंजीयन करा सकते है। पंजीकृत व्यक्ति के खाते से आयु के अनुसार प्रतिमाह रू. 55 से 200 का अंशदान स्वतः जमा होगा, उतनी ही राशि शासन द्वारा भी जमा कराई जाएगी। 60 वर्ष की उम्र के पश्चात पंजीकृत लाभार्थी को रू. 3000 प्रतिमाह की ग्यारंटीशुदा पेंशन प्राप्त होगी। लाभार्थी की मृत्यु उपरांत जीवनसाथी को रू. 1500 प्रतिमाह की पेंशन प्राप्त होगी। इस संबंध में जिला श्रम पदाधिकारी द्वारा कर्बला ब्रिज पर कार्यरत श्रमिकों के समक्ष जाकर उक्त योजना के संबंध में जानकारी सभी श्रमिकों को प्रदाय की गई एवं उन्हें ये बताया गया कि योजना के अंतर्गत पंजीयन करने हेतु अपना आधार कार्ड, बैंक पासबुक/चेकबुक एवं मोबाईल नम्बर लेकर नजदीकी कॉमन सर्विस सेन्टर (सी.एस.सी.), एमपी ऑनलाइन पर जाकर करने हेतु प्रेरित किया गया । इसके अतिरिक्त श्रम पदाधिकारी द्वारा यह जानकारी भी दी गई कि जिले में कार्यरत श्रमिक अपना पंजीयन स्वयं भी पंजीयन कर सकते है।

गर्मी बढ़ने से बिजली की खपत बढ़ी, पंखे-कूलर की बिक्री में भी वृद्धि

● 49.75 लाख यूनिट पहुंची जिले में बिजली की रोजाना खपत

बैतूल। तपता मौसम सिर्फ पारे के उछाल का रिकॉर्ड नहीं बना रहा, बल्कि बिजली की खपत और मांग का भी नया रिकॉर्ड बन रहा है। इस वर्ष अप्रैल में ही बिजली की मांग 50 लाख यूनिट से ऊपर पहुंच गई है, जबकि बीते वर्ष तक इतनी खपत मई माह में दर्ज होती थी। विद्युत वितरण कंपनी के ताजा आंकड़ों के अनुसार जिले में इन दिनों बिजली की खपत लगातार बढ़ते जा रही है। जिलेभर में बिजली कंपनी प्रतिदिन 40 लाख यूनिट से अधिक बिजली आपूर्ति कर रही है। बीते एक सप्ताह में कुल 332 लाख यूनिट की खपत हो चुकी है। बिजली कंपनी के अधिकारियों की माने तो तेजी से शहरीकरण बढ़ रहा है। नए घरेलू और व्यावसायिक कनेक्शन में बढ़ोत्तरी देखी जा रही है। गर्मियों के दौरान शीतलता के लिए घरों में कूलर, एसी जैसे उपकरणों का प्रयोग हो रहा है। इन सब कारणों से बिजली की मांग बढ़ रही है। मई-जून में मांग शीर्ष पर पहुंचती है। ऐसे में आसार है कि तापमान बढ़ने से आने वाले दिनों में शहर की कुल बिजली मांग और बढ़ेगी।

लगातार बढ़ रही बिजली की खपत – जैसे-जैसे तापमान में उछाल आ रहा है, वैसे-वैसे बिजली की मांग और खपत में भी बढ़ोत्तरी देखी जा रही है। एक सप्ताह पहले 20 अप्रैल को जहां जिले में बिजली की खपत 43.15 लाख यूनिट थी, वहीं अब खपत बढ़कर 49.75 लाख यूनिट पहुंच गई है। अधिकारियों की माने तो जैसे-जैसे गर्मी बढ़ रही है, घरों में पंखे-कूलर और एसी का उपयोग बढ़ गया है। इसके अलावा अधिकांश लोग बिजली के उपकरणों का उपयोग कर खाना पकाते है। जिससे भी बिजली की खपत में बढ़ोत्तरी हुई है। अधिकारियों का कहना है कि जैसे-जैसे तापमान में बढ़ोत्तरी होती है, बिजली की खपत भी बढ़ती है।

एक सप्ताह में यह रही बिजली की खपत – जिले में बिजली की खपत लगातार बढ़ रही है। बिजली विभाग से मिले आंकड़ों पर नजर डाली जाये तो 20 अप्रैल को जिले में बिजली की खपत 43.15 लाख यूनिट थी, जो 21 अप्रैल को बढ़कर 45.3 लाख यूनिट हो गई। इसी तरह 22 अप्रैल को 47.69 लाख यूनिट, 23 अप्रैल को 48.02 लाख यूनिट, 24 अप्रैल को 49.24 लाख यूनिट, 25 अप्रैल को 48.85 लाख यूनिट और 26 अप्रैल को 49.75 लाख यूनिट की खपत रही।

42 डिग्री चल रहा जिले का अधिकतम तापमान – जिले में गर्मी का प्रकोप लगातार बढ़ रहा है। सोमवार को अधिकतम तापमान 42.0 डिग्री दर्ज किया गया। जबकि रविवार को सीजन का सबसे गर्म दिन रहा। रविवार अधिकतम तापमान 43.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। हालांकि मंगलवार को अधिकतम तापमान में 41 दर्ज किया गया। तापमान में इस अचानक उछाल के कारण लोगों को तेज लू और झुलसा देने वाली गर्मी का सामना करना पड़ रहा है। तापमान के लगातार 40 डिग्री से ऊपर होना, यह संकेत दे रहा है कि गर्मी अब और अधिक तीव्र हो रही है। दोपहर के समय सडक़ों पर आवाजाही काफी कम देखी जा रही है। लोग केवल आवश्यक कार्यों के लिए ही घरों से बाहर निकले।

गर्मी बढ़ने से कम बिजली वाले पंखों की मांग बढ़ी – बढ़ती गर्मी और पारे के बीच पंखों और कूलरों की बिक्री में तेजी आई है। मार्च की तुलना में अप्रैल में इनकी बिक्री में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। हालांकि, उपभोक्ता अब कम बिजली खपत वाले सीलिंग और टेबल फैन को प्राथमिकता दे रहे हैं, ताकि गर्मी से राहत के साथ-साथ बिजली का खर्च भी नियंत्रित रहे। स्थानीय कारोबारियों के अनुसार, गर्मी बढ़ने के साथ ही पंखे, कूलर, एसी और फ्रिज जैसे उपकरणों की मांग बढ़ी है। लेकिन सबसे ज्यादा मांग उन उत्पादों की है जो कम बिजली का उपयोग करते हैं। यह प्रवृत्ति बढ़ती बिजली दरों के बीच उपभोक्ताओं की बचत की इच्छा को दर्शाती है।

इनका कहना है –

गर्मी बढने के कारण बिजली की खपत में दिनोंदिना बढ़ोत्तरी हो रही है। इसका कारण यह है कि गर्मी की वजह से लोग पंखे-कूलर और एसी फुल स्पीड में चलते है। जिससे खतप अधिक होती है। इसके अलावा फ्रीज और कुछ लोग खाना पकाने के लिए बिजली के उपकरणों का उपयोग करते है। जिससे भी खपत बढ़ती है।

– बीएस बघेल, महाप्रबंधक, बैतूल वृत, विद्युत वितरण कंपनी

बिजली कंपनी ने बिना अनुमति बनाया भवन, नगर परिषद ने थमाया नोटिस

● 7 दिन में मांगा जवाब, अनुज्ञा नहीं होने पर भवन ढहाने की चेतावनी; खर्च भी वसूला जाएगा

बैतूलबाजार। नगर परिषद बैतूल बाजार ने अवैध निर्माण पर सख्ती दिखाते हुए मप्र. मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड के बैतूलबाजार विद्युत वितरण केंद्र के सहायक अभियंता को नोटिस जारी किया है। यह नोटिस वार्ड क्र. एक शिवाजी वार्ड में मोक्षधाम मार्ग के किनारे किए गए भवन निर्माण को लेकर दिया गया है, जहां बिना नगर परिषद की अनुमति के निर्माण किए जाने की बात सामने आई है।

नगर परिषद के अनुसार संबंधित निर्माण के लिए किसी प्रकार की भवन निर्माण अनुज्ञा नहीं ली गई है, जो कि मप्र. नगर पालिका अधिनियम 1961 की धारा 187 का स्पष्ट उल्लंघन है। इस संबंध में मुख्य नगर पालिका अधिकारी द्वारा जारी नोटिस में 7 दिवस के भीतर जवाब प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए हैं। नोटिस में स्पष्ट कहा गया है कि यदि संबंधित विभाग ने निर्माण की वैध अनुमति ली है, तो उसकी प्रमाणित प्रति के साथ नगर परिषद में उपस्थित होकर जानकारी प्रस्तुत करें। अन्यथा, बिना अनुमति किए गए निर्माण को हटाने या ढहाने की कार्रवाई की जाएगी। इसके साथ ही नगर परिषद ने यह भी स्पष्ट किया है कि यदि अवैध निर्माण हटाने की कार्रवाई की जाती है, तो उसमें लगने वाले मानव संसाधन और मशीनरी का पूरा खर्च संबंधित विभाग से राजस्व की भांति वसूला जाएगा। नगर परिषद के इस कदम को शहर में अवैध निर्माण पर अंकुश लगाने की दिशा में एक सख्त कार्रवाई माना जा रहा है। प्रशासन ने संकेत दिए हैं कि बिना अनुमति निर्माण करने वालों के खिलाफ आगे भी इसी तरह की कार्रवाई जारी रहेगी।

एक्शन मोड में नपाध्यक्ष नीतू परमार

पेयजल और स्वच्छता व्यवस्था सुधारने सुबह 6 बजे किया निरीक्षण

ताप्ती परिक्रमा मार्ग से हरदौली फिल्टर प्लांट तक लिया जायजा, अधिकारियों को दिए सख्त निर्देश

बैतूल। मुलताई नगरपालिका अध्यक्ष का पद संभालते ही नीतू परमार पूरी तरह एक्शन मोड में नजर आ रही हैं। शहर में बेहतर पेयजल व्यवस्था और साफ-सफाई सुनिश्चित करने के उद्देश्य से उन्होंने जमीनी स्तर पर तेजी से काम शुरू कर दिया है। इसी कड़ी में मंगलवार सुबह करीब 6 बजे नपाध्यक्ष ने नगर के विभिन्न क्षेत्रों का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया और अधिकारियों-कर्मचारियों को आवश्यक निर्देश दिए। नपाध्यक्ष नीतू परमार ने उपाध्यक्ष शिवकुमार माहोरे, नगर कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष सुमित शिवहरे और कांग्रेस नेता प्रहलाद सिंह परमार के साथ ताप्ती परिक्रमा मार्ग का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने साफ-सफाई व्यवस्था का बारीकी से जायजा लेते हुए सफाई कर्मियों को निर्देश दिए कि मार्ग को नियमित रूप से स्वच्छ रखा जाए, ताकि आम नागरिकों और श्रद्धालुओं को स्वच्छ वातावरण मिल सके। निरीक्षण के दौरान नपाध्यक्ष ने ताप्ती सरोवर के जलमार्गों में जमा गंदगी और खरपतवार पर चिंता जताई। उन्होंने संबंधित विभाग को निर्देशित किया कि जल्द से जल्द सफाई अभियान चलाकर जलमार्गों को साफ किया जाए, जिससे बरसात के दौरान स्वच्छ पानी सरोवर में पहुंचे और जल की गुणवत्ता बेहतर बनी रहे।

हरदौली फिल्टर प्लांट पहुंचकर परखी जल आपूर्ति व्यवस्था – परिक्रमा मार्ग के निरीक्षण के बाद नपाध्यक्ष हरदौली स्थित फिल्टर प्लांट पहुंचीं, जहां उन्होंने अधिकारियों

के साथ चर्चा कर पेयजल आपूर्ति व्यवस्था को दुरुस्त करने के निर्देश दिए। इस दौरान उपयंत्री योगेश अनेराव ने बताया कि 2 लाख लीटर क्षमता का नया सम्पवेल तैयार हो चुका है, जिससे जल संग्रहण क्षमता में वृद्धि होगी और जल्द ही इसका उपयोग आपूर्ति सुधारने में किया जाएगा। नपाध्यक्ष ने मुख्य नगरपालिका अधिकारी (सीएमओ) को निर्देश दिए कि फिल्टर प्लांट पर पानी की गुणवत्ता की नियमित जांच सुनिश्चित करने के लिए शीघ्र लैब टेक्नीशियन की नियुक्ति की जाए। उन्होंने कहा कि नागरिकों को शुद्ध और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराना प्राथमिकता होनी चाहिए।

शहरी फीडर से जुड़ेगा फिल्टर प्लांट, दूर होगी बिजली समस्या – हरदौली फिल्टर प्लांट वर्तमान में ग्रामीण फीडर से जुड़ा होने के कारण लो वोल्टेज और बार-बार बिजली बाधित होने की समस्या से जूझ रहा है, जिससे जल आपूर्ति प्रभावित होती है। उपयंत्री योगेश अनेराव ने जानकारी दी कि इस समस्या के समाधान के लिए फिल्टर प्लांट को शहरी फीडर से जोडऩे की योजना बनाई गई है और इसका टेंडर भी जारी किया जा चुका है। नपाध्यक्ष ने इस कार्य को प्राथमिकता से पूर्ण करने के निर्देश दिए हैं। नपाध्यक्ष नीतू परमार की सक्रियता से स्पष्ट है कि नगर में पेयजल आपूर्ति और स्वच्छता व्यवस्था को लेकर ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। आने वाले समय में इन प्रयासों का सीधा लाभ नागरिकों को बेहतर सुविधाओं और स्वच्छ वातावरण के रूप में मिलेगा।

इनका कहना है – कुंड, मठ और मंदिरों की सफाई को लेकर किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। नगर पालिका लगातार मॉनिटरिंग करेगी और गंदगी पाए जाने पर दोषी कर्मचारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

– वीरेंद्र तिवारी, सीएमओ, नगरपालिका मुलताई

जल संकट में फंसा शहर कर्मचारियों की छुट्टियां रद्द

वेतन के लिए कर्मचारियों ने अध्यक्ष को सौंपा ज्ञापन

आमला। शहर में नगर पालिका की अदूरदर्शिता और पूर्व में तैयारी की कमी ने समूचे शहर को अभूतपूर्व जल संकट के हालात में फंसा दिया है। हालांकि गर्मियों में पेयजल को लेकर हालत आम दिनों की तरह तो नहीं रहते हैं, किंतु शहर में जिम्मेदारों की लापरवाही ने इस बार पूरे शहर को एक अभूतपूर्व जल संकट में फंसा कर मुश्किलें जरूर खड़ी कर दी है। हालत बिगड़ते देखकर अब नगर पालिका अधिकारी ने जल शाखा के सभी कर्मचारियों की छुट्टियां भी रद्द कर दी है। फिलहाल तो पूरे शहर में दो दिन के अंतराल से पेयजल आपूर्ति की जा रही है, किंतु जैसा कि हमारे पास जानकारी है कि आगामी भीषण गर्मी को देखते हुए और नगर पालिका में पेयजल को लेकर की गई आधी अधूरी तैयारी से शहर में पेयजल आपूर्ति को लेकर मुश्किलें खड़ी हो सकती है। दरअसल जैसा कि हमारे पास जानकारी है की शासन द्वारा कुछ वर्षों पहले करोड़ों रुपए की लागत से लालावाड़ी जलाशय बनाया गया था, जो अब पूरी तरह सूख चुका है। ऐसे में अब नगर पालिका केवल अपने चंद जल स्रोतों के भरोसे रह गई है, इलाके में गिरते लगातार भूजल स्तर और नपा की तैयारी में कमी के चलते शहर में जल संकट के हालात और ज्यादा बिगड़ सकते हैं।

कर्मचारियों के वेतन के भी लाल– इधर नगर पालिका में सफाई शाखा के दर्जनों कर्मचारियों ने मंगलवार को नगर पालिका अध्यक्ष को ज्ञापन देकर वेतन देने की मांग की है। बताया गया है कि बीते तीन महीनो से नपा कर्मियों को वेतन नहीं दिया गया है।ऐसे में कर्मचारियों को आर्थिक तंगी से जूझना पड़ रहा है, कर्मचारियों ने नपा अध्यक्ष को ज्ञापन देकर वेतन संबंधी अनियमितता दूर करने की मांग की है, इस मौके पर बड़ी संख्या में सफाई कर्मचारी उपस्थित थे।

जनसुनवाई में दिव्यांग योगेश को मिली ट्राईसाइकिल, पट्टा समस्या के निराकरण के दिए निर्देश

जनसुनवाई में प्राप्त आवेदनों का कलेक्टर डॉ. सोनवणे ने किया निराकरण

» कलेक्टर डॉ. सोनवणे ने जनसुनवाई में सुनीं नागरिकों की समस्याएं «

बैतूल। कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में प्रातः 11 बजे से आयोजित जनसुनवाई में नागरिकों की समस्याएं ध्यान पूर्वक सुनीं। जनसुनवाई के दौरान राजस्व, भूमि विवाद, पेंशन, आवास, बिजली, पानी सहित अन्य विभागों से जुड़ी शिकायतें प्राप्त हुई। इस दौरान कलेक्टर डॉ. सोनवणे ने कई प्रकरणों में संबंधित अधिकारियों से चर्चा कर मौके पर ही निराकरण कराया, वहीं शेष मामलों में समय-सीमा तय करते हुए अधिकारियों को शीघ्र समाधान के निर्देश दिए। आमला तहसील निवासी श्रीमती सुनीता बिंझाड़े ने जनसुनवाई में मकान निर्माण के लिए भूमि उपलब्ध कराने के लिए आवेदन प्रस्तुत किया। आवेदिका ने बताया कि उनके दो छोटे बच्चे हैं, जो दिव्यांग हैं, जिससे उन्हें काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। मामले को गंभीरता से लेते हुए कलेक्टर ने संवेदनशीलता दिखाते हुए तत्काल सामाजिक न्याय विभाग को बच्चे के लिए ट्राईसाइकिल उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। जिसके पश्चात दिव्यांग योगेश को ट्राइसिकल उपलब्ध कराएं गए। साथ ही आमला एसडीएम को प्रकरण की जांच कर शीघ्र पट्टा संबंधी समस्या के निराकरण के निर्देश भी दिए गए। इस दौरान कलेक्टर डॉ सोनवणे ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जनसुनवाई में प्राप्त आवेदनों का त्वरित निराकरण सुनिश्चित करें, ताकि आम नागरिकों को अपनी समस्याओं के समाधान के लिए जनसुनवाई में दोबारा न आना पड़े। उन्होंने सख्त निर्देशित किया कि आवेदनों के निराकरण में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इस दौरान अपर कलेक्टर श्रीमती वंदना जाट ने भी नागरिकों की समस्याएं सुनी। इस अवसर पर सभी विभागीय अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित रहे।

निर्माण कार्यों की जांच किए जाने के निर्देश – जनसुनवाई में जनपद पंचायत प्रभात पट्टन की ग्राम पंचायत साइखेड़ा खुर्द में निर्माण कार्यों की जांच किए जाने के लिए ग्रामीणों ने आवेदन दिया। जिस पर कलेक्टर ने सीईओ जनपद प्रभात पट्टन को प्रकरण की जांच कर शीघ्र निराकरण के निर्देश दिए। मुलताई तहसील निवासी नकुल मौजी ने अनावेदक द्वारा रास्ते से आवागमन नहीं किए जाने देने की शिकायत की। प्राप्त आवेदन पर कलेक्टर डॉ सोनवणे ने प्रभात पट्टन तहसीलदार को आवेदक की समस्या के निराकरण के निर्देश दिए।

नक्शा दुरुस्ती के दिए निर्देश – जनसुनवाई में मुलताई निवासी विजय हजारे ने आवेदन के माध्यम से नक्शा दुरुस्ती नहीं होने की समस्या बताई, जिस पर कलेक्टर ने तहसीलदार मुलताई को आवेदक की समस्या का शीघ्र समाधान करने के निर्देश दिए। इसी प्रकार भैंसदेही निवासी आशुतोष मालवीय ने आवेदन के माध्यम से नक्शा सुधार नहीं होने की शिकायत की। प्राप्त आवेदन पर कलेक्टर ने 2 सप्ताह के अंदर प्रकरण का समुचित निराकरण करने के निर्देश एसडीएम भैंसदेही को दिए।

पेयजल समस्या के त्वरित निराकरण के दिए निर्देश

आमला तहसील के ग्राम मालेगांव निवासी जयपाल यदुवंशी, ग्राम पंचायत साईं खेड़ाखुर्द के वार्डवासियों ने पेयजल की समस्या के लिए आवेदन दिया। जिस पर कलेक्टर ने आमला और प्रभात पट्टन जनपद सीईओ, पीएचई के संबंधित अधिकारी को पेयजल समस्या का त्वरित निराकरण किए जाने के निर्देश दिए। प्रभात पट्टन तहसील के ग्राम बिसनूर निवासी प्रहलाद साहू द्वारा ऋण पुस्तिका बनाने के आवेदन पर कलेक्टर ने प्रभात पट्टन तहसीलदार को आवेदक की समस्या के निराकरण के निर्देश दिए।

रूरल टूरिज्म और नारी वंदन से बदल रहा मध्यप्रदेश

गाँवों में बढ़े रोजगार के अवसर, महिलाएँ बन रहीं आत्मनिर्भर और सशक्त

सय्यद असीम अली

मध्यप्रदेश ने पिछले कुछ वर्षों में पर्यटन के क्षेत्र में जिस तरह से प्रगति की है, उसमें रूरल टूरिज्म (ग्रामीण पर्यटन) एक महत्वपूर्ण स्तंभ बनकर उभरा है। प्राकृतिक सौंदर्य, लोक संस्कृति, परंपराओं और ग्रामीण जीवन की सादगी को करीब से अनुभव कराने वाला यह पर्यटन मॉडल न केवल पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती प्रदान कर रहा है। विशेष रूप से महिलाओं के लिए यह एक नया अवसर बनकर सामने आया है, जिसने उनके सशक्तिकरण को एक नई दिशा दी है। इसी कड़ी में 'नारी वंदन' जैसे कार्यक्रम इस बदलाव को और अधिक व्यापक और प्रभावशाली बनाने की क्षमता रखते हैं।

रूरल टूरिज्मः विकास का नया आधार - रूरल टूरिज्म का मुख्य उद्देश्य गाँवों की संस्कृति, परंपरा, खान-पान, हस्तशिल्प और जीवनशैली को पर्यटन से जोड़ना है। मध्यप्रदेश के अनेक गाँव अब पर्यटन मानचित्र पर अपनी पहचान बना रहे हैं। यहाँ आने वाले पर्यटक न केवल प्राकृतिक वातावरण का आनंद लेते हैं, बल्कि स्थानीय लोगों के साथ रहकर उनके जीवन को भी समझते हैं। इस मॉडल से ग्रामीण क्षेत्रों में आय के नए स्रोत विकसित हुए हैं। पहले जहाँ रोजगार के अवसर सीमित थे, वहीं अब होम-स्टे, गाइड सेवा, लोक कला प्रदर्शन, हस्तशिल्प बिक्री और पारंपरिक भोजन जैसे कार्यों से ग्रामीणों को नियमित आय प्राप्त हो रही है। इससे पलायन में कमी आई है और स्थानीय स्तर पर आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिला है।

ग्रामीण पर्यटन में मध्यप्रदेश की उपलब्धिः तीन गाँवों को राष्ट्रीय सम्मान - ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने की दिशा में मध्यप्रदेश ने एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। अंतरराष्ट्रीय पर्यटन दिवस के अवसर पर भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा आयोजित 'बेस्ट टूरिज्म विलेज प्रतियोगिता 2024' में राज्य के तीन गाँव–प्रणपुर, सावरवानी और लाडपुरा खास–को विभिन्न श्रेणियों में सम्मानित किया गया। इनमें प्रणपुर को क्राफ्ट श्रेणी में, जबकि सावरवानी और लाडपुरा खास को रिस्पॉन्सिबल टूरिज्म श्रेणी में पुरस्कार मिला। यह प्रतियोगिता ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन को प्रोत्साहित करने और सांस्कृतिक व प्राकृतिक धरोहर के संरक्षण के उद्देश्य से शुरू की गई है। इस उपलब्धि से मध्यप्रदेश के गाँवों की समृद्ध परंपरा, स्वच्छता, सामुदायिक भागीदारी और सतत विकास के प्रति प्रतिबद्धता को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है। सावरवानी गाँव अपनी प्राकृतिक सुंदरता, स्वच्छ वातावरण और ग्रामीण जीवन के अनुभव के लिए पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है, वहीं चंदेरी के पास स्थित प्रणपुर अपनी बुनकरी परंपरा और हस्तशिल्प के लिए विशेष पहचान रखता है। यहाँ पर्यटकों के लिए स्थानीय संस्कृति, खान-पान और कला को करीब से जानने का अवसर मिलता है। यह सम्मान न केवल इन गाँवों के लिए गर्व का विषय है, बल्कि मध्यप्रदेश को ग्रामीण पर्यटन के क्षेत्र में एक मजबूत और प्रेरणादायक मॉडल के रूप में स्थापित करता है।

महिला सशक्तिकरण की नई पहचानः 'एमपीटी अमलतास' और प्रणपुर का कैफे - मध्यप्रदेश महिला सशक्तिकरण की दिशा में लगातार नए आयाम स्थापित कर रहा है। पचमढ़ी में शुरू हुआ 'एमपीटी अमलतास' राज्य का पहला ऐसा होटल है, जिसका संचालन पूरी तरह महिलाओं द्वारा किया जा रहा है। यह पहल महिलाओं की क्षमता, नेतृत्व और आत्मनिर्भरता का सशक्त उदाहरण बनकर उभरी है। पर्यटन क्षेत्र में उनकी भागीदारी न केवल आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा दे रही है, बल्कि समाज में उनकी भूमिका को भी मजबूत कर रही है। इसी कड़ी में चंदेरी के प्रणपुर गाँव में शुरू हुआ महिला संचालित कैफे भी एक प्रेरणादायक पहल है। यह कैफे ग्रामीण महिलाओं को रोजगार प्रदान कर रहा है और स्थानीय पर्यटन को नई दिशा दे रहा है। यहाँ आने वाले पर्यटक स्थानीय व्यंजनों, विशेष रूप से बुंदेली थाली का आनंद लेते हुए ग्रामीण जीवन और बुनकरों की परंपरा को करीब से अनुभव कर रहे हैं। इन पहलों से महिलाओं की आय, आत्मविश्वास और सामाजिक भागीदारी में वृद्धि हुई है। साथ ही, यह साबित हो रहा है कि सही अवसर और सहयोग मिलने पर महिलाएँ हर क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकती हैं। मध्यप्रदेश की ये पहलें न केवल राज्य के लिए गर्व का विषय हैं, बल्कि पूरे देश के लिए प्रेरणा भी बन रही हैं।

महिलाओं के लिए अवसरों का विस्तार - रूरल टूरिज्म का सबसे सकारात्मक प्रभाव महिलाओं पर देखने को मिला है। परंपरागत रूप से घर तक सीमित रहने वाली महिलाएँ अब आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। वे होम-स्टे संचालित कर रही हैं, स्थानीय व्यंजन बनाकर पर्यटकों को परोस रही हैं, हस्तशिल्प और लोक कला के माध्यम से अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित कर रही हैं। महिलाओं की यह भागीदारी केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का भी संकेत है। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा है, निर्णय लेने की क्षमता विकसित हुई है और परिवार एवं समाज में उनकी भूमिका अधिक सशक्त हुई है। स्वयं सहायता समूहों (Self Help Groups) के माध्यम से महिलाएँ संगठित होकर काम कर रही हैं, जिससे उनकी आय और पहचान दोनों में वृद्धि हो रही है।

महिलाओं की सुरक्षा के लिए पुलिस और पर्यटन विभाग की संयुक्त पहल - मध्यप्रदेश में महिलाओं की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए पर्यटन स्थलों को और अधिक सुरक्षित एवं आकर्षक बनाने की दिशा में पुलिस और पर्यटन विभाग की संयुक्त पहल एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो रही है। 'सुरक्षित महिला-सशक्त मध्यप्रदेश' के संकल्प के साथ राज्य अब खुद को 'सेफ टूरिस्ट डेस्टिनेशन फॉर वीमेन' के रूप में स्थापित करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। इस पहल के अंतर्गत प्रमुख पर्यटन स्थलों पर पुलिस की सक्रिय तैनाती, महिला हेल्प डेस्क, सीसीटीवी निगरानी और त्वरित सहायता प्रणाली को सुदृढ़ किया जा रहा है। साथ ही, पर्यटन विभाग द्वारा गाइड्स, होटल स्टाफ और स्थानीय नागरिकों को महिला सुरक्षा के प्रति जागरूक और संवेदनशील बनाया जा रहा है, जिससे किसी भी आपात स्थिति में तुरंत सहायता उपलब्ध हो सके।

महिलाओं के लिए सुरक्षित माहौल बनने से उनकी पर्यटन में भागीदारी बढ़ेगी, जिससे सामाजिक सशक्तिकरण के साथ-साथ राज्य की अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी। यह पहल न केवल सुरक्षा सुनिश्चित करती है, बल्कि महिलाओं के आत्मविश्वास को भी बढ़ाती है। परिणामस्वरूप, मध्यप्रदेश एक भरोसेमंद और 'सेफ टूरिस्ट डेस्टिनेशन फॉर वीमेन' के रूप में नई पहचान बना रहा है।

नारी वंदनः सशक्तिकरण को नई गति - 'नारी वंदन' केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि महिलाओं के सम्मान और सशक्तिकरण का व्यापक अभियान है। यह पहल महिलाओं को समाज के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। जब इस अभियान को रूरल टूरिज्म के साथ जोड़ा जाता है, तो इसका प्रभाव और भी व्यापक हो जाता है।

नारी वंदन के माध्यम से महिलाओं को प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और रोजगार के अवसर प्रदान किए जा सकते हैं। उन्हें पर्यटन से जुड़े कौशल–जैसे आतिथ्य (hospitality), संचार (communication), प्रबंधन और उद्यमिता–में प्रशिक्षित किया जा सकता है। इससे वे न केवल अपने व्यवसाय को बेहतर तरीके से चला पाएंगी, बल्कि नए अवसर भी तलाश सकेंगी।

आर्थिक सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता - रूरल टूरिज्म और नारी वंदन का संयुक्त प्रभाव महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। जब महिलाएँ अपनी आय स्वयं अर्जित करती हैं, तो उनका आत्मसम्मान बढ़ता है और वे अपने परिवार के आर्थिक निर्णयों में भी भागीदारी करने लगती हैं। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलती है। छोटे-छोटे गाँव अब आर्थिक गतिविधियों के केंद्र बन रहे हैं। स्थानीय उत्पादों–जैसे हस्तशिल्प, वस्त्र, जैविक खाद्य पदार्थ–को नया बाजार मिल रहा है। इससे 'वोकल फॉर लोकल' की भावना को भी बढ़ावा मिल रहा है।

सांस्कृतिक संरक्षण में महिलाओं की भूमिका - मध्यप्रदेश की ग्रामीण संस्कृति अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है। लोकगीत, नृत्य, हस्तशिल्प और परंपराएँ यहाँ की पहचान हैं। इन सभी के संरक्षण और संवर्धन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। रूरल टूरिज्म के माध्यम से जब पर्यटक इन परंपराओं को देखते और अनुभव करते हैं, तो इनका महत्व और बढ़ जाता है। महिलाएँ अपनी कला और संस्कृति को न केवल जीवित रख रही हैं, बल्कि उसे नई पीढ़ी तक भी पहुँचा रही हैं। इससे सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण सुनिश्चित हो रहा है।

चुनौतियाँ और संभावनाएँ - हालांकि रूरल टूरिज्म और महिला सशक्तिकरण की दिशा में काफी प्रगति हुई है, फिर भी कुछ चुनौतियाँ बनी हुई हैं। प्रशिक्षण की कमी, बाजार तक पहुँच, डिजिटल साक्षरता और बुनियादी ढाँचे की सीमाएँ अभी भी कई क्षेत्रों में देखी जाती हैं। इन चुनौतियों को दूर करने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है। सरकार, निजी क्षेत्र और समाज के संयुक्त सहयोग से इन बाधाओं को कम किया जा सकता है। यदि सही दिशा में योजनाबद्ध तरीके से काम किया जाए, तो मध्यप्रदेश रूरल टूरिज्म और महिला सशक्तिकरण का राष्ट्रीय मॉडल बन सकता है। मध्यप्रदेश में रूरल टूरिज्म और नारी वंदन का समन्वय एक सकारात्मक परिवर्तन की कहानी प्रस्तुत कर रहा है। यह न केवल पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ा रहा है, बल्कि महिलाओं को सशक्त और आत्मनिर्भर भी बना रहा है। इस पहल से राज्य की आर्थिक स्थिति मजबूत हो रही है और सामाजिक संरचना में भी सकारात्मक बदलाव आ रहा है। महिलाओं को सम्मान और अवसर देकर मध्यप्रदेश ने पूरे देश में अपनी एक नई पहचान बनाई है। आने वाले समय में यदि इस दिशा में निरंतर प्रयास जारी रहे, तो नारी वंदन और रूरल टूरिज्म मिलकर न केवल मध्यप्रदेश, बल्कि पूरे देश के लिए विकास और सशक्तिकरण का एक प्रेरणादायक मॉडल बन सकते हैं।

संक्षिप्त समाचार

उपार्जन केन्द्रों का औचक निरीक्षण जारी

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर अंशुल गुप्ता के निर्देशों के परिपालन में जिले भर के समर्थन मूल्य उपार्जन केन्द्रों का अधिकारियों द्वारा लगातार औचक निरीक्षण किया जा रहा है, ताकि खरीदी व्यवस्था सुचारू एवं पारदर्शी बनी रहे। इसी क्रम में नटेरन तहसीलदार आनंद जैन द्वारा आज शनिवार को मनोशीला वेयर हाउस, ताजखजूरी का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उपार्जन कार्य, भंडारण व्यवस्था, तौल प्रक्रिया तथा किसानों को उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं का जायजा लिया गया। तहसीलदार ने संबंधित कर्मचारियों को निर्देश दिए कि उपार्जन कार्य में किसी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए तथा किसानों को समय पर भुगतान एवं सुविधाएं सुनिश्चित की जाएं। उन्होंने साफ-सफाई, रिकॉर्ड संधारण एवं पारदर्शिता बनाए रखने पर भी विशेष जोर दिया। निरीक्षण के दौरान किसानों से संवाद कर उनकी समस्याएं भी जानी गईं और मौके पर ही निराकरण के निर्देश दिए गए। प्रशासन द्वारा यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि समर्थन मूल्य पर खरीदी कार्य बिना किसी व्यवधान के सुचारू रूप से संचालित हो।

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र चिचोली में आयोजित स्वास्थ्य शिविर में 692 मरीजों का किया उपचार

बैतूल (निप्र)। जनजातीय कार्य मंत्रालय भारत सरकार के माध्यम से जिले में 20 स्वास्थ्य शिविर लगाने की प्राप्त स्वीकृति के परिपालन में 25 अप्रैल 2026 को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र चिचोली में स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया। शिविर का शुभारंभ नगर परिषद अध्यक्ष श्रीमती वर्षा जितेश मालवीय, उपाध्यक्ष श्रीमती वर्षा संजय अवालेकर, श्री अनिल कुशवाह द्वारा किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मनोज कुमार हुरमाड़े ने बताया कि शिविर में कुल 692 मरीजों का पंजीकरण कर उपचार किया गया, शिविर में जिला चिकित्सालय से स्त्री रोग शिशु रोग दंत रोग, मानसिक रोग विशेषज्ञों द्वारा मरीजों का परीक्षण कर उपचार किया गया। शिविर में जनप्रतिनिधि श्री कांति यादव, श्री शंकरराव चढ़ोकार, श्री अमन अवलेकर, श्री उमेश पेठे, जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ राजेश परिहार, खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ अभिनव शुक्ला, डीपीएम श्री विनोद शाक्य, चिकित्सा स्टाफ, बीईई, बीपीएम, बीसीएम, स्वास्थ्य स्टाफ, आशा कार्यकर्ता एवं महिला एवं बाल विकास विभाग उपस्थित रहे।

सीहोर जिला जेल में विशेष जेल लोक अदालत आयोजित

सीहोर (निप्र)। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा सीहोर स्थित जिला जेल में बंदियों के लंबित राजीनामा योग्य आपराधिक एवं प्ली बारगेनिंग योग्य मामलों के निराकरण के लिए विशेष जेल लोक अदालत का आयोजन किया गया। इस जेल लोक अदालत में कुल 05 मामले रेफर किये गये। इस अवसर पर प्रधान जिला न्यायाधीश श्री संजीव कुमार अग्रवाल ने जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सीहोर द्वारा बैंक ऑफ इंडिया लीड बैंक एवं स्टार ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान के सहयोग से बंदियों में दक्षता निर्माण हेतु प्रारंभ की गई पहल 'दक्षता से स्वावलंबन' के अंतर्गत अगरबत्ती, साबुन, सर्फ, फिनाइल, दीया आदि सामग्री निर्माण का 12 दिवस का प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले 29 बंदियों को प्रमाण-पत्र वितरित किये। उन्होंने बंदियों से कहा कि वे जेल से बाहर निकलने के बाद स्वावलंबी बनें और अपना भविष्य उज्जवल करें। सचिव श्रीमती स्वप्नश्री सिंह ने कहा कि बंदियो को इस अवसर का लाभ उठाते हुये अपनी कला को निखारना चाहिए ताकि बाजार में उन्हें उनकी सामग्री के अच्छे दाम प्राप्त हो और उनका जीवन यापन जेल के बाहर भी सरलता से हो सके। इसी उद्देश्य से दक्षता से स्वावलंबन प्रशिक्षण की पहल प्रारंभ की गई है। इस अवसर पर न्यायाधीशों बंदियों द्वारा बनाई गई सामग्रियां भी खरीदीं।

जिला प्रशिक्षण वर्ग की योजना बैठक

- प्रशिक्षण कार्यकर्ता को गढ़कर संगठन को मजबूत बनाने का सशक्त माध्यम हैः शिवप्रकाश

प्रशिक्षण पार्टी के संगठनात्मक लक्ष्यों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगाः हेमंत खण्डेलवाल

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री श्री शिवप्रकाश जी, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक हेमंत खण्डेलवाल एवं क्षेत्रीय संगठन महामंत्री श्री अजय जामवाल ने मंगलवार को भाजपा प्रदेश कार्यालय में पं. दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान-2026 के अंतर्गत जिला प्रशिक्षण वर्ग की योजना बैठक को संबोधित किया। भाजपा के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री श्री शिवप्रकाश जी ने कहा कि प्रशिक्षण कार्यकर्ता को गढ़कर संगठन को मजबूत बनाने का सशक्त माध्यम है। पराजय के दौर में भी विचारधारा, सिद्धांत और नेतृत्व पर हमारा भरोसा कायम रहा। प्रशिक्षण में प्राण डालने की आवश्यकता होती है। यह हमारी श्रद्धा का विषय है, इसे बोझ नहीं समझना चाहिए। वक्ता और व्यवस्था के नाते यदि हम पूरी तैयारी के साथ कार्य करेंगे, तो हमारे प्रशिक्षण वर्ग निश्चित ही सफल और यशस्वी होंगे। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने कहा कि प्रशिक्षण वर्ग पार्टी की विचारधारा, नीतियों और संगठनात्मक कार्यों से कार्यकताओं को अवगत कराने का एक सशक्त माध्यम है। कार्यकर्ता प्रशिक्षण की बातों को आत्मसात कर भाजपा संगठन की मजबूती के लिए कार्य करें। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम पार्टी के संगठनात्मक लक्ष्यों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। भाजपा के क्षेत्रीय संगठन महामंत्री श्री अजय जामवाल ने कहा कि मध्यप्रदेश में भाजपा का आदर्श संगठन है। देशभर में मध्यप्रदेश के संगठन का उदाहरण दिया जाता है। जिला प्रशिक्षण वर्ग में मध्यप्रदेश को मॉडल स्टेट बनाएं। प्रशिक्षण वर्गों को लेकर जिलों में स्वस्थ प्रतिस्पर्ध होनी चाहिए। सभी दृष्टि से प्रशिक्षण वर्ग में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले तीन जिलों को प्रदेश स्तर पर सम्मानित किया जाएगा। भाजपा अपने कार्यकर्ताओं की निष्ठा, समर्पण और राष्ट्रभाव से विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बना है।

श्रद्धा, समर्पण और अध्ययन से यशस्वी होते हैं प्रशिक्षण वर्ग - भाजपा के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री श्री शिवप्रकाश जी ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि पार्टी अब मंडल प्रशिक्षण के दूसरे चरण को पूर्ण कर जिला स्तर के प्रशिक्षण वर्गों की ओर आगे बढ़ रही है। जिला स्तरीय प्रशिक्षण वर्ग 01 मई से 31 मई तक संपन्न होना है। देशभर में अभी तक 13 हजार से अधिक प्रशिक्षण वर्ग सफलतापूर्वक संपन्न हो चुके हैं। मध्यप्रदेश में लगभग साढ़े दस लाख से अधिक कार्यकर्ताओं की सहभागिता उल्लेखनीय रही। यह संगठन की मजबूती और कार्यकर्ताओं की सक्रियता का प्रमाण है। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण केवल औपचारिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि इसका अनौपचारिक पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है। रात्रि निवास, आपसी संवाद और सामूहिक सहभागिता के माध्यम से कार्यकर्ताओं के बीच आत्मीयता और वैचारिक स्पष्टता विकसित होती है। जिला स्तरीय प्रशिक्षण वर्ग में इसका पूरा ध्यान रखा जाए, ताकि लोगों से आपसी संवाद स्थापित हो सके। उन्होंने कहा कि संगठन का मूल उद्देश्य श्रेष्ठ, अनुशासित और राष्ट्रनिष्ठ कार्यकर्ताओं का निर्माण करना है। प्रशिक्षण में प्राण डालने की आवश्यकता होती है यह हमारी श्रद्धा का विषय है, इसे बोझ नहीं समझना चाहिए। वक्ता और व्यवस्था के नाते यदि हम पूरी तैयारी के साथ कार्य करेंगे, तो हमारे प्रशिक्षण वर्ग निश्चित ही सफल और यशस्वी होंगे। इससे सीखने का वातावरण बनेगा, जहां सभी कार्यकर्ता एक साथ रहकर, मिलकर सीखेंगे और भविष्य का नेतृत्व तैयार करेंगे। प्रशिक्षण वर्ग में वक्ताओं को अध्ययन और पूर्ण तैयारी के साथ प्रशिक्षण में जाना चाहिए,ताकि इसका लाभ कार्यकर्ताओं को मिल सके।

कार्यकर्ता हमारे संगठन की आत्मा, शक्ति और प्राण होते हैं - भाजपा के राष्ट्रीय सह सगंठन महामंत्री श्री शिवप्रकाश जी ने कहा कि महान उद्देश्य वाले लोगों की हमें आवश्यकता है। प्रशिक्षण मनुष्य को गढ़ने की एक सतत प्रक्रिया है। कार्यकर्ता हमारे प्राण हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी कहते हैं-हम न झुकते हैं, न रुकते हैं और न ही टूटते हैं। यह शक्ति उन समर्पित कार्यकर्ताओं से आती है, जो पार्टी के विचारों के प्रति पूर्ण निष्ठा रखते हैं। प्रशिक्षण का उद्देश्य ऐसे ही विचारवान और समर्पित कार्यकर्ताओं का निर्माण करना है। आज भले ही पार्टी से जुड़े कार्यकर्ताओं को भी अपेक्षाएं हों कि हम उन्हें कुछ दे सकें, लेकिन एक समय ऐसा भी था जब हमारे पास देने के लिए कुछ नहीं था। उस समय हमारे कार्यकर्ताओं के पास केवल विचार की शक्ति और नेतृत्व के प्रति अटूट विश्वास था। यही हमारी सबसे बड़ी पूंजी है। कार्यकर्ता ही हमारे संगठन के प्राण हैं, और उनके विचार, समर्पण व विश्वास के बल पर ही पार्टी निरंतर आगे बढ़ रही है। श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा था कि हम हारते नहीं हैं, बल्कि या तो जीतते हैं या फिर सीखते हैं। वर्ष 1984 में जब हमारी पार्टी की केवल 2 सीटें आई थीं, तब भी हमारी विचारधार नहीं बदली और हमारे सिद्धांत नहीं बदले हैं। सतत चलते रहे और आज विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बन गए। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का देश में डिजिटल ट्रांजेक्शन पर जोर रहा और हमसे अमेरिका जैसे देश पीछे है। इसलिए आवश्यक है कि कार्यकर्ता भी डिजिटल भुगतान को अपने स्वभाव में शामिल करें, इससे न केवल आर्थिक व्यवस्था सुदृढ़ होती है, बल्कि सहभागिता और अपनापन भी बढ़ता है।

प्रशिक्षण वर्ग पार्टी की कार्यपद्धति से अवगत कराने का माध्यम : खण्डेलवाल- भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि हमारी पार्टी में प्रशिक्षण निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। प्रशिक्षण पार्टी के कार्यकर्ताओं को विचारधारा, नीतियों और संगठनात्मक कार्यों से अवगत कराने का एक सशक्त माध्यम है। भाजपा की एक विशेष विचारधारा और कार्यपद्धति है, जो निरंतर विकसित हो रही है। हर दो वर्ष में पार्टी का यह कार्यक्रम सभी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने के लिए आयोजित किया जाता है, जिसमें पार्टी के इतिहास, नीतियों, और कार्यपद्धतियों की विस्तृत जानकारी दी जाती है। पार्टी ने मध्यप्रदेश में 1313 मंडलों में प्रशिक्षण वर्ग आयोजित हुए हैं। मध्यप्रदेश में सभी मंडलों में शत प्रतिषत वर्ग सम्पन्न हुए, जिसमें एक दिन का रात्रि वर्ग और दो दिन का विस्तृत प्रशिक्षण सत्र शामिल था। अब अगले चरण में 1 मई से 30 मई तक प्रदेश के जिलों में प्रशिक्षण वर्ग आयोजित किए जाएंगे, जिनमें लगभग 11 विषयों पर सत्र होंगे। इन सत्रों में पार्टी के कार्यकर्ताओं को सरकारी योजनाओं, पार्टी की कार्यपद्धति, पार्टी का इतिहास, विचारधारा आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाएगी। प्रशिक्षण वर्ग का मुख्य उद्देश्य कार्यकर्ताओं को पार्टी की कार्यपद्धति से पूरी तरह अवगत कराना है, ताकि पार्टी की विचारधारा और विशेष पहचान जनता के बीच स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो सके। भाजपा के कार्यकर्ता अपने-अपने क्षेत्रों में पार्टी के दृष्टिकोण और कार्यों को प्रभावी ढंग से फैलाने में सक्षम हों, यही हमारा लक्ष्य है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम पार्टी के संगठनात्मक लक्ष्यों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। प्रशिक्षण केवल व्यक्तिगत ज्ञान में वृद्धि नहीं, बल्कि एक सम्मानजनक और सशक्त समाज की दिशा में सही कदम बढ़ाने का अवसर है। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान और अनुभव का उपयोग समाज की बेहतरी और राष्ट्र निर्माण के लिए करना है।

स्वदेशी व सादगी से परिपूर्ण हो प्रशिक्षण वर्ग : अजय जामवाल - भाजपा के क्षेत्रीय संगठन महामंत्री श्री अजय जामवाल ने कहा कि संगठन के मामले में मध्यप्रदेश एक आदर्श संगठन है। राष्ट्रीय स्तर पर भी इसकी प्रशंसा होती है। मंडल प्रशिक्षण वर्ग में 100 प्रतिशत प्रशिक्षण वर्ग संपन्न होने पर मैं भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल एवं प्रशिक्षण की प्रदेश टोली को धन्यवाद देता हूं। तय समय पर मंडल का प्रशिक्षण वर्ग संपन्न होना हमारे अनुशासन और संगठन के प्रति निष्ठा व लगन को रेखांकित करता है। जिला प्रशिक्षण वर्ग स्वदेशी और सादगी से परिर्ण होना चाहिए। हर प्रशिक्षण वर्ग में कुछ नया सीखने को मिलता है। जो कार्यकर्ता पूर्व के वर्षों में आयोजित प्रशिक्षण वर्गों में शामिल हुए थे, उन्हें भी कुछ नया सीखने को मिलेगा। ऐसा इसलिए क्योंकि प्रशिक्षण वर्ग के विषय वर्तमान परिस्थितियों के आधार पर तय होते हैं। भाजपा के कार्यकर्ता बहुत ही अनुशासित तरीके से कार्य करने के लिए जाने जाते हैं। प्रशिक्षण वर्ग में मिलने वाले अनुभवों से कार्यकर्ता पाटी संगठन को आगे ले जाने के लिए कार्य करें। कार्यकर्ताओं की निष्ठा, समर्पण से ही भाजपा विश्व का नंबर एक दल बना है। अगली पीढ़ी के कार्यकर्ताओं में राष्ट्रभाव जागृत करना भी आवश्यक है, इसके लिए भी प्रशिक्षण वर्ग आवश्यक होता है। कार्यकर्ताओं को गढ़ने के लिए, उन्हें मजबूत बनाने के लिए और लोगों को अपनी विचारधारा से जोड़ने के लिए प्रशिक्षण आवश्यक होता है। कार्यकर्ताओं में विश्वास बढ़ाना, उनका निर्माण करना प्रशिक्षण वर्ग का अहम भाग होता है। जिला प्रशिक्षण वर्ग में केंद्र सरकार, राज्य सरकार, अपने जिले के विकास कार्यों, उल्लेखनीय कार्यों और पार्टी के जिले में हुए बड़े आंदोलनों, आयोजनों के छायाचित्रों की प्रदर्शनी लगाई जानी है। इन प्रदर्शनियों से नए कार्यकर्ताओं को पार्टी की कार्यपद्धति और राष्ट्र के लिए किए गए योगदान को समझा जा सकता है।

बैठक में प्रदेश महामंत्री श्री सुमेर सिंह सोलंकी ने पीपीटी के माध्यम से वर्ग की जानकारी दी एवं मंच का संचालन संभाग प्रभारी श्री अभय प्रताप सिंह यादव ने किया। आभार प्रदेश मंत्री श्री राजेन्द्र सिंह राजपूत ने व्यक्त किया। इस अवसर पर संभाग प्रभारी श्री विजय दुबे मंचासीन रहे। बैठक में पार्टी के प्रदेश पदाधिकारी, संभाग प्रभारी, प्रदेश प्रशिक्षण टोली, जिला प्रभारी, जिला अध्यक्ष, संभागीय प्रशिक्षण टोली, सभी मोर्चों के प्रदेश अध्यक्ष, जिला प्रशिक्षण वर्ग प्रभारी, प्रशिक्षण महाअभियान के जिला संयोजक उपस्थित रहे।

स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ बनाने भर्ती प्रक्रियाओं को प्राथमिकता के साथ समय पर करें पूर्णः उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

- नर्सिंग कॉलेजों की छात्राओं की नियुक्ति में उपलब्ध सभी जिलों का विकल्प करें प्रदान
- लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग की वृहद समीक्षा की

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने मंत्रालय में लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग के विभिन्न विषयों की विस्तृत समीक्षा की। समीक्षा बैठक में विभागीय योजनाओं की प्रगति, लंबित प्रस्तावों एवं आवश्यक प्रशासनिक कार्यवाहियों की प्रगति की समीक्षा कर समयबद्ध कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ बनाने के लिए भर्ती प्रक्रियाओं को प्राथमिकता के साथ समय पर पूर्ण किया जाए, जिससे आमजन को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध हो सकें।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने बुधनी, दमोह एवं छतरपुर मेडिकल कॉलेजों में टीचर्स के रिक्त पदों पर भर्ती प्रक्रिया को गति देने के निर्देश दिए। स्वास्थ्य संस्थाओं में लंबित आउटसोर्स पदों पर भर्ती के लिए सभी जिलों में आवश्यक कार्यवाही करने के लिए कहा। उन्होंने नर्सिंग कॉलेजों में नर्सिंग शिक्षकों के 59 राजपत्रित पदों पर भर्ती के लिए मांग पत्र लोक सेवा आयोग को शीघ्र प्रेषित करने के निर्देश भी दिए गए। जिला चिकित्सालय राजगढ़ में रैन बसेरे के संचालन को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिए। ग्वालियर मेडिकल कॉलेज में ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग की स्वीकृति की प्रक्रिया को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने स्वास्थ्य विभाग द्वारा संचालित नर्सिंग कॉलेजों की उत्तीर्ण छात्राओं को नियुक्ति में सभी जिलों का विकल्प प्रदान करने संबंधी कार्यवाही भी प्राथमिकता से करने के निर्देश दिए।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने परियोजना परीक्षण समिति एवं व्यय वित्त समिति को भेजे जाने वाले प्रस्तावों की वृहद समीक्षा की। उन्होंने नवीन स्वास्थ्य संस्थाओं की स्वीकृति एवं उन्नयन, सागर में कैंसर अस्पताल और सिंगरौली में अस्पताल उन्नयन के प्रस्ताव के संबंध में आवश्यक कार्यवाही की पूर्ति के निर्देश दिए। कैबिनेट अनुमोदन के लिए एयर एम्बुलेंस संचालन में नई शर्तों का समावेश, शव वाहन के संभागीय संचालन की अनुमति, विशेषज्ञों की सीधी भर्ती, 16 जिला अस्पतालों में नए पदों का सृजन, सी.सी.एच.बी. अंतर्गत पदों की स्वीकृति के प्रस्तावों को आवश्यक औपचारिकताओं की पूर्ति कर शीघ्र अग्रेषित करने के लिए कहा। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने चिकित्सकों की पदोन्नति के लिए लोक सेवा पदोन्नति नियम 2025 से छूट, विशेषज्ञों की सीधी भर्ती के लिए अनुमति, नर्सिंग ऑफिसर एवं ट्यूटर के 2 हजार 317 पदों के लिए भर्ती विज्ञापन जारी करने और अस्पताल सहायकों के 1200 पदों पर भर्ती परीक्षा आयोजित करने हेतु आवश्यक अनुमतियाँ प्राप्त करने के लिए आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिए।

उप मुख्यमंत्री ने मेडिकल कॉलेज रीवा एवं सतना के भ्रमण के दौरान आए विषयों पर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने रीवा में आउटसोर्स कर्मचारियों के वेतन भुगतान को तत्काल सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। साथ ही, जिला चिकित्सालय मैहर के लिए भूमि चिन्हांकन प्रक्रिया पूर्ण कर आगामी कार्यवाही समयबद्ध रूप से पूर्ण करने के लिए कहा। बैठक में अपर मुख्य सचिव लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा श्री अशोक बर्णवाल, अपर मुख्य सचिव सामान्य प्रशासन श्री संजय कुमार शुक्ल उपस्थित थे।

भविष्य के दृष्टिगत रीवा एयरपोर्ट का करें उन्नयनः उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

रीवा एयरपोर्ट से ए-320 एवं अन्य बड़े विमानों का हो सकेगा परिचालन

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि रीवा सहित समस्त विंध्य क्षेत्र तेज गति से विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है। यहाँ के संसाधनों और क्षमताओं के अनुरूप अधोसंरचना का भी भविष्योनुमुखी विस्तार किया जा रहा है। रीवा को नवीन गंतव्यों से हवाई मार्ग से जोड़ने के लिए सतत प्रयास किए जा रहे हैं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने मंत्रालय में विमानन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों से कहा कि भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए रीवा एयरपोर्ट के विस्तार के प्रयास किए जाएँ। बैठक में विभागीय अधिकारियों ने एयरपोर्ट के विस्तार की कार्ययोजना की जानकारी दी। इसमें रनवे विस्तार एवं अन्य आवश्यक तकनीकी उन्नयन किया जाएगा। विस्तार उपरान्त, भविष्य में, रीवा एयरपोर्ट से बड़े विमानों (320 एवं अन्य) का परिचालन संभव होगा। बैठक में अपर मुख्य सचिव, विमानन श्री संजय कुमार शुक्ल, आयुक्त, विमानन श्री चंद्रमौली शुक्ला एवं अपर सचिव, विमानन श्री धरणेन्द्र कुमार जैन सहित विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

साइटोपैथोलॉजिकल विधि से संभव है जटिल और दुर्लभ बीमारियों की पहचान

भोपाल। एम्स भोपाल में संस्थान के पैथोलॉजी एवं लैब मेडिसिन विभाग के अतिरिक्त प्रोफेसर डॉ. जय चौरसिया ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेषज्ञता का प्रदर्शन किया है। डॉ. जय चौरसिया को 22 से 24 अप्रैल तक भूटान के पारो में आयोजित 7वें साउथ-एशियन एकेडमी ऑफ साइटोपैथोलॉजी एंड हिस्टोपैथोलॉजी (एसएसीएच) सम्मेलन में आमंत्रित किया गया था। सम्मलेन में चिकित्सा की साइटोपैथोलॉजिकल प्रणाली पर चर्चा कि गयी इस विधि से आम लोगों को गंभीर बीमारियों का जल्दी पता लगाने और समय पर इलाज शुरू करने में मदद मिल सकती है। इस सम्मेलन में अमेरिका, नेपाल, वियतनाम, मलेशिया और बांग्लादेश सहित कई देशों के विशेषज्ञ और प्रतिनिधि शामिल हुए।

अपने व्याख्यान में डॉ. चौरसिया ने साइटोपैथोलॉजिकल दृष्टिकोण से दुर्लभ मामलों के निदान की चुनौतियों को समझना विषय पर सरल तरीके से बताया कि किस प्रकार जांच की इस तकनीक के माध्यम से जटिल और दुर्लभ बीमारियों की पहचान की जा सकती है।

उद्योग की मांग के अनुसार ट्रेड्स का प्रशिक्षण देकर प्लेसमेंट कराना सुनिश्चित करें

मंत्री टेटवाल ने 'आईटीआई चले हम' प्रवेश 2026 का किया शुभारंभ

भोपाल (नप्र)। कौशल विकास एवं रोजगार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गौतम टेटवाल ने 'आईटीआई चले हम' प्रवेश 2026 अभियान का शुभारंभ करते हुए प्रदेशभर में कौशल आधारित शिक्षा को जन-आंदोलन का स्वरूप देने का आह्वान किया। मंत्री श्री टेटवाल ने इस अवसर पर आयोजित समीक्षा बैठक में विभिन्न जिलों के आईटीआई संस्थानों की प्रगति, प्रशिक्षण व्यवस्था, प्लेसमेंट और विद्यार्थियों की सहभागिता का समग्र मूल्यांकन किया।

मंत्री श्री टेटवाल ने स्पष्ट किया कि यह अभियान केवल प्रवेश प्रक्रिया नहीं, बल्कि युवाओं को कौशल, आत्मनिर्भरता और रोजगार से जोड़ने का व्यापक प्रयास है। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी आईटीआई संस्थानों की नियमित मॉनिटरिंग सुनिश्चित की जाए तथा प्राचार्यों की बैठकें नियमित रूप से आयोजित हों, जिससे प्रशिक्षण की गुणवत्ता और व्यवस्थाओं में निरंतर सुधार हो सके।

समीक्षा के दौरान प्लेसमेंट की स्थिति पर विशेष ध्यान केंद्रित करते हुए मंत्री श्री टेटवाल ने कहा कि उद्योगों की मांग के अनुरूप पाठ्यक्रमों को अद्यतन किया जाए और प्रशिक्षण को पूरी तरह प्रैक्टिकल एवं जॉब-ओरिएंटेड बनाया जाए। मैन्युफैक्चरिंग, टेक्सटाइल, ब्यूटी पार्लर, फूड प्रोसेसिंग सहित अन्य उभरते सेक्टर्स में रोजगारोन्मुख कोर्सेस को बढ़ावा देने के निर्देश दिए गए, जिससे अधिकाधिक युवाओं को स्थानीय स्तर पर ही अवसर मिल सकें।

विद्यार्थियों के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए मंत्री श्री टेटवाल ने हॉस्टल सुविधाओं के बेहतर प्रबंधन, जरूरतमंद विद्यार्थियों को सहयोग उपलब्ध कराने तथा ड्रॉपआउट युवाओं को पुनः प्रशिक्षण से जोड़ने के निर्देश दिए। उन्होंने आईटीआई में बेटियों के प्रवेश को बढ़ावा देने और उनके लिए अनुकूल वातावरण सुनिश्चित करने पर भी विशेष जोर दिया। उन्होंने कहा कि सभी आई टी आई में शत प्रतिशत पंजीयन सुनिश्चित करें।

मंत्री श्री टेटवाल ने निर्देशित किया कि प्रशिक्षण के साथ सॉफ्ट स्किल्स, कम्युनिकेशन और इंटरव्यू प्रिपरेशन को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाए, जिससे विद्यार्थी रोजगार के लिए पूरी तरह तैयार हो सकें। साथ ही, जिन संस्थानों में विद्यार्थियों की उपस्थिति और सहभागिता कम है, वहां सुधार के लिए जवाबदेही तय कर नियमित समीक्षा की जाए।

प्रशिक्षण की गुणवत्ता को और बेहतर बनाने के लिए राष्ट्रीय स्तर के मॉड्यूल्स और स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम्स (एसडीपी) को प्रभावी रूप से लागू करने, सेमिनार और ट्रेनिंग सेशन्स की नियमितता सुनिश्चित करने तथा उत्कृष्ट संस्थानों के मॉडल को अन्य स्थानों पर अपनाने के निर्देश दिए गए।

सिंधिया के 'प्याज' पर दिग्विजय का तंज

बोले- भाजपा नेताओं से छीन लो एसी कारें, जेब में डलवाओ प्याज

गुना (नप्र)। एमपी में गुना-शिवपुरी संसदीय क्षेत्र की राजनीति हमेशा से दो कद्दावर चेहरों, केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया और पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह के इर्द-गिर्द घूमती रही है। फिलहाल मध्यप्रदेश की सियासत में इन दिनों 'प्याज' चर्चा का केंद्र बनी हुई है। केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया का जेब में प्याज लेकर घूमने वाला वीडियो सोशल मीडिया पर जबरदस्त सुर्खियां बटोर रहा है। इस वीडियो ने जहां सिंधिया के समर्थकों को प्रभावित किया है, वहीं कांग्रेस के दिग्गज नेता और राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह को तंज कसने का एक नया मौका दे दिया है। दिग्विजय ने सिंधिया के इस अंदाज को आधार बनाकर पूरी भाजपा को निशाने पर लिया है।

एसी कारों पर 'राजघराने' वाली नसीहत

दिग्विजय सिंह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट साझा करते हुए सिंधिया की सादगी पर कटाक्ष किया। उन्होंने लिखा कि सभी भाजपा नेताओं को सिंधिया से प्रेरणा लेनी चाहिए। दिग्विजय ने तंज भरे लहजे में सुझाव दिया कि सरकार को भाजपा नेताओं की तमाम एसी कारें वापस ले लेनी चाहिए और उनके हाथों में प्याज थमा देनी चाहिए। उन्होंने आगे चुटकी लेते हुए लिखा कि इतने बड़े राजघराने में जन्म लेने के बावजूद सिंधिया जिस सादगी और घरेलू नुस्खे का परिचय दे रहे हैं, उसकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है।

51 डिग्री में भी रामबाण है प्याज- सिंधिया

दरअसल, यह पूरा मामला शिवपुरी में आयोजित एक जनसभा से शुरू हुआ। भीषण गर्मी के बीच जनता को संबोधित करते हुए सिंधिया ने एक राज खोला। उन्होंने कहा- मैं अपनी कार में एसी नहीं चलाता, बल्कि जेब में एक प्याज रखता हूं। सिंधिया ने मंच पर अपनी जेब से प्याज निकालकर दिखाते हुए दावा किया कि यह प्याज शरीर का तापमान नियंत्रित रखती है और 51 डिग्री की तपिश में भी लू से बचाती है। इसी दौरान सभा में मौजूद एक बुजुर्ग काका ने भी अपनी जेब से प्याज निकालकर दिखाई, जिससे माहौल काफी आत्मीय हो गया था। बहरहाल गुना-शिवपुरी क्षेत्र में अब यह चर्चा आम है कि सादगी का यह प्याज फॉर्मूला लू से बचाए न बचाए, लेकिन सियासी गर्मी जरूर बढ़ा रहा है।

150 साल बाद एमपी में दिखेंगे जंगली भैंसे

असम से लाकर कान्हा अभ्यारण में किए गए शिफ्ट

प्रदेश में जंगली भैंसा प्रजाति का पुर्नस्थापन एक ऐतिहासिक अवसर: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। 150 साल बाद मध्य प्रदेश की धरती पर जंगली भैंसों का आगमन हुआ है। असम से लाकर बालाघाट के कान्हा अभ्यारण में इन्हें शिफ्ट किया गया है। सीएम मोहन यादव ने कहा कि ईको-सिस्टम के साथ-साथ टूरिज्म पर इसका सकारात्मक असर होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश में संचालित जैव विविधता संरक्षण के अगले अध्याय के रूप में आज जंगली भैंसा पुर्नस्थापना योजना का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कान्हा टाइगर रिजर्व में काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान असम से लाए गए जंगली भैंसों के पुर्नस्थापना के लिए उन्हें बालाघाट जिले के सूपखार क्षेत्र में सॉफ्ट रिलीज किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश की धरती पर नए मेहमान के शुभ आगमन के लिए प्रदेशवासियों को बधाई दी।

वन्य प्राणियों से समृद्ध होंगे प्रदेश के वन, स्थानीय स्तर बढ़ेगा टूरिज्म और लोगों को मिलेंगे रोजगार के अवसर । मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शुभारंभ कर मीडिया से चर्चा में कहा कि प्रदेश के लिए आज का दिन ऐतिहासिक है। लगभग 100 वर्ष के बाद प्रदेश की धरती पर जंगली भैंसा का पुनर्वास एवं पुर्नस्थापना कार्य हो रहा है। यह मध्यप्रदेश के वन्य-जीव एवं वन पारिस्थितिक संरक्षण के लिए अद्भुत अवसर है। जंगली भैंसा के पुनर्वास से घास के मैदान के संरक्षण और इको सिस्टम को मदद मिलेगी।

मध्यप्रदेश वन्य-प्राणी संरक्षण में देश में मिसाल प्रस्तुत कर रहा है

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि बालाघाट जिले के जंगल में छोड़े गए जंगली भैंसों में तीन मादा और एक नर शामिल है। सभी जंगली भैंसा युवा अवस्था में हैं और स्वस्थ हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश आज टाइगर और चीता स्टेट है, मध्यप्रदेश में मगरमच्छ, घड़ियाल और भेड़िया भी पर्याप्त संख्या में पाए जाते हैं। मध्यप्रदेश अब वल्चर स्टेट यानी गिद्ध स्टेट भी बना है। मध्यप्रदेश की धरा हर तरह के वन्य प्राणियों से समृद्ध है। कई सौ साल पहले विलुप्त हुए पर प्राणियों के पुर्नस्थापना से प्रदेश के समृद्ध वनों में वन्य प्राणियों के संरक्षण का सपना साकार हो रहा है। मध्यप्रदेश वन्य प्राणी संरक्षण में देश में मिसाल प्रस्तुत कर रहा है। हमारा यह प्रयास भावी पीढ़ियों को लाभ देगा। राज्य सरकार प्रदेश में अधोसंरचना विकास कार्यों को गति देने के साथ ही पारिस्थितिक तंत्र को मजबूत बनाने के लिए सम्पूर्ण निष्ठा के साथ निर्णय ले रही है।

जंगली भैंसों का असम से मप्र का सफर विलुप्त प्रजाति की घर वापसी

● अन्तर्राजीय सहयोग के इस महत्वपूर्ण अभियान के प्रथम चरण में 19 मार्च से 10 अप्रैल 2026 के बीच, कांजीरंगा के मध्य और पूर्वी क्षेत्रों से 7 किशोर भैंसों को लिया गया। ● 25 अप्रैल 26 को 4 जंगली भैंसों ने कांजीरंगा से कान्हा टाइगर रिज़र्व तक की अपनी 2000 किलोमीटर की यात्रा की। ● इनका स्थानांतरण काजीरंगा और कान्हा, दोनों जगहों के वरिष्ठ अधिकारियों और अनुभवी पशु चिकित्सकों की देख-रेख में किया गया है। ● आज इन्हें सूपखार, कान्हा टाइगर रिज़र्व में स्थित बाड़े में सॉफ्ट रिलीज़ किया जा रहा है। ● स्थानीय रूप से विलुप्त हो चुकी जंगली भैंसे की प्रजाति की पुनः घर वापसी (कान्हा) में जैव विविधता को बढ़ावा देगी और कान्हा टाइगर रिज़र्व में घास के मैदानों वाले पारिस्थितिकी तंत्र के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। ● मध्यप्रदेश में जंगली भैंसों की आबादी लगभग 100 वर्ष पहले विलुप्त हो गई थी। वर्तमान में इनकी प्राकृतिक आबादी मुख्य रूप से असम में सीमित है, जबकि छत्तीसगढ़ में इनकी संख्या अत्यंत कम है। ● भारतीय वन्य-जीव संस्थान (देहरादून) द्वारा किए गए अध्ययन में कान्हा टाइगर रिजर्व को जंगली भैंसों के पुर्नस्थापन के लिए सबसे उपयुक्त पाया गया है।

मप्र में यूनिफॉर्म सिविल कोड की तैयारी

सरकार ने हाई लेवल कमेटी बनाई, 60 दिन में रिपोर्ट सबमिट होगी

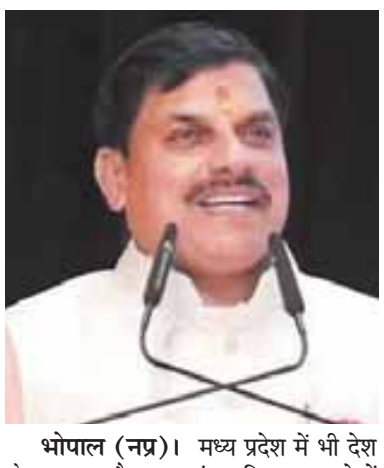

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में भी देश के गुजरात और उत्तराखंड सहित अन्य प्रदेशों की तरह एक समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू करने की तैयारी प्रारंभ कर दी गई है। मोहन सरकार ने इसके लिए एक हाई लेवल कमेटी का गठन किया गया है। समिति के अध्यक्ष सुप्रीम कोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीश रंजना प्रकाश देसाई को बनाया गया है। समिति में सदस्यों और सदस्य सचिव की नियुक्ति भी की गई है। कमेटी आगामी 60 दिन में रिपोर्ट तैयार कर सरकार को सौंपेगी।

मध्य प्रदेश सरकार के विधि एवं विधायी कार्य विभाग ने आदेश जारी कर यूसीसी ड्राफ्ट तैयार करने के लिए उच्च स्तरीय कमेटी का गठन कर दिया है। इसमें रिटायर्ड जस्टिस रंजना देसाई को अध्यक्ष, सेवानिवृत्त आईएएस शत्रुघन सिंह, कानूनविद अनूप नायर, शिक्षाविद् गोपाल शर्मा और सामाजिक कार्यकर्ता बुधपाल सिह को सदस्य बनाया गया है। वहीं अपर सचिव अजय कटेसरिया सदस्य सचिव रहेंगे।

इसे औपचारिक शुरूआत मान सकते हैं

● यूसीसी के लिए एमपी में हाई लेवल कमेटी गठित ● सुप्रीम कोर्ट की रिटायर्ड न्यायाधीश होंगी अध्यक्ष ● 5 सदस्यीय कमेटी में विशेषज्ञ भी शामिल ● 60 दिन में कमेटी अपनी रिपोर्ट सौंपेगी ● कमेटी विभिन्न कानूनों की समीक्षा करेगी

● **संवेदनशील मुद्दों की समीक्षा भी रिपोर्ट में शामिल होगी-** मध्य प्रदेश में समान नागरिक संहिता (सीसी) को लेकर बनी उच्च स्तरीय समिति सिर्फ कानूनी बदलाव तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि इसका प्रमुख फोकस महिलाओं और बच्चों के अधिकारों को मजबूत करना होगा। सरकार ने पांच सदस्यीय इस समिति का गठन कर इसे 60 दिनों में ठोस सिफारिशें देने की जिम्मेदारी सौंपी है। सुप्रीम कोर्ट की रिटायर्ड जस्टिस रंजना प्रकाश देसाई की अध्यक्षता में गठित यह समिति विवाह, तलाक, भरण-पोषण, उत्तराधिकार और गोद लेने जैसे संवेदनशील मुद्दों की समीक्षा करेगी। खास बात यह है कि समिति लिव-इन रिलेशनशिप से जुड़े नियमों और उनके सामाजिक-कानूनी प्रभावों पर भी विचार करेगी, जो अब तक राज्य स्तर पर कम चर्चा में रहे हैं।

अन्य राज्यों के मॉडल का अध्ययन भी किया जाएगा

सूत्रों के मुताबिक, उत्तराखंड और गुजरात जैसे राज्यों के मॉडल का अध्ययन कर मध्य प्रदेश के सामाजिक ढांचे के अनुरूप ड्राफ्ट तैयार किया जाएगा। यह पहल इसलिए भी अहम मानी जा रही है, क्योंकि यूसीसी को लेकर देशभर में बहस तेज है और ऐसे में मध्य प्रदेश का कदम अन्य राज्यों के लिए भी दिशा तय कर सकता है। अगर तय समयसीमा में रिपोर्ट आती है, तो आने वाले महीनों में प्रदेश में यूसीसी को लेकर ठोस विधायी प्रक्रिया शुरू हो सकती है।

अनुशंसाओं को संवेदनशीलता के साथ करें लागू : राज्यपाल

राज्यपाल के समक्ष जनजातीय उपयोजना कार्यशाला की अनुशंसाओं पर हुई चर्चा

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि जनजातीय कार्यशाला में प्राप्त सुझावों और अनुशंसाओं को संवेदनशीलता के साथ लागू किया जाए। उन्होंने कहा कि जनजातीय कल्याण, सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। जनजातीय सशक्तिकरण के लिए सरकार के दिशा-निर्देशों और मार्गदर्शन का कड़ाई से पालन सुनिश्चित किया जाए। जनजातीय विकास से संबद्ध विभिन्न विभागों के बीच प्रभावी समन्वय अत्यंत आवश्यक है।

- प्रदेश के परिदृश्य में हो नवाचारों का अध्ययन।
- विकास कार्य, जनजातीय क्षेत्र फोकस्ड हों।
- अन्तर्विभागीय समन्वय जरूरी।
- क्रियान्वयन में जवाबदारी बढ़ाए।

स्कूलों की गुणवत्ता में पेसा समितियों को जोड़े

राज्यपाल श्री पटेल मंगलवार को लोकभवन में जनजातीय प्रकोष्ठ के साथ जनजातीय कार्य विभाग की बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि जनजातीय सशक्तिकरण और विकास के लिए प्रावधानित बजट का जनजाति उन्मुख उपयोग हो। राशि को लक्षित उद्देश्य पर ही खर्च किया जाए। राज्यपाल श्री पटेल ने मैदानी भ्रमण कर जनजातीय विकास प्रयासों की जमीनी हकीकत जानने के और अधिक सघन प्रयासों पर बल दिया है।

उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश सर्वाधिक जनजातीय जनसंख्या वाला विस्तृत क्षेत्र है। प्रदेश के अलग-अलग क्षेत्रों में निवासरत जनजातियों के विकास एवं कल्याण के कार्य और अधिक क्षेत्र फोकस्ड होना जरूरी है। कार्यशाला में प्राप्त देश के जनजातीय बाहुल्य राज्यों द्वारा जनजातीय शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार आदि के क्षेत्र में किए गए नवाचारों का प्रदेश की आवश्यकता के संदर्भ में अध्ययन किया जाए, उन्हें समझ कर अपनाने के प्रयास किए जाने चाहिए। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि कमजोर वर्गों के कल्याण प्रयासों में संवेदनशीलता सबसे महत्वपूर्ण है। समानुभूति की भावना के साथ किए गए आत्मीय प्रयास सदैव सुफल देते हैं। उन्होंने कहा कि जनजातीय कल्याण प्रयासों में जन प्रतिनिधियों और शासकीय सेवकों की और अधिक संवेदनशीलता तथा सक्रियता जरूरी है।

ग्वालियर में कॉन्स्टेबल ने सर्विस राइफल से खुद को मारी गोली

● घटना से पहले पत्नी से हुई थी वीडियो कॉल पर बात

ग्वालियर (नप्र)। सेकेंड बटालियन में पदस्थ एक कॉन्स्टेबल ने खुद को गोली मारकर खुदकुशी कर ली। यह पूरा घटनाक्रम मंगलवार की अल सुबह का बताया गया है। गोली की आवाज सुनकर ड्यूटी पर तैनात अन्य कर्मचारी मौके पर पहुंचे तब इस घटना के बारे में जानकारी मिल सकी।

सेकंड बटालियन में पदस्थ थे कुलदीप- पुलिस से अब तक मिली जानकारी के अनुसार ग्वालियर की सेकेंड बटालियन में आरक्षक कुलदीप पदस्थ था। मंगलवार की अल सुबह कुलदीप ने किसी से फोन पर बात की और इसके बाद खुद की सर्विस राइफल से गोली मार ली। गोली चलने की आवाज सुनते ही बटालियन में पदस्थ अन्य लोग कुलदीप के पास पहुंचे तो कुलदीप खून से सना पड़ा हुआ था।

डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया- वहीं, तुरंत कुलदीप को उपचार के लिए अस्पताल लाया गया। यहां डॉक्टर ने कुलदीप की जांच करने के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। फिलहाल कुलदीप ने किन कारणों से अपनी जान ली इस बात का खुलासा नहीं हो सका है। पुलिस का कहना है कि पूरे मामले की जांच की जाएगी और जो भी तथ्य सामने आएंगे उस हिसाब से कार्रवाई की जाएगी। फिलहाल मृतक आरक्षक के शव का पोस्टमार्ट्म किया जा रहा है। पुलिस यह भी जांच करने का प्रयास कर रही है कि आखिर फोन पर आरक्षक की किस से बात हुई थी।

राजा रघुवंशी हत्याकांड की मुख्य आरोपी सोनम को मिली जमानत

● पत्नी सोनम को शिलांग कोर्ट से जमानत ● मृतक के भाई विपिन रघुवंशी ने कहा 'जमानत के खिलाफ अपील करेंगे'

इंदौर। चर्चित ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी की हत्या के मामले में एक बड़ा मोड़ आया। मेघालय की शिलांग कोर्ट ने मामले की मुख्य आरोपी और मृतक की पत्नी सोनम रघुवंशी की जमानत अर्जी स्वीकार कर ली। लेकिन, जमानत के दौरान उसे मेघालय में ही रहना होगा।

चौथी सुनवाई के बाद कोर्ट ने सोनम को राहत देते हुए रिहा करने का आदेश दिया। शिलांग के पुलिस अधीक्षक (एसपी) विवेक स्येम ने इस घटनाक्रम की पुष्टि करते हुए कहा कि कोर्ट ने अपने विवेकाधीन अधिकारों का प्रयोग करते हुए जमानत दी है। जबकि, इंदौर में मृतक के भाई विपिन रघुवंशी ने बताया कि उन्हें वहां के अधिकारियों और वकीलों से सोनम की रिहाई की सूचना मिल गई। हालांकि, परिवार इस फैसले से असंतुष्ट है और अब न्याय के लिए मेघालय हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाने की तैयारी कर रहा है।

गिरफ्तारी की प्रक्रिया आधार बनी - जानकारी के मुताबिक, सोनम के वकील ने कोर्ट में तर्क दिया कि उत्तर प्रदेश के गाजीपुर से जब सोनम

को हिरासत में लिया गया था, तब पुलिस ने गिरफ्तारी के स्पष्ट कारणों और कानूनी प्रक्रिया का पूरी तरह पालन नहीं किया था। इसी तकनीकी आधार को जमानत का मुख्य कारण माना जा रहा है।

आरोपियों की स्थिति

वारदात के बाद सोनम ने यूपी में आत्मसमर्पण किया था। इस मामले में सोनम, राज कुशवाहा और उनके तीन अन्य साथी फिलहाल न्यायिक हिरासत में थे।

अब सोनम को जमानत मिल चुकी है, जबकि मुख्य साथी राज कुशवाहा की जमानत अर्जी पर सुनवाई होनी बाकी है। मृतक का परिवार अब इस कानूनी लड़ाई को आगे बढ़ाने की बात कह रहा है।

यह था पूरा मामला

राजा और सोनम का विवाह 11 मई 2025 को हुआ था। शादी के 10 दिन बाद, 21 मई को यह जोड़ा हनीमून के लिए शिलांग गया था। 23 मई को राजा संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गए। इसके 10 दिन बाद पुलिस ने राजा का क्षत-विक्षत शव एक 30 फीट गहरी खाई से बरामद किया। शरीर पर धारदार हथियारों के कई निशान थे। जांच में सामने आया कि सोनम के राज कुशवाहा नामक व्यक्ति के साथ प्रेम संबंध थे। आरोप है कि सोनम ही राजा को घूमने के बहाने उस सुनसान जगह पर ले गई थी, जहां उसके अन्य साथियों ने मिलकर राजा की बेरहमी से हत्या कर दी।